विक्की आनन्द

नया उपन्यास

कोहराम

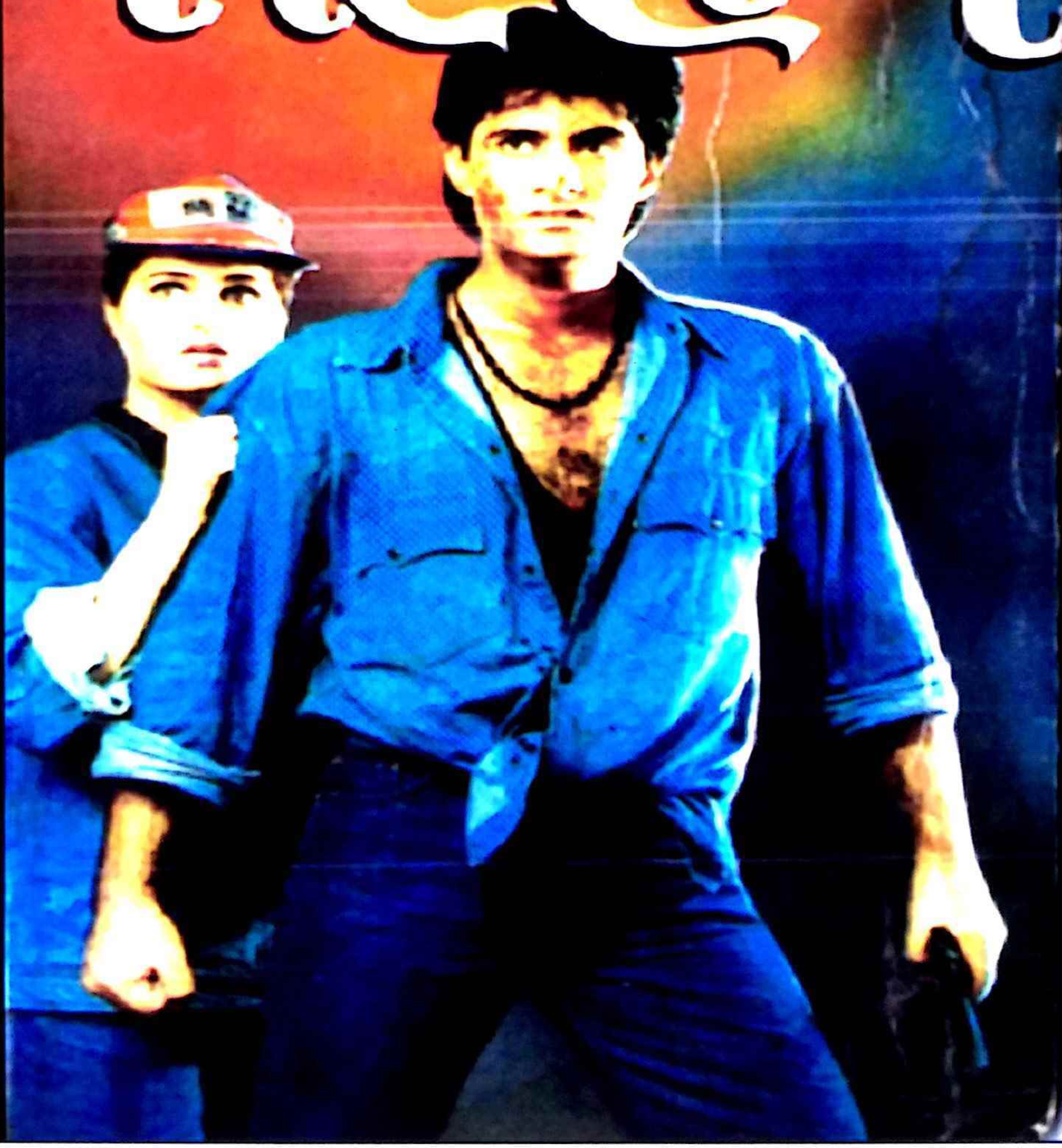

'तुम इस गोलाकार से डरते क्यों हो?'

कोशिग ने कहा- 'इसलिए कि मैं तुम्हारे उन चाहने वालों का अंत देरब चुका हूं जिन्होंने तुम्हारे सौन्दर्य के जादू से उतावले होकर लिपटने की कोशिश की वे इस गोलाकार को छूते ही वहीं चीखकर राख का ढेर बन गए।'

'तो लो...मैं यह उतारती हूं...तुम अपनी इच्छा पूरी कर लो।' साथ ही वह चांदनी का हाला गायब हो गया और आवाज आई- 'आओ कोशी, मुझसे लिपट जाओ।' कोशिंग होंठों पर जुबान फेरता...आंखों में अरमान भरे आगे बढ़ा और एकाएक उसने अपने आग उगलने वाले रिवाल्वर से फायर करना चाहा...मगर उससे पहले ही कैथराइन के गिर्द प्रकाश का गोलाकार तना हुआ था और कोशिंग थरथराता हुआ चीखें मार रहा था मानो उसका हाथ बिजली के नंगे तारों पर पड़ गया हो।

-इसी उपन्यास से

लोकप्रिय उपन्यासकार

विक्की आनन्द

का बैडमैन सीरीज का नया सनसनीखेज जासूसी उपन्यास

कोहराम

डायमंड पाकेट बुक्स में

विक्की आनन्द

का डैडमैन सीरीज

का आगामी उपन्यास

इक्कीस साल बाद

विक्की आनन्द के अन्य उपलब्ध उपन्यास

Detailed view of table

- घुन्ध
- वहशी
- स्कैंडल
- गुमराह
- डैडमैन
- जेल में खून
- पापी
- खून के धब्बे
- प्रतिशोध की ज्वाला
- डायल 999
- प्रचंड प्रतिशोध
- रात भयानक थी
- बम बलास्ट
- गुंडा
- तेजाब
- ज्वाला
- शैतान
- जांबाज
- जहर
- अंधेरी रात
- दंगा फसाद
- हत्या
- टाइम बम
- हम मौत बेचते हैं
- जल्लाद
- तकदीर का तमाशा
- इन्तकाम का अंजाम
- प्राण दण्ड
- क्रिमिनल यूनियन

डायमण्ड पाकेट बुक्स (प्रा०) लि०

X-30, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-2

नयी दिल्ली-110020

डैडमैन सीरीज का नया उपन्यास

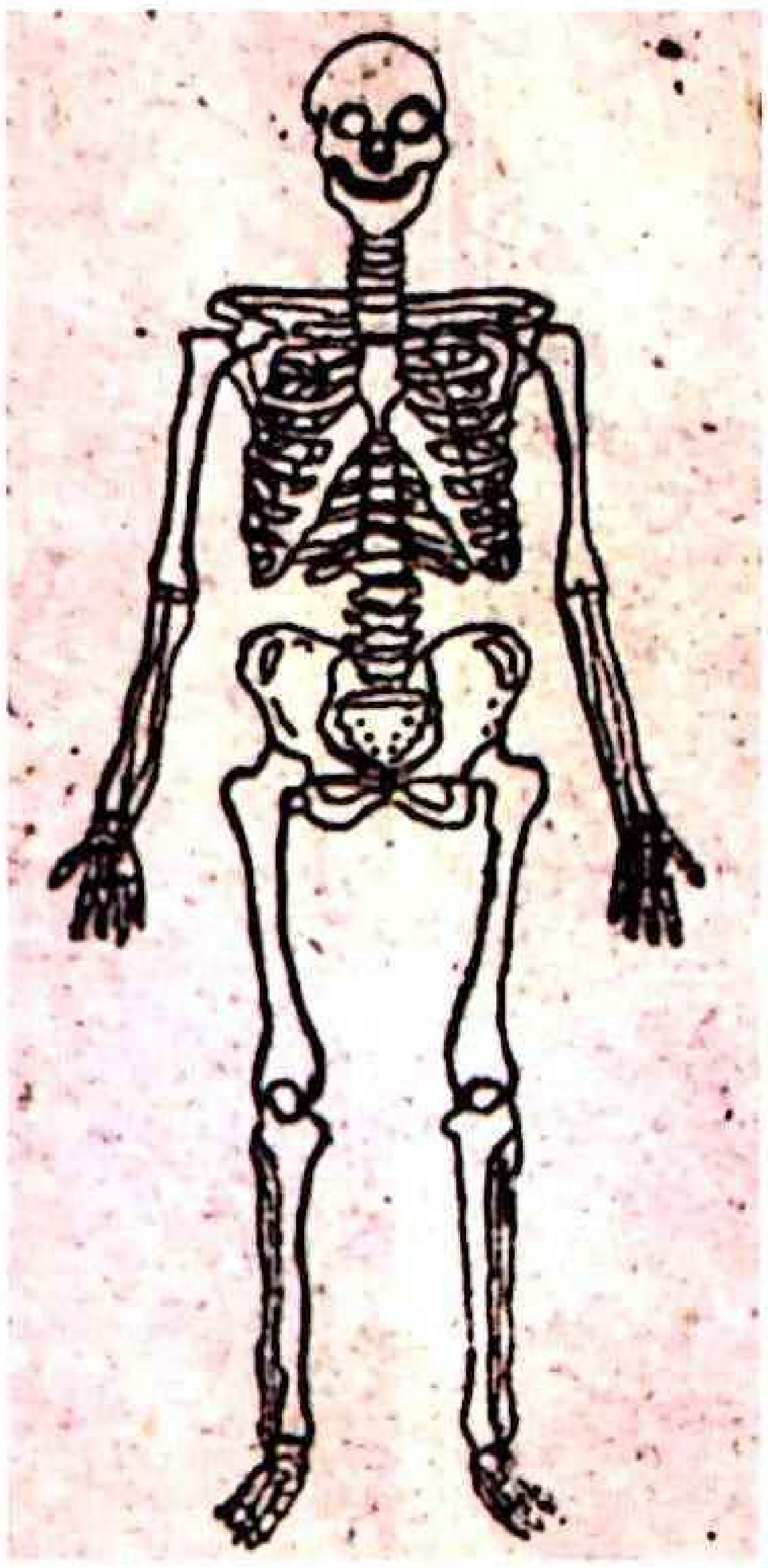

विक्की आनन्द

कोहराम

महिलाओं की अपनी पत्रिका

गृहलक्ष्मी

पारिवारिक मासिक पत्रिका

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : डायमण्ड पॉकेट बुक्स (प्रा०) लि०
X-30, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2
नयी दिल्ली-110020

फोन : 6841033, 6822803, 6822804

वितरक : पंजाबी पुस्तक भण्डार
दरीबा कलां, दिल्ली-110006

सरकरण : 1997

मुल्य : बीस रुपये

मुद्रक : जी० आर० प्रिंटर्स, गांधी नगर, दिल्ली-31

KOHRAM (NOVEL) VIKKI ANAND

डायमंड पॉकेट बुक्स में

लोकप्रिय जासूसी उपन्यासकार

राहुल

का आगामी नवीनतम उपन्यास

जुनून

राहुल के अन्य उपलब्ध उपन्यास

- -

Detailed view of table

- काली हवेली
- वह कौन थी?
- बगावत
- कातिल मूर्ति
- धरती मांगे खून
- काला आदमी
- टॉप सीक्रेट
- विस्फोट
- अधजला चेहरा
- मैं इन्तकाम लूंगा
- बेवफा पति

डायमण्ड पाकेट बुक्स (प्रा०) लि०

X-30, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया. फेस-2

नयी दिल्ली-110020

प्रकाशक की ओर से

दो शब्द

प्रिय पाठकगण,

लोकप्रिय जासूसी उपन्यासकार विक्की आनन्द का नवीनतम जासूसी उपन्यास **कोहराम** आपकी सेवा में प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है।

हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आपको यह उपन्यास अवश्य पसन्द आएगा और आप लेखक को अपनी राय से अवश्य अवगत करायेंगे।

यदि आप चाहते हैं कि इसी तरह के रोचक उपन्यास आपको घर बैठे प्राप्त होते रहें तो आप डायमण्ड पॉकेट बुक्स द्वारा संचालित **'अपने घर में अपनी लायब्रेरी यरेजना'** के सदस्य बन जाये। इस योजना के अन्तर्गत हर महीने 50 रुपये के उपन्यास 45 रुपये में वी० पी० से भेजे जाते हैं। **डाक-व्यय फ्री।** सदस्य बनने के लिए सदस्यता शुल्क दस रुपये मनीआर्डर से भेजें।

आशा है, आप भी लाखों का की तरह इस योजना से लाभ उठाएंगे।

-प्रकाशक

लेखक का पता :
विक्की आनन्द
A-6/4, बसन्त बिहार,
नई दिल्ली-110057

कोहराम

दोनों प्लेन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से लगभग ही समय उड़े।

कंट्रोल टॉवर से उन्हें दिशा-निर्देश निरंतर मिल रहा था। दोनों कों कुछ देर तक साख-साथ उड़ना था और बाद में उनकी उड़ान रेखाएं अलग हो जानी थी दिशाएं भी बदल जानी थीं।

फिर एकाएक न जाने क्या हुआ दोनों ने निर्धारित अलंग-अलग ऊंचाई पर पहुंचकर दिशाएं नहीं बदलीं और एक-दूसरे के निकट आने लगे।

कंट्रोलर हड़बड़ाकर खड़ा हो गया और इस प्रकार चिल्लाने लगा मानो दोनों के चालक उसके सामने ही रबड़े हों और फिर अचानक ही दोनों विमानों की सम्पर्क कंट्रोल टॉवुर से टूट गया।

कंट्रोलर जल्दी से हवाई अड्डे के दूसरे मुख्य कर्मचारियों से सम्पर्क स्थापित करने लगा था। वह बौखला-सा गया था।

□□

इण्डियन एयर लाइंस के बोइंस ७०७ का चालक प्लेन को दूसरी ओर से ले जाने का प्रयत्न करने लगा लेकिन उसे यूं अनुभव हुआ जैसे विमान उसके नियंत्रण से बाहर होता चला जा रही है और किसी चुम्बकीय शक्ति के आधीन साथ जुड़ने वाले विमान की ओर रिवचता चला जा रहा हो। उसने कंट्रोल टॉवर से सम्पर्क जोड़ने का एक और प्रयास किया।

दूसरा प्लेन भी स्वयं ही उसकी ओर खिंचता चला आ रहा था। अब दोनों प्लेन एक ऊंची टेकरी को पार कर रहे थे। जिंसके दूसूरी ओर एक पर्यटन स्थल था और एकाएक दोनों प्लेन एक-दूसरे के साथ टकराए और कानों को फोड़ देने वाले धमाके के साथ दोनों प्लेन आग की लपटों में थे।

प्लेन की दिशा आबादी की ओर थी और चालाक ने अनुमान लगा लिया था कि अगर उसका प्लेन आबादी पर गिरा तो नीचे बहुत बर्बादी होगी।

चालक ने भगवान को याद करके पूरे जोर-से स्टेयरिंग काटा और प्लेन का एक परब टूटकर जाने कहां जा गिरा लेकिन दूसरे बचे पंख ने बस इतना सहारा दिया कि प्लेन आबादी वाले क्षेत्र से बचकर एक ओर आ गया...लेकिन वह चालक के नियंत्रण में नहीं आया।

चालक ने आंखें बंद कर लीं 'काक पिट' टूट चुका था। यात्रियों के शोर में एक कोहराम-सा मचा हुआ था। किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था सिवाय मौत...मौत...अति भयानक दुर्धटना...प्रलय का दृश्य।

□□

डेविड इस समय शीतलगढ़ के एक शानदार होटल में एयरकंडीशंड हॉल में लंच ले रहा था। उसके सामने मेज पर स्कॉच लगे लेबल में ठर्रे की भरी बोतल रखी थी। उसमें से डेविड थोड़े- थोडे समय बाद घूर भर लेता था। बोतल पर क्कॉच का लेबल केवल होटल की पोजीशन देरवकर वास्तव में केरन किरलोस्कर नाम एक विदेशी दूतावास के कर्मचारी अटैची के कारण लगा रखा था क्योंकि मिस्टर किरलोस्कर को किसी विशेष ग्रुप ने किडनेप कर लिया था और उसके दूतावास ने स्थानीय पुलिस कमिश्नर को उसे ढूंढने के लिए बाकी रकम दे दी थी। कमिश्नर डेविड का खास फैन था और उसने ही केरन को डेविड से मिलवाया था। उन लोगों ने डेविड को इस काम के लिए इतना बड़ा मुआवजा देने का वचन दिया था जितना उसे कहीं से नहीं मिला था और मामला कि डिप्लोमैटिक मिशन का था इसलिए उसका बड़े ऊंचे दर्जे के होटल में ठहरना ही जरूरी था।

केरन किरलोस्कर ने डेविड को बताया था कि जिस दिन उसका हस्बैंड गायब हुआ था। उसको शीतलगद से ही किसी का फोन आया था। केरन ने शीतलगढ़ का केवल नाम ही सुना था और उसके हस्बैंड के फोन हिन्दुस्तान के विभिन्न जाने- अनजाने स्थानों से आते रहते थे और इस केस में शीतलगढ़ का महत्व इसलिए उत्पन्न हुआ क्योंकि घर से फोन रिसीव करने के बाद यह न वापस लौटा न उसकी कोई सूचना कहीं से मिली थी...इसलिए डेविड ने केरन को

साथ लेकर अपना बढ़िया गेटअप बनाकर पर्यटक के रूप में शीतलगढ़ से खोज का काम आरंभ किया।

उसने इस समय चमड़े की जैकेट, काली जींस और एकल गूज पहन रखे थे और वह केरन के साथ बाडीगार्ड और पसर्नल सैक्रेटरी बनकर ठहरा था। केरन चाहती थी कि डेविड सूट-बूट पहने लेकिन डेविड ने इंकार कर दिया था। हां, उसने सिर पर एक बढ़िया स्कार्फ चरूर बांध लिया था। केरन को कमिश्नर ने समझा दिया था कि अगर वह डेविड से काम लेना चाहती है तो वह डेविड को किसी बात के लिए टोके नहीं।

केरन तीस-बत्तीस वर्ष की स्वस्थ शरीर, नीली आरबों की बड़ी आकर्षक सुन्दरी थी जिसके होंठों में और मुस्कराते समय दोनों गालों में पड़ने वाले गश्ढी से बला की सैक्स की अपील थी और पक्ष के उभार ऐसे सुडौल और सुते कि हजारों अमरीकी औरतों में ले शायद ही किसी एक के होंगे।

केरन को अपनी इस यौवन शक्ति पर बड़ा गर्व था और उसके प्रति डेविड की उपेक्षा केरन को अखरी थी और यह भीतर से कुछ झंझलाई भी लगती थी।

वे दोनों आज सुबह ही एक प्राइवेट कर मे शीतलगढ़ पहुंचे थे। कार स्वयं केरन ड्राइव करके लाई थी। वह चाहती थी कि डेविड उसके साथ ही अगली सीट पर बैठे। लेकिन डेविड ने पिछली सीट पर अकेले ही बैठना उचित समझा था।

उनके लिए शीतलगद के र्राक 'राक व्यू' होटल में दो कमरे पहले ही बुक करा दिए गए थे। यह पांच माले का बड़ा फाइव स्टार होटल पहाड़ी के अचित में शहर के एक सुन्दर भाग में था जिसकी पिछली खिड़कियों से सारी घाटी का दृश्य झलकता था। होटल की लॉबी बीच के माले में थी और बिल्डिंग के दो माले नीचे तलहटी में थे और दो ऊपर। 'पिछली रिवड़्की ही से शीतलगढ़ की सबसे ऊंची पहाड़ी की वह चोटी दिखाई देती थी जहां ज्वालामुखी का मुंह था। इस खुले मुंह ले यह पर्वत वर्षो से हल्की-हल्की आग छोड़ता रहता था। भू-वैज्ञानिकों के अनुसार इस ज्वालामुखी के फट पड़ने की संभावना सौ वर्ष से पहले नहीं थी फिर भी मई, जून इन दो महीनों में कभी-कभार इस ज्वालामुखी के खुले मुंह से ऐसी आवाजें निकलती थीं जैसे कोयले के स्टीम इंजन से भांप निकल रही हो। सदियों में केवल रात के समय वहां रोशनी दिखाई देती जो किसी समय हल्की नीली हो जाती। इन दिनों में दूर-दूर से पर्यटक यहां आकर उस दृश्य के फोटोज उतारते।

यह दिसम्बर का महीना था इसलिए होटल में भीड़ नही थी...सेटर हॉल गर्म था और दूर-दूर मेजों पर कहीं-कहीं कोई जोड़ा बैठा-दिखाई देता था। डेविड और केरन दीवार के पास एक मौज पर बैठे थे। लंच में केरन ने अपने लिए चाईनीज डिश मंगवाई थी और डेविड के सामने हिन्दुस्तानी रवाना रखा था जिसमें तंदूरी चिकन, बारह नान आधा दर्जन उबले अंडे, आमलेट, सलाद की दो प्लेटें, दो पैक मक्खन के और पूररई बोतल ठर्रे की थी।

केरन के साथ उसका यह पहला लंच था। वैसे डेविड को लम्बे-चौड़े शक्तिमान शरीर के होते भी इतनो बड़ा मीनू कुछ अधिक ही लगता था फिर भी केरन ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं होने दी...हां मुस्कराई जरूर।

डेविड दारू के साथ इस प्रकार खाना खा रहा था जैसे पानी पीते जाते हैं और खाते जाते हैं। केरन उसको बड़ी रुचि से देरव रही थी लेकिन डेविड का ध्यान कोने वाली उस मेज की ओर था जिस पर एक ऐसा व्यक्ति बैठा था जिसे डेविड ने कई बार ऐसी नजरों से घूरते देखता था जैसे वह कोई विशेष स्वादिष्ट डिश हो। डेविड को उस साठ वर्ष के अंडे के छिलके के समान चमकते सिर, बिना भवों, दाढ़ी-मूंछों के चेहरे और तोतेके स्थान नाक-एक अनोरवा रहस्यमयी सा हुलिया दिखाई दे रहा था जिसके शरीर में शायद लहू हो ही नहीं। वैसे वह इकहरे जरीर का लम्बे कंद का आदमी था जिसने भूरे रंग का सूट पहन रखा था। उसके सामने व्हिस्की का एक बड़ा पैग रखा था और एक बोतल भी रखी थी जिस पर वोदका का लेबल लगा था।

कुछ देर बाद वेटर उस अंडे समान सिर के आदमी के सामने तीन प्लेटें निकालकर ररब गया था। सर्व करते हुए वेटर के चेहरे सै अप्रसन्नता सी टपक रही थी। डेविड ने प्लेटों पर ध्यान दिया तो देखा उन प्लेटों में सिर और पंजे कटे मेंढक, वैसी ही छिपकलियां और सांप के गोल और लम्बे-लम्बे टुकड़े ररवे थे।

केरन ने हल्की सी उबकाई ली। अपनी प्लेट आगे सरकाई और बड़बड़ाई- 'कितने गदई और भावहीन होते हैं यह चीनी और जापानी।'

डेविड इस प्रकार चौंका जैसे उसने पहली बारे कुछ सुना हो और केरन को घूरकर कहा-

'मुझसे कुछ कहा तुमने?'

'मैं उस आदमी के बारे में कह रही हूं।' उसने उस मेज की ओर संकेत करते हुए कहा- 'तुमने देखा नहीं उसका लंच?'

डेविड ने उचटती सी दृष्टि टाली और बोला- तो सकता है सांप, छिपकली और मेंढक चिकन से बढ़कर स्वादिष्ट होते हों अपना- अपना टेस्ट है। क्या आप लोग केकड़ा और सुंअर नहीं खाते?'

मेरा तो मूड खराब हो गया।' केरन ने नाक भौंह सिकोड़कर अपना गिलास खाली क्रिया और उठती हुई बोली- 'मैं यह सब नहीं देख सकती, अपने कमरे में जा रही हूं।'

नहीं।' डेविड ने उसे घूरकर रोकते हुए- कहा- 'तुम यही बैठोगी कहीं नहीं जाओगी।'

'व्हॉट!' केरन कुछ गुस्से से बोली- 'तुमें मेरे ऊपर हुक्म चलाने आए हो?'

'नही...तुम्हार रक्षा की मेरी जिम्मेदारी है।'

'होटल में मुझे क्या खतरा हो सकता है?'

'मैं नहीं जानता लेकिन तुम्हारी रक्षा मैं सभी कर सकता हूं जब तुम मेरे सामने रहो।'

केरन कुछ सोचकर बैठ गई फिर बोली-

'मगर क्या रात को भी तुम मुझे अकेली नहीं छोड़ोगे?'

'रात की बात रात को देखी जाएगी।' डेविड ने लापरवाही से कहा।

केरन ने- दिलचस्पी से उस, देखते हुए कुछ सोचकर कहा- एक बात पूछूं?'

'पूछो?'

'क्या तुम्हारे जीवन में कभी कोई औरत नहीं आई?'

'सैकड़ों आती जाती हैं।' डेविड ने लापरवाही से कहा।

'मेरा मतलब उस औरत से है जों दूसरे ढंग से आती है।'

'हर औरत का ढंग एक ही होता है।'

केरन झुंझलाकर बोली, क्या तुम पत्थर हो?'

'सिर मारकर देरत्रो।'

इतने में वेटर ने आकर पूछा- 'और कुछ चाहिए साहब?'

'हां चाहिए।' डेविड ने घूरकर गुस्से से कहा- 'वह कोने वाली मेज पर जो छिपकला बैठा है...उसे देसी घी में तलकर ले आओ।'

वेटर कुछ घृणा से हंस पड़ा।

'साहब।' फिर उसने गंभीर होकर कहा, 'उनके रवाने से हम सब तंग आ गए हैं। उनके लिए एक खास किचन बनाया गया है और एक चीनी रसोइया एंगेज किया गया है।'

'क्या नाम है उस खास गेस्ट का?' केरन ने पूछा। शंघाई केशिंग हम सब कोशिग पुकारते हैं।'

'पर्यटक है?'

'पता नहीं! मगर बहुत पैसे वाला है...एक बार में इतनी टिप दे देता है कि सारे हफ्ते में भी इतना नहीं मिलता।'

'तब तो कोई सरकारी अफसर होगा?' डेविड ने पूछा।

'शायदु...एक हफ्ता हो गया है उसे आए हुए।'

'अकेला है...क्या?'

'नहीं...वह देखिए!'

वेटर ने उधर संकेत किया और केरन और डेविड दोनों घिघिया से गए क्योंकि अब शंघाई कोशिंग की मेज पर एक चितकबरा कोबरा सांप फन काई बैठा था और उसके, आगे दूध का बड़ा प्याला रखा था जिसमें वह बार-बार मुंह डालकर घूंट भरकर पीता था।

केरन का चेहरा सफेद पड़ गया। सांसें तेज चलने लगीं। लेकिन डेविड के चेहरे में कोई परिवर्तन नहीं आया। उसने वेटर से पूछा- क्या यह कोशिंग के साथ ही रहता है?'

'जी हां।' वेटर ने उत्तर दिया।

'इसका जहर और दांत निकले होंगे?'

'जी नहीं।'

'व्हाट?' डेविड ने इस बार आचर्य से पूछा।

'हां साहब! पता नहीं किधर से एक काला कुत्ता घुस आया था। उसने कोशिंग साहब पर हमला किया। इस सांप ने उसे लपेटकर जोर से-फर्श पर पटका और चंद ही क्षण में कुत्ते का सारा मांस, अंतड़ियां रबड़ की तरह पिघल गई और चंद ही क्षणों में वहां केवल दृष्टियों का ढांचा रह गया।'

'ओह गॉड!' डेविड ने कहा- ऐसे खतरनाक जानवर को होटल का मैनेजर कैसे सहन कर पाता है?'

साहब! मैनेजर साहब ने तो उसे रखने से इंकार किया था। लेकिन कोशिग साहब ने उन्हें विश्वास दिलाया था कि उनका कोबरा उसको दबोचकर मारता है जो उसके मालिक को हानि पहुंचाने का प्रयास करे और यह सच है कि यह कोबरा उनके साथ ही बैड पर सोता है।'

'फिर भी।?' डेविड ने कहा- ऐसे खतरनाक जानवर का क्या भरोसा?'

'सर बात यह है कि अभी पर्यटकों के आने का सीजन नहीं...होटल आधे से अधिक खाली पड़ा है और कोशिंग ने मैनेजर और मालिक की मुट्ठी काफी गरम कर रखी है?

जब वेटर चला गया तो केरन ने भयभीत स्वर में डेविड से कहा-

'मेरा विचार है हमें होटल बदल लेना चाहिए।'

'क्या उस कोबरा से डरकर? नहीं...मैं सोचता हूं आदमी को केवल आदमीसे डरना चाहिए और फिर हम हिन्दुस्तानी जब तुम जैसे लोगों से नहीं डरते तो फिंर और किससे डरेंगे?'

'व्हाट।' केरन ने कहा- 'तुम हमें इतना खतरनाक समझते हो?'

'निसंदेह कोबरा से बढ़कर।'

'किस कारण?'

'वह कारण जो तुम्हारी समझ में नहीं आ सकता। अगर समझ में आ गया होता तो फिर खतरनाक ही क्यों होते।'

केरन उसे घूरती रही फिर कुछ देर बाद बोली- 'क्या तुम सभी के लिए ऐसे ही असहनीय हो जाते हो?'

इससे पहले कि डेविड कोई उत्तर देता, अचानक कान फाड़ देने वाली आवाज के साथ होटल की इमाख कांपकर रह गई।

कई लोगों की चीखें निकल गई। पिछवाड़े की ओर लगे मोटे बुलेट इफ स्मोक कलर शीशों के पीछे लाल रोशनी के झमाके से होने लगे।

'क्या हुआ? यह कैसा धमाका था? आर० डी० एक्स तो नहीं था।' जोर-जोर से चीखों के बीच ऐसी आवाजें आने लगीं।

न केवल होटल में हलचल मच गई बल्कि बाहर से भी एक बंवडर सा गूंज रहा था। प्रलय जैसा कोहराम।

डेविड ने जल्दी से जेब में हाथ डालकर रिवाल्वर पकड़ लिया और सबसे पहले कोशिंग की मेज की ओर देखा मगर पता नहीं कीशिंग कब और किधर गायब हो गया था।

वह डेविड को शुरू से ही संदिग्ध लग रहा था। उसकी छठी ज्ञानेन्द्री इस अनोखे आदमी को देखते ही सक्रिय हो चुकी थी।

केरन खड़ी थरथर कांप रही थी। उसने पूछा-

'यह...यह...क...क...क्या हुआ? जरूर आर० डी० एक्स० का विस्फोट हुआ है।'

डेविड ने इधर-उधर ध्यान से देखा। दल बारह औरतें काउंटर के पास इकट्ठी हो गई थी और उन्होंने वेटरों और दूसरे होटल के कर्मचारियों को घेरे में ले रखा था।

डेविड ने केरन से कहा-

'तुम उन औरतों के बीच चली जाओ।'

'और तुम?' केरन ने पूछा।

'मैं बाहर जाकर पता लगाता हूं।'

'नहीं, मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी।'

'शटअप एण्ड मेक हेष्ट।' डेविड ने गुर्राकर कहा। फिर केरन को बांह से खींचकर औरतों के जमघट की ओर धकेल दिया और फिर तेजी से बाहर की ओर बढ़ा। उसे जाते हुए देखकर असिस्टेंट मैनेजर ने जोर से पूछा-

'कहा जा रहे हैं आप?'

'क्यों?' डेविड ने पलटकर कहा- 'क्या बाहर कर्फ्यू लगा है?'

'सर! पता नहीं बाहर कैसी प्रलय टूटी हो।'

'तो क्या हम चूहों की तरह यहां बिलों में घुसे उस प्रलय का तमाशा देखते रहेंगे?'

मैनेजर देखता ही रह गया और डेविड फुर्ती से बांहर निकल गया।

डेविड को देखकर दरवाजे पर खड़ा सशस्त्र पहरेदार उसे ध्यान से देखने लगा था। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

डेविड ने पहरेदार को घूरकर कहा-

खिड़की खोलो-मुझे बाहर जाना है।'

'साहब! चौकीदार ने कहा- 'मैनेजर साहब की आज्ञा नहीं है।'

डेविड पीछे हटा। थोड़ी सी दौड़ लगाकर उसने छलांग भरी और दूसरे ही क्षण दीवार से बाहर जा खड़ी हुआ। बाहर डेविड ने पुलिस की एक जीप को देखा और आगे बढ़कर हाथ उठाया। जीप रुक गई और डेविड ने पूछा-

'यह कैसा कोहराम मचा है? धमाका कैसा था?

एक एस० आई० ने उत्तर दिया-'उत्तर की ओर पहाड़ियों के बीच हवा में दो विमानों की टक्वार हो गई है। एक मैदान में गिर पड़ा है दूसरा पहाड़ियों से लुढ़ककर नीचे खाई में जा गिरा है।'

'आप लोग उधर ही जा रहे हैं?'

'जी हां।'

'मैं चल सकता हूं?'

'आइए।'

डेविड जीप में सवार हो गया स्सैर जीप चल पड़ी। पुलिस वालों के चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं। आबादी में कोहराम मचा हुआ था।

एस० आई० ने कहा-

'बड़ी भयानक दुर्धटना हुई है...शायद ही कोई यात्री या स्टाफ का आदमी बचा हो।'

'क्या दोनों विमान विपरीत दिशाओं में उड रहे थे?' डेविड ने पूछा।

'नहीं।' एस० आई० ने कहा- 'दोनों एक ही ओर उड़ रहे थे।'

'ओहो! फिर कैसे भिड़ गए?'

'बिकुल ऐसा लगा जैसे दोनों को किसी शक्तिशाली चुम्बक ने एक साथ भिड़ा दिया हो।'

'आपने अपनी आखों से देखा था?'

'जी हां साहब।' एम० आई० ने कहा- 'हम लोग गश्त कर रहे थे। पहले हमने उन्हें फासले पर उड़ते केला, शायद दोनों लनभग एक साथ एक ही एयरपोर्ट से उड़े थे। फिर देखते ही देखते दोनों एक-दूसरे के काफी निकट आ गए और फिर अचानक झटके से दोनों एक-दूसरे की ओर खिंचकर टकरा गए जैसे किसी बहुत प्रबल रिमोट कंट्रोल से यह घटना घटी है। एक विमान के चालक ने शायद शीलतगढ़ की आबादी को बचा लिया। दूसरा विमान टक्कर होते ही आग के शोलों में लिपटा हुआ पहाड़ी से टकराकर खाई में चला गया था।

जीप मैदान तक नहीं पहुंच सकी। डेविड भी काफी दूर उतर गया। फायर ब्रिगेड की कई गाड़ियां आग बुझाने से

लगी थी। पुलिस के लोग आसपास के गांव से आई भीड़ को ढलान में उतरने ले रोक रहे थे।

डेविड को भी रुकना पड़ा लेकिन वह पूरा भयानक दृश्य देखने के लिए एक ऊंची टेकरी पर जा खड़ा हुआ। उसने गर्दन में लटकी जैकेट के अंदर से दूरबीन निकालकर आंखों पर लगा ली थी। उसके सामने अब पूरा भयानक दिल दहला देने वाला दृश्य था। जहाज के कई टुक्खे जगह-जगह बिखरे पड़े थे जिनमें से कुछ में आग लगी थी। चारों ओर लाशें नजर आ रही थीं। कुछ लाशें आसपास की चट्टानों और झाड़-झंकाड़ में उलझी नजर आ रही थीं। कुछ पेड़ों में लटकी हुई थीं।

डेविड. ने पुलिस फोर्स के कई लोगों को लाशों की जेबें टटोलते हाथों से घड़ियां और औरतों के जेवरात उतारकर अपनी जेबों में ठूंसते देखा। पूणा और गुस्से झे उसके होंठ भिंच गए। दस-बारह एफ्लेंस की गाड़ियां भु ाई पहुंच गई और हस्पतालों के कर्मचारी स्ट्रेचर उठाकर ढलान में उतरने लगे। अत्यंत दुखदाई दृश्य था। अचानक डेविड ने एक आवाज सुनी।

उसने दूरबीन हटाकर देखा, एक गोरी-चिट्टी बड़ी स्मार्ट-सी लड़की जो चेहरे की बनावट से पहाड़ी लगती थी। नेपालिन जैसी...उसके पास आ खड़ी हुई थी।

वह लड़की बहुत सुन्दर थी। शरीर पर काला लम्बा कोट जींस, सिर पर छज्जेदार कैप पहने थी। उसकी आंखों से भीतर की पीड़ा स्पष्ट झलक रही थी। वह बार-बार अपने होंठों पर जुबान फेर रही थी।

डेविड ने अपनी दूरबीन उतारकर उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा-

'लीजिए...इससे देखिए साफ दिखाई देगा।'

लड़की ने दूरबीन लेकर आंखों पर लगा ली और डेविड उसके चेहरे पर आतंरिक पीड़ा के भाव देखने लगा। प्राय: ऐसे लगता था कि वह' त्यौराकर गिर पड़ेगी। डेविड ने जल्दी से दूरबीन उससे ले ली और बोला--

'तुमसे नहीं देखा जाएगा।'

'मुझे...मुझे...।' लड़की ने कहा- 'मुझे चक्कर आ रहे हैं।'

डेविड ने मजबूती से उसकी बांह एमए कहा- 'बहुत कमजोर दिल मालुम होती हैं आप।'

लड़की कंपकंपाती आवाज में बोली- 'इतना भयानक और पीड़ा भरा दृश्य...! क्या आपका दिल नहीं दुहला?'

डेविड ने कहा- 'मुझे बहुत दुःख हुआ हैबल्कि आघात पहुंचा है।'

लड़की ने रूधे से स्वर में कहा- 'क्या दोष था इन लोगों का- 'कौन-से पाप का फल मिला है इन मासूम बच्चों को? औरतों...मर्दों को?'

डेविड ने सांत्वना देते हुए उसका कंधा थपककर कहा- 'टेक इट इजी बेबी...इस संसार में सब-कुछ संभव है...होनी भी अटल है।'

'मगर संसार बनाने वाला एतना बेदर्द?'

'ऐसा मत कहो-शायद इसमें भी कोई भलाई छिपी हो...तुम शयद स्टूडेंट हो?

'जी हां...मैं इंडिया में हायर स्टडी के लिए आई हूं।'

'नेपाल की रहने वाली हो?'

'जी हां, काठमांडू में रहती हूं।'

'मेरा भी यही अनुमान था।'

'मैं उसी होटल में हूं जिसमें आप आब अकर एक अमरीकन लेडी के साथ ठहरे हैं।'

"ओहो...।'

'भेरा नाम किरण है...ओह! मुझसे बड़ा नहीं हुआ जा रहा।'

'तुम इधर टेक लगाकर बैठ जाओ।' डेविड ने उसे एक ऊंचे पत्थर के साथ टेक लगाकर बिठा दिया।

वातावरण में धुएं के साथ इंसानी मांस के जलने की चिराध फैली हुई थी।

किरण के कंधे पर एक बैग लटका हुआ था। उसे हल्की-हल्की उबकाई-सी आने लगी थी।

डेविड के पास इस समय कोई ऐसी दवाई नहीं थी। वह जल्दी में न अराएवरकोट पहन सका था और न बोतल ही ला सका था। सिर भी स्कार्फ से ढंका दुष्ट नहीं था। किरण ने उबकाई ली और बोली-

'मेरा जी मितला रहा है।'

'बहुत चिरांध फैली हुई है।' डेविड ने कहा-'तुम्हारे बैग में व्हिस्की तो जरूर होनी चाहिए।'

'ओह! हां...मैं तो भूल ही गई थी। ' किरण ने क्मे से बैग उतारा और उसे खोलकर एक पूरी बोतल दिक्की की निकाल ली। डाट निकालकर एक लम्बा घूंट भरा फिर बोतल डेविड की ओर बढ़ा दी और बोली- 'लीजिए...आप भी लीजिए।'

डेविड ने बोतल लेकर एक तथा घूंट लेकर बोतल उसे लौटा दी।

किरण ने एक घूंट और भरा और बोली-

'मैं उम समय बाहर निकली थी जब आप होटल के काउंटर पर अपने कमरों की चाबियां ले रहें थे।'

'हूं।'

'वह अमरीकन महिला आपकी पत्नी हैं?' उसने पूछा।

डेविड ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा-

'वह मेरी क्लाइंट है। कभी मैं यहां गाइड क काम करता था। इन दिनों अमरीकन कौंसिल का पर्सनल बॉडी- गाडी गार्ड हूं। केरन किरलोस्कर अमरीकन डिप्लोमेंट है, मेरे साथ इधर मूमने आई हुई हैं।'

'क्षमा करना, मैं गलत समझी यी।'

'तुम सुबह-सुबह क्यों निकल पड़ी थी?'

'मुझे कोहरा देखने का चाय है। जब मैं होटल से निकली थी तो वातावरण काफी सुंधला था। आपने तो देखा ही होगा।'

'हां, देखा था।' और डेविड ने दूरबीन फिर आखों से लगा ली।

अब लाशें स्ट्रेचरों पर खादी जा रही थीं। सिविल पुलिस ने अपनैं और हस्पताल के स्टाफ की सहायता के लिए स्थानीय स्वयंसेवकों को बुला लिया था। जो लोग जोश के साथ सेवा कर रहे थे।

किरण ने कहा-

'शायद यह भयानक दुर्घटना एक ऐतिहासिक दुर्घटना होगी।'

'निस्सदेह।' डेविड ने बिना उसकी ओर देखे उत्तर दिया।

फिर अचानक डेविड किरण की चीख सुनकर चौंक पड़ा।

किरण हड़बड़ाकर डेविड से इस तरह लिपट गई थी कि उसकी दोनों टांगें डेविड की पीठे से लिपटी हुई थी और वह थर-थर कांप रही थी।

डेविड ने उस सांप को देखा तो चौंक पड़ा। लगभग दो मीटर लम्बा वही कोबरा था जो उसने होटल में केशिंग के साय देखा था। पता नहीं किधर ले चढ़कर यहां आ पहुंचा था और अब कुण्डली मारे फन फैलाए बैठा था।

डेविड ने रिवाल्वर संभाला ही था कि अचानक कोबरा ने कारकर एक ओर मुंह मारा। सब डेविड ने उस खतरनाक गहरे काले नाग को देखा जो ठीक उस जगह अपने बिल से बाहर निकैलकर झांक रहा था जहां कुछ देर पहले किरण बैठी थी।

डेविड और किरण दोनों सांपों को ध्यान से देखने लगे। कोबरा नेन्त्रहरीले नाग की गर्दत में फंदा-सा डाल लिया। वह उसे विल के बाहर खींच रहा था जबकि नाग अपने आपको वापस विल की ओर खींच रहा था।

किरण कंपकंपाते स्वर में बोली-

'चलिए...यहां ले चलिए।'

'एक मिनट ठहरसे लड़की।' डेविड ने कहा, ऐसा दिलचस्प दृश्य कभी-कभी देरने को मिलता है।'

'कहीं वह हम पर हमला न कर दे?'

'अभी मैं बेरबबर नहीं हुं बेबीचिन्ता मत करो।'

कोबरा ने काले नाग को बाहर खींच ही लिया। फिर इस तरह दुम पर खड़े होकर उसे ऐसे पटकनियां दीं जैसे कोई

आदमी अपने दुश्मन को मार रहा हो और देखते ही देखते काले नाग ने तड़प-तड़पकर दम तोड़ दिया।

किरण सांस रोके यह तमाशा देख रही थी और डेविड उसे ऐसे सहज भाव से देख रहा था जैसे कोई रोचक खेल हो।

अचानक एक ओर से आवाज आई-

चैलन केबी...वैल्डन।'

डेविड ने चौंककर उधर देखा।

किरण डेविड की पीठ से उतर गई थी और वह भी सामने खड़े कोशिंग को देरब रही थी जिसके सिर पर सब एक बंदर टोपी थई। जिसमें से उसका चेहरा नजर आ रहा था। उसने एक लम्बा कोट पहन रखा था जिसके कॉलर रबड़े हुए थे।

कोबरा पन काहे बैठ गया था। कोशिग डेविड और किरण की ओर देखकर मुस्कराया और बोला-

'आप लोग मेरे कोबी का धन्यवाद नहीं करेंगे?'

'डेविड ने गंभीरता से कहा-'उससे पहले हमें तुम्हारा धन्यवाद करना चाहिए कि तुमने इस कोबरा को इतनी अच्छी ट्रेनिंग दी है मगर इसने हमें काले नाग से कैसे बचा लिया?'

'मेरा कोबी मेरे समान दोनों का दोस्त है मेरी तरह इसने तुम दोनों को होटल में देख रखा है। इस समय तुम्हें खतरे में देरवकर बचाना इसने अपना कर्तव्य जाना होगा।'

केवल हमें ही या होटल के दूसरे ग्राहकों को भी?'

'अवश्य...होटल का कोई भी ग्राहक इस समय खतरे में होता तो कोबी उसकी मदद करता। मगर कोबी सुन्दरता और वीरता का प्रशंसक है। तुम मूरत से निडर और बहादुर मालूम होते हो। फिर किरण की ओर देखकर बोला- 'और यह किरण कोमल और सुन्दर कली है, बाई दी वे तुम दोनों की तो आज ही जान-पहचान हुई होगी?'

'हां...मैं आज ही शीतलगढ़ आया दूं।' डेविड ने कहा- 'यह भयानक दुर्घटना न घटी होती तो अभी शायद हमारी भेंट न हुई होती...मिस किरण भी यही देखने आई हैं और शायद तुम भी..यह संयोग है।'

'हां! कोशिग ने प्रसन्ना व्यक्त कर। हुए कहा- 'मुझे होता है। विशेषकर तब जब बह बच्चे, औरतें और बूढ़े हों और लाशों को देरवकर तो मुझे कई बोतलों का नशा हो जाता है।'

डेविड ने सुरा-सा मुंह बनाकर कहा- 'तब तो तुम बहशी से बढ़कर निन्दनीय हो।' 'नहीं।' कोशिग डाका लगाकर बोला- 'नहीं दोस्त, चायल औरतें बच्चे और बूढ़े और इंसानी लाशों के ढेर इनमें सभी की रुचि होती है। एक आनंददायक सनसनीं सी। केवल दिखाने के लिएलोग अएद प्रगट करते हैं। क्या अभी तुमने दूरबीन से नहीं देखा। वह लोग जों लाशों की जेबुएं खाली कर रहे थे, औरतों के गहने उतार रहे थे। हमारी तुम्हारीतरह इंसान नहीं? अभी टी० वी० परकई नेता दुःख प्रगट करेंगे, शोक सभाएं होंगी। सरकारी फंड से मरने वालों के घर वालों के लिए धन एकत्रित किया जाएगा जिसमें एक चौथाई तो बांटने वाले की जेबों में पहुंच जाएगा जिनमें चपरासी से लेकर मंत्री महोदय तक शामिल होंगे।'

'क्या तुम सचमुच चीनी हो?' अचानक डेविड ने पूछा।

'हां...मेरा जन्म तो चीन ही में हुआ था। तुम शायद इसलिए पूछ रहे हो कि मैं हिन्दी अच्छी-खासी बोल लेता हूं...मैं दुनियाकी चौदह भाषाएं ऐसे बोल लेता हु कि हर भाषा बाला मुझे क्रमने देश का ही समझने लगता है।'

'बहुत खूब!'

कीशिंग ने कोंबरा सइई ओर मुड़कर कहा- 'कम ऑन कोबी...लैट अस गो।'

कोबरा तेजी से रेंगता हुआ पास आया और केशिंग ने उसे उठाकर गले में लटका लिया और वह झट उसके कोट के अंदर छुप गया।

'ओट ३० फ्रैंड्स।' कोशिंग ने मुस्कराकर कहा- 'होटल में भेंट होगी।' फिर उसने किरण को ऐसी दृष्टि से, देखा किउकइरण के शरीर में बिजली-सी दौड़ गई।

जव यह पलटकर चला गया तो किरण ने होंठों पर जुबान फेरी और डेविड से बोली- 'वह मुझे कैसी नजरों से देख रहा था।'

'परवाह मत करो। वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता लेकिन जुमने क्या अभी तक इतने लम्बे कद का चीनी आदमी देखा है?'

'सचमुच नहीं...मुझे तो यह चीनी लगता ही नहीं...वैसे भारत के कई भागों में ऐसी शक्लों के आदमी मिलते हैं। आप होटल कब वापस जाएंगे?'

'पता नहीं...क्यों?'

'मुझे होटल जाते हुए भी अब डर महसूस होगा...हो सकता है आज ही मैं अपना होटल बदल लूं...किसी दूसरे होटल में चली जोऊं।'

'जैसे तुम्हारी इच्छा।' डेविड ने लापरवाही से कहा- 'सड़कों पर चहल-पहल है। तुम इस समय निडर होकर होटल जा सकती हो।'

डेविड इतना ही कहकर त्सगे बढ़ गया। उसके रूखे स्वर से शायद किरणॅ को ठेस लगी थी। थोड़ा टेकरी ले नीचे उतरा तो उसे केरन दिखाई दी लेकिन डेविड रुका नहीं...उतरता ही चला गया। केरन तेज कदमों से ऊपर आ रही थी और जब वह डेविड के निकट पहुंची तो हांफ रही थी। उसने थोड़ा इरकर डेविड से पूछा- 'कौन है वह हड़की।'

'तुम्हें मतलब?' डेविड ने कुछ गुस्से से कहा।

'मैं दूर से देखती आ रही हूं...कितनी घनिष्ठता के साथ तुम से बातें कर रही थी।'

डेविड ने उपेक्षा से कहा- 'आज रात वह मेरे केमरे में गुजारेगी...हमारी पुरानी जान पहचान हैं...संयोग से यहां भेंट हो गई।'

'व्हाट नानसेंस! तुम मेरे साथ आए हो।'

'मैं तुम्हारे लिए काम कर रहा हूं...तुम्हारा पाबंद नहीं...मेरे निजी मामलों में दखल मत दो।' फिर वह नीचे उतरने लगा।

केरन के होंठ भिंचे हुए थे लेकिन उसे अपनी भूल का अहंसास था। किरण अभी ऊपर ही खड़ी थी। उसनें किरण को देखा फिर कुछ सोचा और एकाएक उसके जबड़े ढीले पड़ गएफिर वह तेज-तेज उतरकर डेविड के पास आकर बोली-

'आई एम सॉरी..! मैं बौखलाहट में जाने क्या कह गई।'

'तुमने होटल किसकी आज्ञा से छोड़ा?'

'क्या मतलब?'

'जब तक मैं तुम्हारा बाडीगार्ड दूं तुम मेरी आज्ञा के बिना कहीं घूम फिर नहीं सकतीं...कहीं कोई अनदेखी गोली तुम्हें लग गई तो उक्की जिम्मेदारी तो मेरे ऊपर होगी।'

केरन के चेहरे से घबराहट झलकने लगी थी। उसने कहा- 'क्षमा करना अब मैं कोई ऐसी. बात नहीं करूगी।'

वे लोग नीचे आ गए थे। अब कई संवाददाता माइकों और कैमरों के साथ वहां पह्रुंच चुके थे। टी० वी० वाले भी अपने काम में जुटे हुए थे...एकाएक केरन ने डेविड की बांह थाम ली। डेविड गुर्राकर मुड़ा तो करेन की औरवे देरवकर रूक गया।

'सुनो।' केरन ने थूक निकलगर कांपते स्वर में धीरे ले कहा- 'किसी ने मेरी जेब में कोई पत्र डाल दिया है। कहीं आड़ में चलो।'

दोनों एक चट्टान की आड़ में आ गए...केरन ने एक मुड़ा-तुड़ा परचा निकालकर डेविड को दे दिया। डेविड ने धीरे से पड़ा- 'दफा हो जाओ वरना शीतलगद तुम्हारे लिए कब्रिस्तान बन जाएगा।' किरलोस्कर को अब तुम कभी नहीं पाओगी।'

डेविड के होंठ और भी भिंच गए। केरन का चेहरा संफेद पड़ गया था। उसने कहा- 'मेरा सदइहफ सच निकला मेरे हस्बैंड यही किसी की कैद में हैं।'

डेविड ने कहा-

'और अब, उन लोगों ने मुझे भी तुम्हारे साथ देख लिया है।'

'अबु क्या होगा?'

'कुछ नहीं...यह केवल गीदड़ भभकी है।'

'मगर अब मैं एक पल भी अकेलीं नहीं रह सकती।' बहतर होगा तुम वापसं चली जाओ...मेरे पास तुम्हारे हस्बैंड का फोटो है, में उसे रबोज दूंगा...मगर तुम्हारी उपस्थिति में मेरी खोज में बाधा पड़ सकती है।'

केरन एकाएक बिगड़ गई। मेरा यहां रहना तुम्हें इसलिए असरने लगा है कि तुम उस लड़की के साथ रंगरलियां मना सको।'

'वह तो में तुम्हारे होते भी मना सकता हूं।'

'मैं उस लड़की को जान से मार दूंगी।'

'जरूर मार डालो।' यह कहकर डेविड लापरवाही से नीचे उतर गया।

2

रात तक सारे देश में कोहराम सा मच गया। ऐसी भयानक हवाई दुर्घटना भारतं के इतिहास में तो पहली बार घटी है। टी० वी० पर पहले प्रधानमंत्री का दुख भरा शोक सदईश प्रसारित हुआ फिर सिविल एविएशन मंत्री ने मरने वालों के निकट संबंधियों को एक-एक लाख रपये की धनराशि देने की घोषणा की और दुर्धटना के कारण की जांच के लिए एक कमीशन की नियुक्ति की गई। बाद में और अन्य मंत्रियों और विरोधी दलों के नेतागणों ने मगरमच्छ के आंसू बहाए।

दुर्घटना का विरोध दु:ख भरा पहलु यह था कि इण्डियन एयर लाइंस में यात्रा करने वाले नब्बे प्रतिशत वह लोग थे जो विभिन्न अरब देशों में धंधे के लिए जा रहे थे और इनमें भी अधिक संख्या उन लोगों की थी जिन्होंने न जाने किन कठिनाइयों में घूर का सामान बेचकर बाहर जाने का प्रबंध किया था। कई लोगों को मकान तक बेचने पड़े थे।

टी० वी० पर दुर्धटना की पूरी तस्वीर प्रस्तुत की गई थी। किसी का सिर नहीं, किसी की टांगेंबांहें नहीं, तब गुत्थम-गुल्था एक-दूसरे से जुड़े जले हुए पड़े थे। बहुत सारी लाशों की पहचान तक संभव नहीं थी। कौन किस धर्म का है, यहां तक कि प्राय: स्त्री पुरुष ज्ञान भी संभव नहीं था क्योंकि चेहरों के साथ शरीर के दूमरे अंग जैसे एक ही चिता में से काफी जल चुकने के बाद उन्हें निकाला गया हो। शुरू में तो एक अजीब हड़बोंग-सा मचा था। मरने वालों के रिश्तेदारों को घटना स्थल पर पहुंचाने और अपने प्रिय जनों की पहचान में गाइड करने वालों का अभाव था। साथ ही इंसानी हमदर्दी स्सैर दु:ख-सुख बांटने और स्वयंसेवी समितियों का काम प्रशंसनीय था।

कहीं मरने वालों की पहचान के लिए आने वाली भीड़ को मुक्त घटना स्थल पर पहुंचाया जा रहा था तो कहीं लोग पांच गुणा अधिक भाड़ा देकर आ रहे थे। कहीं उनके ठहरने की सुविधाएं उपलब्ध करने पर विचार हो रहा था और कहीं दुखी लोग मारे-मारे भटक रहे थे।

दोनों विमान अलग-अलग देशों के थे और उनके उच्च अधिकारी छानबीन और दूसरी कार्यवाहियों के लिए पहुंच गए थे। कभी कोई बयान देता कि सारा दोष कंट्रोलर का है कोई रडार को दोष दे रहा था। अभी तक किसी जहाज का ब्लैक बाक्स नहीं मिल पाया था। उनकी खोज जारी थी। विमानों का कोई टुकड़ा कहीं गिरा था कोई टुकड़ा बहुत दूर।

आसपास के होटल भरे पड़े थे। 'राक व्यू' होटल में काफी भीड़ हो गई थी। केवल इस अनोखी दुर्घटना को देखने के लिए देश के कोने-कोने-से लोग उमड़ पड़े थे। राक जू होटल की हर मेज खचाखच भरी थी। बढ़िया रवाना-पीना सब चल रहा था। होटल का आर्केस्ट्रा शोक धुन बजा रहा था। दु:ख दूर करने के लिए बढ़िया शराब भी थी।

डेविड केरन के साथ अपनी आरक्षित मेज पर था और कोशिग अपनी कोने वाली के, पर था लेकिन इस समय कोबरा उसके साथ नहीं था। किरण बिल्कुल अलग अकेली बैठी थी। वह भयभीत नजरों से कभी कीशिंग को देखती और कभी डेविड को।

कोशिंग किसी की ओर नही देरब रहा था। उसकी आंखों से चिन्ता झलक रही थी।

अचानक डेविड ने मेरिया को देखा जो शायद पहले ही आ चुकी थी और एक मेज के गिर्द पड़ी कुर्सी पर बैठी थी। उसके सामने एक लूं था और आरबों में भीतर को पीड़ा। वैसे लग रहा था कि उसे किसी की प्रतीक्षा है।

डेविड जानता था कि आजकल सीक्रेट सर्विस की टीम में एक नए चेहरे की बढ़ोतरी हुई हैं जो पैंतीस-चालीस की आयु का होगा लेकिन अपने आकर्षक व्यक्तित्व के कारण नौजवान लड़कियों की दृष्टि का मुरब केन्द्र बन जाता था।

डेविड सोच रहा था कि मेरिया इन दिनों यहां मनोरंजन के लिए तो आ नहीं सकती...इसका अर्प हुआ कि सीक्रेट सर्विस विमानों के हवाई टकराव की दुर्धटना में रुचि ले रही है। स्पष्ट है कि दाल में जरूर कुछ काला है।

फिर अचानक ही केरन ने डेविड की बांह रबीचकर उसे झिंझोड़ डाला...डेविड का ध्यान छिन्न-भिन्न हो गया। उसका जी चाहा कि वह केरन के गाल पर भरपूर थप्पड़ दे मारे मगर जाने क्यों उसने धीरज से काम लिया और बोला-

'इस फाइव स्टार होटल में इस प्रकार किसी को संबोधित करना आऊट आफ ऐटीकेट है।'

केरन ने स्कॉच का पूरा गिलास खाली कर लिया था।

और उसकी आंखें लाल हो रही थीं। उसने गुस्से से कहा, 'मैं देरब रही दूं तुम बड़ी देर से उस सुन्दर लड़की को घूर रहे हो।'

'हां।' डेविड ने भी गुस्से से कहा- 'तुमसे सुन्दर है.... सैक्सी भी।' फिर उसने दारू की बोतल उठाई और घूंट भरकर किरण की ओर देखने लगा।

'व्हाट! तुम मेरी इन्सल्ट कर रहे हो।' केरन गुस्से से उठती हुई बोली।

डेविड नें बिना उसकी ओर देरवे कहा-

'हां जाओ, वह उधर बैठा केशिंग तुम पर प्राण छिड़कता है।'

अचानक केरन सोई की झाग की तरह बैठ गई। उसका चेहरा उतर गया था। उसने कनखियों ले कोशिंग को देखा जो उसी को निहारे जा रहा था। केरन के शरीर में जैसे ठंडी सी जहर दौड़ गई। उसने भूक निगलकर धीरे-से कहा-

'वह कोई आदमी है क्या? मुझे ऐसा लगता है जैसे कोई खतरनाक सांप दुम के बल खड़ा मुझे डंसने की ताक में हो।'

डेविड ने गंभीरता से कहा- देखो...तुम मेरे ऊपर किसी प्रकार की भी पाबंदी लगाना बंद करा दो वरना मैं जिस विशेष -काम के लिए यहां तुम्हारे साथ आया हूं... उससे त्यागपत्र दे दूंगा।'

'नहीं...नहीं।' केरन हड़बड़ा गई।

डेविड कुछ सोचता रहा, फिर मेरिया की ओर देखते हुए उसने केंरन से कहा- 'दोपहर को वह रहस्यमयी पत्र तुम्हारी जेब में कब पहुंचा था।'

'पता नहीं...होटल से निकलते हारई मुझे पुलिस की एक गाड़ी में लिफ्ट मिल गई थी। घटनास्थल पर भीड़ में से गुजरना पड़ा। वहीं जाने किसने किस समय जेब में डाल दिया।"

'अगर शीतलगढ़ में कोई किरलोस्कर का जानकार नहीं तो फिर यहां ले फोन किसने किया होगा।'

'मुझे नहीं मालुम।'

'क्या तुम्हारे हस्बैंड को तुम पर विश्वास नहीं।'

'ऐसा कैसे सोचा तुमने? हां कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें मैं उसे नहीं बताना चाहती।'

'तुम दोनों की शादी कब हुई थी?'

'पांच वर्ष पहले जब किरलोस्कर एलिजाबेथ टेलर का कीप था। जब टेलर को नया कीप मिल गया तो किरलोस्कर की छुट्टी हो गई।'

'और तुमने उसे लपक लिया?'

'हां हमारी फ्रैंडशिप वहीं हो गई थी।'

डेविड ने ठंडी सांस लेकर कहा- 'तो तुम भी पहले किसी और की कीप थीं?'

'हर औरत का कोई पिछला फैंड होता है।'

'तुम्हारा पहला हस्बैंड क्या करता था?'

"झक मारता था। वह इस प्रकार का वहशी था कि अंतिम दिनों में वह नामर्द हो गया था और मैं उससे घृणा करने

लगी थी।'

तभी एकाएक हॉल में किसी औरत की चीख पूंजी और फिर बहुत सारी जनाना चीखें एक साथ सुनाई दीं। वे लोग चौक पड़े। डेविड ने किरण को देखा जिसकी कमर में कोशिंग के कोबरा ने दम लपेट रखी थी और उसे खींचता हुआ राहदारी की ओर ले जा रहा था।

डेविड ने फुर्ती से रिवाल्वर निकालकर छलांग लगाई। केरन उसे रोकती ही रह गई। डेविड ने देरव लिया था कि कोशिग अपनी सीट पर नहीं था...डेविड के बाद सीक्रेट सर्विस में नया आया हुआ कर्नल विकास ही ऐसा व्यक्ति हो सकता था वो उधर लपका था।

जब डेविड राहदारी में पहुंचा तो कोबरा किरण को सींचकर एक रूम की ओर ले जा रहा था। जिसका दरवाजा उन दोनों के अंदर घुसते ही बंद ही गया था। अंदर से किरण की बिलबिलाती चीजें सुनाई दीं।

डेविड जोर से दरवाजे पर धक्के मारने लगा। विकास भी उसके पास पहुंच गया था। उसने पूछा-

'क्या वह कमरे में है?'

'हां, कोबरा उसे घसीटकर इसी कमरे में ले गया है।'

'यह रूम किसका है?'

'शायद शंघाई कीशिंग का होगा जो कोबरा का ट्रेनर है। इस बार डेविड और विकास ने एक साथ दरवाजे पर दाएं -बाएं कंधों की टक्कर मारी और दरवाजे की चिटकनी टूटकर दरवाजा फटाक से खुल गया।

सामने कोशिंग दिखाई दिया जिसने बेहोश किरण को कंधे पर डाल रखा था। उसने दोनों को देरवकर ठहाका लगाया। ऐसा लगा जैसे कोई अर्जगर फुंकार रहा हो। कोबरा सामने ही दुम के बल पर खड़ा था।

डेविड ने रिवाल्वर तानकर गुर्राकर कहा-

'कोशिंग छोड़ दो इसे वर्ना गोली मार दूंगा।'

'जरूर मारो।' कोशिंग वहिशयाना ढंग से मुस्कराया- 'मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा...तुम जिसे बचाना चाहते हो वह मर गई है।'

'कोशिंग दुम पागल हो गए हो।'

'हां...ऐसी लड़कियों को देखकर कीशिंग सचमुच पागल हो जाता है।'

'कोशिंग वह मासूम है।'

'कोई भी लड़की जीवन भर मासूम नहीं रहती...हर लड़की को एक न एक दिन अपने आपको किसी मर्द को सौंपना पड़ता है।'

'क्या तुम इस अपराध के बाद बचे रह सकते हो?'

कोशिंग ने फिर ठहाका लगाया और बोला-

'कोशिंग को आज सक कोई गिरफ्तार नहीं कर सका। लो० के० बॉय।' और फिर अनानक ही उसने खिड़की खोलकर नीचे छलांग लगा दी। साथ ही उसने कहा- 'कम आन कीबीं और देखते ही देखते कोबरा भी उड़कर बाहर निकल गया।

'कोशिंग!' डेविड चिल्लाकर खिड़की की ओर झपटा। बाहर गहरा अंधेरा था। डेविड जानता था कि यह क्षेत्र कितना गहरा और ऊबड़-खाबड़ है। ऊपर से गिरने के बाद इंसान का बचना तो संभव ही नहीं। फिर अचानक कर्नल विकास ने कहा-

'व्यर्थ है।'

डेविड एकाएक चौंककर मुड़ा। विकास ने कहा-

'वह जरूर पागल ही था। अपने साथ उस लड़की की जान भी ले ली होगी।'

डेविड ने कहा-

'बह असाधारण शक्ति का आदमी है, वह नहीं मरेगा।'

विकास ने खिड़की बंद कर दी। कमरे के बाहर लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी...लेकिन किसी में आगे बड़ेने का साहस नहीं था। फिर अचानक केरन की आवाज आई-

'डेविड, डेवी डियर तुम कहां हो?'

डेविड का इस संबोधन से लहू खौल उठा। केरन उसे शुरू से ही डेवी कहने लगी थी।

फिर अचानक ही मेरिया अंदर आ गई। जींस और चमड़े के लम्बे कोट में वह चहुत सुन्दर नजर आ रही थी। लेकिन डेविड को विश्वास था कि मेरिया उसको बदले हुए हुलिए में नहीं पहचान सकेगी।'

'क्या हुआ कर्नल?' उसने विकास से पूछा- 'कहा गया यह वहशी उस लड़की को लेकर?'

विकास ने खिड़की की ओर संकेत करके कहा-

'कंधे पर उठाकर उधर से नीचे कूद गया।'

'ओह नो।'

डेविड दरवांजे की ओर बढ़ आया था। वह अधिक समय तक मेरिया के सामने नहीं रुकना चाहता था। दरवाजे से बाहर निकलते ही केरन उसके ऊपर झपेटी- 'किसने कहा था तुमसे उस लड़की के लिए अपनी जान खतरे में डालने को। तुम मेरे बॉडीगार्ड हो उसके नहीं।'

डेविड केरन की उपेक्षा करके मैनेजर से चिन्तित स्वर में बोला-

'क्या हुआ मैनेजर?'

'कोबरा ने कोशिंग के इशारे पर यह हरकत की थी। वह मिस किरण को लेकर खिड़की से कूद गया है।'

'क्या...खिड़की से बाहर?' कई आवाजें पूंजी, 'तब तो दोनों मर गए होंगे। पिछवाड़े की पथरीली जमीन पर गिरकर कोई बच ही नहीं सकता।'

मैनेजर ने रुआंसी सी आवाज में डेविड से पूछा-

'आपने अपनी आंखों से देखा था?'

'हां...मैंने भी और इन साहब ने भी जिन्होंने दरवाजा तोड़ने में मेरॉ मदद की।'

इतने में विकास और मेरिया भी निकल आए थे। मैनेजर ने उनसे कहा- 'अब क्या करें?'

'पुलिस को टेलीफोन कर दीजिए। इस समय पुलिस भी खुनकी लाशें ढूंढने नहीं जा सकती।'

मेरिया ने कहा- 'वैसे भी शीतलगढ़ की पुलिस फोर्स दस सैमय हवाई दुर्घटना के केस में लगी हुई है।'

वे लोग वापस हॉल में लौट आए। सबके चेहरों से घबराहट और निराशा झलकने लगी थी। क्योंकि अब उन्हें स्वयं मौत अपने आसपास मंडराती दिखने लगी थी। मैनेजर सिर पकड़कर बैठ गया था।

कई लोगों ने डेविड और विकास को घेर ररवा था।

'आप लोगों ने संचमुच बड़े साहस से काम लिया है।'

'उस कोबरा के पीछे दौड़ना हर किसी के वश में नहीं।'

'बहुत निडर हैं आप दोनों।'

अचानक केरन ने डेविड को बांह से पकड़कर भीड़ में से रबीच लिया और बोली-

'यह लगातार अब भी तुम्हें ही चूर रही है।'

डेविड ने कहा- 'जानती हो, कोशिंग ने छलांगते समय कहा था कि दूसरे नम्बर पर तुम उसे पसंद हो।'

'नहीं!' केरन का चेहरा सफेद पड़ गया था।

'जाओ...अपनी मेज पर बैठो।'

'मैं अकेली नहीं रह सकती।'

'हॉल में कितने लोग हैं...तुम अकेली नहीं और फिर कोशिग अभी नए शिकर पर हाथ साफ कर रहा होगा, तुम्हारा नम्बर न जाने कब आए।'

'तुम मुझे और भी डरा रहे हो।' केरन कांपते स्वर में बोली।

'अब जाओ निकलो।' डेविड आंखें निकालकर बोला- 'वर्ना मैं तुम्हें उठाकर खिड़की से नींचे फेंक दूंगा।'

केरन लड़खड़ाती हुई मेज की ओर चली गई। इतने विकास और मेरिया डेविड के पास आकर खड़े हो गए। मेरिया ने कहा-

'शंघाई कोशिग नाम का बेह आदमी कई दिनों से इस होटल में ठहरा हुआ है।'

'मैंने भी यही सुना है।'

'तो क्या आप...?'

'मैं आज ही सुबह आया हूं।'

'और वह आपके साथ लेडी।'

'मेरी बॉस हैं...मिस केरन किरलोस्कर...अमरीकन डिऊप्लोमैट। मैं उनका बॉडी गार्ड बनाकर भेजा गया हूं...उनके साथ। मैंने अभी-अभी कमांडोज की ट्रेनिंग पूरी की है।'

'इसीलिए...आप में इतनी फुर्ती और साहस है।'

'मेरी बॉस बहुत घबराई हुई है।'

'क्या हम लोग थोड़ी देर साथ बैठ सकते हैं?'

'क्षमा चाहता हूं...इस समय नहीं। मैडम उस घटना के बारे में कुछ नहीं सुन सकेगी। उन्हें दौरा पड़ने का डर है।' वह जाने ही लगा था कि विकास ने कहा।

'सुनिए...आपने सुबह भी कोशिंग और उसके साथ कोबरा को देखा ही होगा।'

'जी हां...सभी देखते रहे हैं।'

'मगर आपके देरने का ढंग अलग है...क्योंकि आपको बिश्वास था कि कोशिंग छलांग लगगेने ले भर नहीं सकेगा और यह शब्द अनायास आपके, मुंह ले निकले थे। इसका अर्थ जो मेरी समझ में आता है, यह है कि आप उस अनोखे आदमी को काफी जानते हैं।'

डेविड ने कहा- 'जी, इस समय मैं इस पर कोई प्रकाश नहीं डाल सकता।'

अचानक लोग काउंटर की ओर देखने लगे जहां पुलिस का एक बड़ा ऑफीसर कुछ सिपाहियों के साथ आया था।

मेरिया ने कहा-'आज तो ये लोग काफी सतर्क और चौकस दिरवाई देते हैं।'

विकास ने कहा-

'शायद इसलिए कि शतिलगढ़ में इस हमय बहुत बड़े अफसर और सिविल एविएशन के मंत्री महोदय यहां डेरा डाले हैं।'

पुलिस अफसर ने डेविड और विकास के पास आकर पूछा--

'आप दोनों ने उस कोबरा का पीछा किया था?'

'जी हां।' विकास ने डेविड की ओर संकेत करके कहा, 'पहले आप दौड़े थे। मैंने इनका साथ दिया था।'

पुलिस अफसर ने डेविड से पूछा-

'आप?'

'देवेन्द्र सिंह।' डेविड ने झट कहा।

'प्रोफेशन?'

डेविड ने ऑफीसर को घूरकर देखा फिर केरन की ओर संकेत करके कहा-'वह लेडी केरन किरलोस्कर हैं अमरीकन कौंसिल के डिप्लोमेट...मैं उनका बॉडी गार्ड हूं.. में ट्रेंड कमाण्डो दूं एक्स आर्मी।'

ऑफिसर के तेवर ढीले पड़ गए। वह नम्र स्वर में बोला- 'क्षमा कीजिए...हम यह जानना चाहते हैं...क्या वह

कोबरा ट्रेंड था?'

डेविड ने उत्तर दिया-

'यह आपको होटल के स्टॉफ से पूछना चाहिए था। कोबरा और उसका मालिक मिस्टर कोशिग पिछले एक सप्ताह से यहीं रह रहे हैं। मैं तो आज ही आया हूं...हां मैंने आते ही ऐसे सतरनाक जानवर के होटल में रखे जाने पर आपत्ति प्रकट की थी। इसकी अनुमति होटल को नहीं देनी चाहिए थी।'

'आप ठीक कहते हैं...वैसे क्या आप उस लड़की को जानते थे जिसे कोबरा खींचकर ले गया था?'

'जी नहीं...बस केवल आज विमान दुर्घटना स्थल पर उससे जरा देर अचानक भेंट हुई थी। वह नेपाल की नागरिक है और हायर स्टडी के लिए भारत में आई है।'

'वह शीतलगढ़ किसलिए आई थी?'

'यह मैंने उससे नहीं पूछा।'

'कोई बात नहीं...थैंक्यू।'

पुलिस ऑफिसर मैनेजर की ओर बढ़ गया और डेविड केरन के मेज की ओर। उसने केरन से कहा- 'चलिए मैडम आपको आराम की जरूरत है...आपको अपने कमरे में चलना चाहिए।'

केरन बिना कोई शब्द कहे उठ खड़ी हुई।

3

किरण मांधर की बेहोशी टूटी तो उसकी नाक में कुछ अजीब सी चिरांध आई जैसे चर्बी जल रही हो...उसका जी मितलाने लगा था। उसके मस्तिष्क में बेहोशी के पहले समय की घटना उभर आई।

सामने ही उसे एक जलता हुआ अलाव दिखाई दिया।

लोहे के एक तिकोने खम्भे के ऊपर एक ऐसा सांप झटकों से हिल रहा था। जिसकी खाल जलने से यह चिरांध फैल रही थी। अलाव से थोड़े फासले पर वह कोबरा कुण्डली मारे बैठा था जो किरण को खींचकर कमरे तक ले गया था।

वह फन काहे एकटक तड़पते हुए सांप को देरव रहा था।

किरण की घिग्घी बंध गई लेकिन न वह अपने स्थान से हिल सकी न उसके गले से आवाज ही निकल सकी। बस उसकी आंखें फटी हुई थी और चेहरा पीला पड़ गया था।

यह एक पहाड़ी गुफा थी जहां एक् चट्टान पर रखा बिजली का बल्व जल रहा था जो बिना. तार के था। गुफा में दिन का-सा उबाला था। गुफा का एक ही मुंह था जो बाहर घुप्प अंधेरा होने से काला गोल बोर्ड-सा नजर आ रहा था।

कुछ देर बाद लटका हुआ सांप पूरी तरह धुन गया और कोबरा ने दुम के बल उठकर उसे रवम्भे से उतार लिया और पास रख लिया। फिर कोने में रखा बड़ा दूध का भरा प्याला उठाकर मजे से पीने लगा।

अचानक गुफा के मुंह पर दो हाथ दिखाई दिए। इस बार किरण की नजरें घूमी और उन हाथों को देखते ही वह पीछे जुड़कर गहरी सांसें लेने लगी। उसका दिल सीने में हथौड़े की सरह बज रहा था। लगता था अभी जान निकल जाएगी।

गुफा के मुंह म्रे निकले हाथ कोशिंग डी के थे जो अब भीतर आ गया था। काला लम्बा कोट पहने काली ही बंदर टोपी से झांकता हुआ उसका चपटा चेहरा कुछ अधिक ही सफेद नजर आ रहा था। आगे बढ़कर उसने एक नजर किरण पुर डाली जो बेहोश बनी सांस रोके पड़ी थी। फिर कोबरा की ओर बढ़ताहुआ बोला- 'हैलो कोबी।'

कोबरा ने प्याले में से फन उठाकर उसे देखो और फिर दूध पीने लगा। कोशिग ने मुने हुए सांप को ऐसा देरवा था, जैसे कोई बहुत कुक आदमी स्वादिष्ट जाने की ओर देखता है। उसने कहा-

'थैंक्यू कोबी। आज तुमने बहुत बढ़िया डिनर का प्रबंध कर दिया वैसे ऐसी चटीली पहाड़ियों में सांप कम ही दिखाई देते हैं। छिपकलियों और मेंढकों से प्रद की तृप्ति नहीं होती।'

फिर उसने गुफा के एक कोने में रखी एक बोंतल रूसी वोदका की उठाई और अपने दांतों झे डाट खोलकेर कई लम्बे-लम्बे घूंट भरे और फिर मुने हुए सांप का एक टुक्खा लेकर रवाने लगा।

किरण यह सब पलकों की दरारों में से देख रही थी। उसे अनायास उबकाइयां आने लगी थीं। उसने बड़ी कोशिश की कि झूठमूठ की बेहोशी का भ्रम बनाए ररवे लेकिन सफल न हो सकी और एक झटका खाया। उठकर बैठते ही वह जम्हाइयां लेने लगी थी। केशिंग उसकी ओर देखकर हंसने लगा और सांप का टुकड़ा चबाता हुआ बोला-

'मैं जानता था तुम बेहोशी का नाटक कर रही हो। एक बार तुम भी थोड़ा यह सांप का कबाब चख लो तो सार डर दूर हो जाएगा।'

किरण केवल होंठों पर जुबान फेरकर रह गई। कोशिग ने बड़े नम स्वर में कहा-

'तुमने अभी डिनर नहीं लिया है...तुम लोग डिनर से पहले जरूर पैग लेते हो...क्या यह वोदका चलेगी?'

कोशिंग के नम स्वर से किरण का डर थोड़ा घर्ट गेया था। बड़ी मुशिकल से उसने कांपते स्वर में कहा-

'म...म...मुझे यहां क्यों लाए हो?'

कीशिंग फिर हंसकर बोला- 'तुम जैसी कोमल सुन्दर लड़की को किस काम के लिए उठाकर कोई ला सकता है?'

किरण ने झुरझुरी सी ली और गिड़गिड़ाई- 'फ...फ...फार...ग...ग...गॉड सेक मुझे छ...छ...छोंड दो।'

'घबराओं मत...तुम्हारी जैसी सुन्दर लड़की को तब तक कोशिग नहीं छोड़ सकता। जब तक उसका जी न भर जाए। कम से कम पांच बरस तक तो मैं रखूंगा ही।'

'नहीं।' किरण कांप उठी।

'तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा...यह गुफा हमारा स्थाई ठिकाना नहीं। शीध्र ही मैं तुम्हें ऐसे स्थान पर ले जाऊंगा जो तुम्हारे सम्मान योग्य होगा।'

'मेरे गुम होने की खबर सुनकर मेरे माता-पिता पागल हो जाएंगे...मैं उनकी इकलौती बेटी हूं।'

'मालुम है।' कोशिंग मुस्करा पड़ा, तुम्हारा नाम किरण मांधर नहीं किरण थापा है। तुम्हारे दलाल पिता का नाम महेन्द्र थापर है। श्लोक मांधर तुम्हारे पिता का बॉस है?'

किरण के होंठ हिलते रह गए और चेहरे की रंगत फीकी पड़ गई।

'क्या मैं गलत कह रहा हूं?' कोशिंग ने मुस्कराकर कहा-

'म...म...मैं...।'

'घबराओ मत...यह भेद कोशिंग के सीने ही में दबा रहेगा...तुम्हें चौदह वर्ष की आयु ही से श्लोक मांधर ने जासूसी की ट्रेनिंग दी थी और यहां तुम केवल स्टूडेंट के नाते नहीं आई। क्या मैं गलत कह रहा हूं?'

'न...न...नहीं।'

'लेकिन तुम्हारा देश सो निरपक्ष देश है। तुम, मतलब श्लोक मांधर किसके लिएजासूसी करा रहा है तुमसे?'

'म...म...मुझे नहीं मालुम।'

'कुछ भी हो...तुम्हारे देश के हमारे देश से बहुत पराने संबंध हैं। हमारे बहुत सारे रीति-रिवाज मिलते-जलते हैं। तुम्हारे देश का सरकारी धर्म भी वही है। हमारे यहां भी बुद्ध को मानते हैं।'

'झूठ है, तुम्हारा देश किसी धर्म को नहीं मानता।'

'देश न मानता हो...मगर मैं तो मानता हूं।'

'यह भी सच नहीं, बुद्ध धर्म अहिंसा की शिक्षा देता है मगर तुम अहिंसावादी नहीं लगते।'

कोशिंग ने फिर जोरदार ठहाका लगाया और बोला- 'लड़की, आजकल संसार के सबसे बड़े अहिंसावादी ही सबसे बड़े हिंसक सिद्ध होंगे...पहले धर्म-प्रचार इंसान का प्यार से मन जीत कर होता था। अब ताकतवर हिंसा और धौंस से धर्म प्रचार करता है।' क्षण भर रुककर उसने फिर लम्बा घूंट लिया और बोला- 'संसार का हर धर्म आदमी ही कां बनाया हुआ है और समय अनुसार आदमी ही उसमें थोड़ा बहुत परिवर्तन करता रहता है।'

किरण चुप रही...कोशिंग ने फिर कहा-

'शीतलगढ़ में तुम क्या करने आई थी?'

'घूमने।'

कोशिंग मुस्कराकर बोला-

'तुम्हारा यह उत्तर देवेन्द्र सिंह को संतुष्ट कर सकता है...कोशिंग को नहीं...दिसम्बर की सर्दियों में केवल घूमने के

लिए यहां लोग नहीं आते...।'

किरण कुछ न बोली। कोशिंग ने फिर जोर देकर पूछा- 'तुम किसी चीज की तलाश में यहां आई थीं?'

किरण ने कहा- 'अब तुम मेरी असलियत जान ही चुके हो तो तुमने कैसे समझ लिया कि मैं कोई ऐसा भेद बता दूंगी जो मेरे देश के हित के विरुद्ध हो...मैंने भेद बनाए रखने की शपथ ले ररवी है जिसे मरते दम तक नहीं तोड़ सकती।'

'तुम्हारी इच्छा।' केशिंग ने लापरवाही से कहा- 'मैंने सोचा था कि हम दोनों के मिल-जुलकर काम करने से दोनों का लाभ होगा...खैर...अपनी शपथ तो तुम्हें तोड़नी ही पड़ेगी।'

'यह असंभव है।'

'समय असंभव को संभव बना देता है। साल छः महीने तुम मेरे साथ रहोगी तो स्वयं ही मान जाओमी।'

'कदापि नहीं।' किरण झटके सें खड़ी हो गई... 'मैं तुम्हारे साथ घंटे भी नहीं रह सकती।' फिर वह गुफा के मुंह की ओर झपटी। केशिंग ने खड़े होकर कोबरा को पुकारा।

'कोबी।'

इससे पहले कि किरण गुफा के मुंह तक पहुंचती, कोबरा जैसे हवा में उड़कर बीच में आकर किरण की दोनों ढांगों के साथ लिपट गया।

किरण चीख मारकर औंधी गिर पड़ी मगर झट फुर्ती से सीधी हो गई।

कोबरा ने उसकी दोनों टांगों को कसकर जकड़ रखा था और उसके सीने पर सवार होकर बार-बार फन काढ़कर जुबान निकालता था...किरण जोर से चीखने लगी थी-

'बचाओ...बचाओ...अगवग्न के लिए बचाओ।'

कोशिग ने कोबरा को हट जाने का आदेश दिया।

'इसे छोड़ दो कोबी।'

कोबरा किरण से अलग हो गया। किरण की कमर और टांगें फोड़े की तरह दुःख रही थीं और वह भय से कांप रही थी।

'पागल लड़की।' कोशिंग ने कहा- 'तुम जानती हों जिस गुफा के मुँह से तुम बहिर जा रही थीं, वह कितनी ऊंचाई पर है।' उसने फिर घूर भरकर कहा, लगभग सौ फुट की ऊंचाई पर, नीचे गिरकर' तुम्हारी हड्डियों के शायद टुकड़े भी ढूंढने से न मिलते। यह सुन्दर शरीर व्यर्थ जाता। कोशिंग को कम से कम एक हफ्ते तुक इसका शोक मनाना पड़ता।'

किरण कुछ न बोली। कोशिग ने एक ओर संकेत कुरके कहा-

'उधर एक बिस्तर है। उसे बिछा लो। उसमें बहुत गर्म फारेन गदेला है जो बर्फ में लेटने से भी गर्मी पहुंचाता है। हम दोनों बड़े आराम से उसमें मीठी नींद ले सकते हैं।'

'नर्हीं।'

'ओहो...मैं भूल गया...तुम भूखी हो...एक पैग वोदका का ले लो। यह भुना हुआ सांप सचमुच दुनिया का सबसे स्वादिष्ट कंबाब है...शक्ति और गरमी देता है...तम इसके गुण नहीं जानतीं...एक पीस खाकर तुम नंगे बदन बर्फ में सो सकती हो और फिर एक जवान पुरुष का मिलन तुम्हारी सारी तड़प और बेचैनीं समाप्त कर देगा।'

'नहीं, बिल्कुल नहीं।'

'तुम्हारी इच्छा उधर कुछ स्लाइस, बटर, स्नैक्स और सूखे मेवे भी मौजुद हैं। एक पैरा वोदका का स्कॉच केचार पैगों के बराबर है। तुम स्वयं अपने, हिसाब से ले लो।'

'म...म...मुझे भूख-प्यास कुछ नहीं।'

'कब तक भूरव हड़ताल करोगी?'

'म...म...मुझे।'

'तब ठीक है...चलो कपड़े उतारो।'

'नहीं।' किरण कांपकर पीछे हट गई।

'अच्छा...पहले मैं कपड़े उतारता हूं...शायद तुम्हारे भीतर दबी सैक्स जाग उठे ...आरिवर तुम हो तो औरत ही।'

फिर कोशिंग ने अपने शरीर के सारे कपड़े उतार फेंके। दुबले-पतले शरीर वाले कोशिग की पीली त्वचा हड्डियों से चिपटी हुई थी। शरीर पर कई जगह काले-काले दाग थे जिनसे लगता था जैसे कोचरा जमीन पर खड़ा हो।

उसे देरवकर किरण के मस्तिष्क में एक तीव्र घृणा मी उत्पन्न हुई...बड़ा अप्रिय भाव, डरावना, भयानक।

कोशिग ने मुस्कराकर कहा-

'लड़की! मेरा शरीर मत देखो...एक बार मुझसे मिलाप करके देखो, जीवन भर के लिए स्वयं मेरी रानी या दासी बन जाओगी।'

किरण कुछ नहीं बोल सकी। केवल उसके होंठ कांपते रह गए। कोशिग हंस पड़ा और बोला- 'मैंने अभी तक किसी लड़की के साथ ज्यादती नहीं की। हर लड़की स्वयं ही मेरे लिए नंगी हो गई है।'

फिर उसने कोबरा की ओर देरवा और बोला- 'कम ऑन कोबी...हैल्प हर।'

दूसरे ही क्षण कोबरा रेंगता हुआ किरण की ओर बढ़ा और किरण हड़बड़ाकर पीछे हट- गई। फिर कांपती आवाज में बोली-

'रोको...रोको इसे।'

'कपड़े उतारने शुरू करो।' कोशिंग ने कहा, 'यह स्वयं रुक जाएगा...वर्ना यह कोबल स्वयं तुम्हारा सतीत्व भंग कर देगा।'

'नहीं...।' किरण ने अनायास भरपूर डर से दबे स्वर में चीखकर कहा- 'नहीं मैं कपड़े उतार रही हूं। इसे पीछे हटाओ।'

फिर उसने जल्दी-जल्दी कपड़े उतारने शुरू पर दिए। कोबरा रुका हुआ उसके सामने ही फन काहे बैठा रहा। जब किरण के शरीर से आखिरी कपडे भी उतर गया तब बह कपड़ों के ऊपर चढ़कर बैठ गया।

किरण का दूध और मैदे में गुणा संदल की मिलावट से बनाया गया सुन्दर चमकीला शरर देरवकर कोशिंग की राल टपकने लगी। उसने होंठों पर जुबान फेरी और बौला-

'चलो, अब बिस्तर भी स्वयं ही बिछाओ।'

किरण जैसे मशीन की तरह बिस्तर बिछाने लगी। वह थर- थर कांप रही थी...लगता था जादूग्रस्त हो गई है...उसेकी कल्पना में महात्मा बुद्ध की छवि थी और वह साथ ही कुछ जाप करती हुई गिड़गिड़ा रही थी कि कहीं भगवान की ओर से कोई उसकी सहायता को आ जाए। द्रौपदी की तरह उसकी लाज रखने। भीतर ही भीतर वह बेबसी से रोई पड़ रही थी।

'चलो...बस...अब लेट जाओ।' कोशिंग ने अपने होंठों पर जुबान फेरते हुए कहा।

किरण के पास ऐसा भी कोई रास्ता नहीं था कि पहले की तरह अचानक गुफा के मुंह की ओर छलांग लगाने का साहस करती...कोबरा बिल्कुल बीच ही में उसके कपड़ों पर कुण्डली मारे बैठा था।

किरण ने हाथ जोड़कर सच्ची आत्मा से प्रार्थना की- 'हे तथागत! मेरी रक्षा करो!' और बहु बिस्तर घर औरवे बंद करके लेट गई।'

फिर कोशिंग बिस्तर पर कदम रखने ही वाला था कि वह अचानक कोबरा की फुंकार सुनकर चौंक पड़ा।

उसने मुड़कर कोबरा की ओर देखा जिसने गुफा के मुंह की ओर मुड़कर फुंकारा था। कोशिंग ने बिजली की-सी

फुर्ती से झपट्टा मारकर अपना खास रिवाल्वर निकाल लिया और...।

अचानक ही उसे गुफा के मुंह पर दो हाथ नजर आए। कोशिन ने उन हाथों पर फायर कर दिया।

उसके-रिवाल्वर से गोलियों के स्थान पर नीले रंग की, आग की लपटें निकलीं चो गुफा के मुंह के कोनों पर लगीं और गुफा के काले पत्थर चटख गए। मगर...वह दो हाथ जिसके भी थे उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ-क्योंकि उन हाथों वाला ऊसर आ गया। एक् सपाट चेहरे बाला अधेड़ आदमी जिसके सिर पर काली हैट थी। शरीर पर काला लिबास और हाथों में भी काले दस्ताने थे।

कोशिंग ने उसके चेहरे पर फायर किया मगर आने वाले अजनबी पर कोई प्रभाव नहीं हुआ।

कोशिग निरंतर फायर किए जा रहा था मगर उसकी लपटें अजनबी के चेहरे तक पहुंचने से पहले ही बुझ जाती थी।

किरण थर-थर कांपती रही। वह विकल वस्त्रहीन खड़ी हुई उधर ही देख रही थी। अब अजनबी पूरा गुफा में अंदर आ चुका था। वह कोडिंग से भी लम्बा था। इधर कोशिंग के चेहरे पर एक रंग आया एक गया और वह एकांएक चिल्लाया-'कोबी...उधर देखो।'

कोबरा ने दुम के बल खडे होकर अजनबी पर छलांग लगाई और उसके शरीर से लिपट गया लेक्ति अजनबी ज्यों का त्यों खड़ा रहा। फिर कोशिग ने दूसरे ही क्षण एक आश्च्र्जनक दृभ्य देखा।' कोबरा ने फती से अपने बल खोले और गुफा से बाहर छलांग लगा दी।

'कोबी!' केशिंग चिल्लाया।

लेकिन कोबरा गायब था और अजनबी कमर पर हाथ रखे खड़ा हुआ था। उसने कोशिग ले कहा-'अब वह नहीं आएगा।'

'तुम कौन हो?' कोशिंग ने आश्चर्य से उसे देरवते हुए पूछा।

'डैडमैन।'

'डैडमैन...क्या मतलब?'

आने वाले ने अपने सिर पर रखा हैट ऊपर उठाया और उसके चेहरे का मास्क भी उतर गया जिसके नीचे हड्डियों के ढांचे का चेहरा नजर आने लगा। लड़की घिघियाकर गिर पड़ी। दूसरी ओर केशिंग के चेहरे पर कई रंग जाए और गए लेकिन उसके ढंग से ऐसा नहीं लगा कि वह भयभीत हो गया हो।'

डैडमैन ने कहा-

'डैडमैन का मतलब समझ गए?'

'तुम कोई विज्ञान का चमत्कार हो?' केशिंग ने पूछा।

'यह तुम्हारा अपना अनुमान है।'

'या किसी वैज्ञानिक का शरीर हो जो किसी करूण जल गया हो, दुम हाईयों का ढांचा ही रह गए हो।'

'यह सोचकर भी तुम अपना दिल खुश कर सकते हो।'

डैडमैन ने फिर अपना मॉस्क लगाकर चेहरे पर फिट कर लिया। कोशिग ने पूछा- 'मुझसे क्या चाहतें हो?'

'इस मासूम लड़की की आजादी।'

'यह कोशिंग का शिकार है और कोशिग अपने शिकार को छोड़ देना अपनी हार समझता है।'

‘तो फिर यह हार तुम्हें स्वीकार करनी ही पड़ेगी।'

‘शायद तुम कोशिंग को नहीं जानते।'

‘जानता हूं मेरे सामने ही खड़ा है।'

‘तुम्हें मेरी शक्ति का अनुमान नहीं।'

‘है-एक कोमल छोटी-सी लड़की पर अपनी शक्ति की परख करने वाला कितना बलवान हो सकता है इसका ज्ञान है मुझे।'

‘चलो...अब तुम भी देरख लो। और अचानक कोशिग ने बैडमैन पर ऐसे छलांग लगाई जैसे वह एक ही लात में गुफा से बाहर उछाल देगा। मगर उसे छटी का दूध यदि आ गया। उसे ऐसा लगा जैसे उसने भारी इस्पात के खम्बे पर लात मारी हो? और वह स्वयं इतनी जोर से फर्श पर गिरा कि शरीर की हड़िया कड़कड़ा गई। औरबों में तारे ले नाच गएक्योंकि वह नंगा भी था।'

डैडमैन अपने स्थान पर स्थिर खड़ा रहा। उसने बड़े शात स्वर में पूछा-

‘परख ली अपनी शक्ति क्या?'

‘नहीं।' कोशिंग ने कहा, ‘क्या मैं अपने कपड़े पहन सकता हूं?'

‘पहनने ही चाहिए।'

कीशिंग ने आराम से कपड़े पहनते हुए कहा- ‘मुझे विश्वास है तुम कोई विज्ञान का चमत्कार हो।'

‘मैं तुम्हारे विश्वास को सुठताऊंगा नहीं।'

‘क्या हम लोग दोस्त नहीं बन सकते?'

‘तुम्हारी दोस्ती के लिए मैं सब-कुछ कूरने को तैयार हूं।’

इस बीच कोशिग कपड़े पहन चुका था। अब उसका हाथ एक् डिब्बे की ओर गया जिसमें लाल रंग की एक गेंद रखी थी जिसे अचानक उठाकर उसे एक कुशल बॉलर के सामने हैं-टर्मन- के सीने पर दे मारा।

मगर...इससे पहले कि वह गेंद बैडमैन के सीने पर लगती, उसे बीच ही में डैडमैन ने लपक लिया और कोशिग के चेहरे पर एक परछाई-सी आकर चली गई।

डैडमैन ने गेंद को धीरे से उछालते हुए कहा-

'अगर मैं यह गेंद तुम्हारे सीने पर वापस मारू?’

‘नहीं।' कोशिग हड़बड़ाकर बोला- ‘ऐसी भूल मत करना।'

‘तुम भी तो यह भूल कर रहे थे।'

‘मैंने तुम्हारे बारे में गलत अनुमान लगाया था।'

'अब ज्ञान हो गया?'

‘हां। तुम पर विजय पाना असंभव है।'

‘तो फिर तुम इस लड़की को स्वयं अपनी इच्छा से आजाद कर रहे हो

भेरी ओर से यह आजाद है। ' कोशिंग ने बैठते हुए कहा- 'अगर तुम कोई विज्ञान का चमत्कार नहीं हो तो एक पैग मेरे

साथ पिओ।'

'धन्यवाद! मैं धोखेबाजों का निमंत्रण स्वीकार नहीं करता।'

'मगर मेंने तुम्हारे साथ कोई धोखा नहीं किया।'

'तुम अब तीसरी बार मुझे धोखा देने की सोच रहे हो।'

'तुम्हारा भ्रम है?' कीशिंग ने अपना गिलास भरकर कहा—'तुम्हारे लिए डालूं?'

'पहले तुम पियो।'

कोशिंण हंसता हुआ खड़ा हो गया- प्रम समम रहे हो मैं तुष्ठें जहर पिला रहा हूं।'

'तुमं पीकर दिखाओ।'

'लो पीकर दिखाता हूं।' फिर गिलास होंठों की ओर ले जाते हुएं एकाएक कोशिंग ने गिलास डैडमैन कीं ओर उछाल दिया। डैडमैन ज्यों-का-त्यों खड़ा रहा। हां उसका शरीर और उसका नकली ढांचा मोम की तरह पिघल गया। केवल गर्दन के ऊपर का भाग और शरीर और हाथों पर आस्तीन बाकी रह गए।

अब कोशिंग के सामने खदेड़े एक इंसानी शरीर का अजीब-सा ढांचा झांक रहा था जिसके हाथ में वही गेंद थी।

कोशिंग के माथे पर पसीना आ गया।

डैडमैन के मुंह से हंसी के साय आवाज़ निकली- 'तुम तीसरी बार मुझसे दगा कर रहे थे।'

'म...म...मुझसे भूल हो गई।'

'मुझे मालूम है जब तक तुम जिन्दा रहोगे यह भूलें दोहराते ही रहोगे। शायद तुम सचमुच मुझे कोई वैज्ञानिक यंत्र समम रहे 'हो जिसे तुम किसी ढंग ले निक्रिय करना चाहते हो।'

फिर उसने गेंद गुफा के बाहर फेंके दी। काफी दूर गहराई में धमाके के साथ एक नीली रोशनी का झमाका हुआ। जब से बाहर दिन सा फैल गया। बैडमैन ने केशिंग से कहा-

'तो इस बम से तुम मुझे राख करने वाले थे?'

'न...न...नहीं।'

'क्या तुम डर र्भी सकते हो?'

'विल्कुल नहीं...।' और अचानक ही कोशिंग ने इतनी ऊंची उछाल भरी जैसे वह बैडमैन के ऊपर से गुफा से बाहर जाना चाहता हो।

मगर डैडमैन ने उसे एक ही हाथ से रोक लिया। कोशिग हड़बड़ाकर अपने आपको आने का प्रवास करने लगा।

' डैडमैन ने कय- 'जानता हूं...तुम्हारा शरीर रबड़ के समान लचकीला है...तुम सैकड़ों फुट की ऊंचाई से कूटकर भी बच सकते हगेपत्थरों से टकरा कर भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ता-मगर।' डैडमैन ने उसे अमने दोनों हाथों से ऊपर उठा लिया और बोला-

'अब तुम बेचने की कोशिश करो।'

'ठहरो।' कोशिंग घबराकर बोला।

'डैडमैन ठहरना नहीं जानता।' और उसने कोशिंग को इस तरह फेंका जैसे तोप के मुंह से गोला निकलता है साथ ही उसकी भयानक चीरब वातावरण में लहराती चली गई।

डैमैन ने किरण की ओर देरवा जो बेहोश पड़ी थी। उसने धरि-से रजाई उठाकर उस पर डोल दी और साथ ही उसके बिस्तर पर रखे कपड़े भी रख दिए और तीन बार आंखें बंद करके 'हरिओम' का जाप किया फिर आंखें खोल दी।

किरण बिस्तर समेत आबादी से निकट ही एक चट्टान की आड़ में रजाई ओढ़े लेटी थी। स्वयं डैडमैन के शरीर पर वही चमड़ेका लम्बा कोटा सूट थे और सिर पर वही काला हैट, पांव में एंकल शूजहाथों पर का। दस्ताने...अब वह शक्ल सूरत से तीस- बत्तीस- वर्ष का नौजवान नजर आ रहा था।

अचानक उसने बाई ओर कुछ रोशनियां घूमती देखी जो गाड़ियों की थी। किरण ने कुछ सोचा और जोर-जोर से चीखना शुरू कर दिया-

'बचाओ...बचाओ...भगवान के लिए मुझे बचाओ।'

दूसरे ही क्षण रोशनियों का घूमना तेज हो गया और पथरीली जमीन पर दौड़ते हुए जूतों की आवाजें गूंजी। डैडमैन जल्दी से किरण से कुछ फासले पर चट्टान के पास इस तरह गिर पड़ा जैसे उसका सिर पत्थर से टकराया हो और वह बेहोश हो गया हो।'

कुछ देर बाद आवाजें और निकट हो गई।

'इधर ही से चीजें सुनाई दी थी। मुसीबत में है, कहीं पास ही होगी-मगर इसे कौन लाया है यहां?'

आवाजें पास आती गई फिर एक तेज रोशनी हो गई। अब खाकी वर्दियां साफ नजर आ रही थीं। यह पुलिस की छोटी-सी टुकड़ी थी जो किरण मांधर को खोजती हुई आ निकली थी। रोशनी किरण के बिस्तर के ऊपर पड़ी कहा गया।'

'अरे वह कौन सो रहा है। कोई लड़की है मगर यहां वीराने में बिस्तर का क्या काम?' वे लोग बिस्तर के पास आ गए।

'अरे इसके कपड़े तो ऊपर पड़े हैं...जरूर यही मदद के लिए चिल्लाई होगी...मगर इसे यहां कौन लाया?'

'हो सकता है यही राक व्यू से अगवा की गई हो। शक्ल से तो वही लगती है...कपड़े भी वही हैं जो रिपोर्ट में हैं।'

'तब तो वह बदमाश भी यहीं कहीं होगा। वह लड़की के साथ ज्यादती कर रहा होगा। जल्दी तलाश करो उसे इसीलिए लड़की ने मदद के लिए पुकारा होगा।'

सक व्यू की रोशनियां इधर-उधर भटकने लगीं फिर अचानक राशेनी का दायरा डैडमैन पर पड़ा और कोई चिल्लाया-

'यह रहा बदमाश।'

कई लोग दौड़कर आ गए- 'ओह यह तो चीनी नहीं।' कोई भी हो...हिरासत में ले तो।'

'मगर वह लड़की नंगी है...उसका क्या किया जाए, कोई लेडी कांस्टेबिल भी नहीं जो इसे कपड़े पहनाए।'

'क्यों न यूं ही बिस्तर मुंऊए लपेटकर गांव ले चलें। पुलिस स्टेशन पर कई लेडी कांस्टेबिल होंगी।'

फिर कुछ पुलिस वालों ने किरण को बिस्तर समेत उठा लिया और डैडमैन को जगाने का प्रयत्न करने लगे।

4

डेविड केरन किरलोस्कर को होटल के उस रूम में ले आया था जिसमें वबह ठहरी हुई थी और उसने डेविड को बाहर अपने रूम में नहीं जाने दिया इसलिए कि वह सचमुच बहुत भयभीत नजर आ रही थी और डेविड हॉल से इसलिए हटा था कि वह मेरिया और कर्नल विकास के सामने अधिक देर ठहरना नहीं चाहता था क्योंकि वहां उनकी चुभती नजरों से उसें अनुभव हो रहा थर कि वह उसको पहचानने का प्रयत्न कर रहे हैं। फिर भी वह चाहता था कि वह कोशिग और किरण के बारे में किसी प्रकार जल्दी से जान ले कि उन दोनों को खिड़कियां से पिछवाड़े की चटियल भूमि में अंधेरे में गिरने से क्या अंत हुआ होगा।

किरण के प्रति उसके दिल में सहानुभूति उत्पन्न हो गई थी। उसे बड़ा दुःखे था कि कोशिंग जैसा जानवर उसके सामने उसको उठाकर ले गया था। अब तक इन्हीं विचारों में वह दारू की दूसरी बोतल भी खाली कर चुका था।

उधर केरन बिस्तर, में सिर छिपाये ऐसी बैठी थी जैसे वंह सारी रात इसी मुद्रा में जागती रहेगी। उसकी साइड टेबल पर व्हिस्की की बोतल थी जिससे थोड़ी-थोड़ी देर बाद घूंट लेकर डेविड को देखने लगती। डेविड का अपना कमरा उसके कमरे के साथ ही था और उसका दरवाजा खुला हुआ था।

डेविड ने नई बोतल से ईट जेकर केरन को देखते हुए पूछा--

'आखिर तुम कब तक यूं ही बैठी रहोगी?'

'सारी उम्र।'

'देखो सो जाओ...इस समय होटल के चप्पे में पुलिस है...तुम्हें कोई खतरा नहीं।'

'फिर भी मझे अकेले में डर लगता है।'

'मैं कुछ देर के लिए बाहर जाकर देखना चाहता हूं कि हस समय हॉल में कोई है भी या नहीं...चाहती हौ तो दुम अई चलो।'

'नहीं...मुझे बाहर निकलने का साहस नहीं हो पा रहा।'

'तुम्हारे पास रिवाल्वर तो है ना?' डेविड ने पूछा।

'हां...माऊजर है।'

'तो फिर मुझे गोली मार दो।'

'डेवी।'

'मैडम! अगर तुम मुझे इस प्रकार सम्बोधित करोगी तो मैं अपना नाम बदल डालूंगा?''

'तुम मुझसे खिचे-खिचे क्यों रहते हो?'

'अरे बाबा, क्या मैं यहां कमरे में घुसकर बैठने और अववाली करने हीत्तों आया डू या कोई और काम भईररमेरे जिम्मे है।'

'हां...मेरे हस्बैंड की तलाश।

'क्या मैं वह अपने कमरे में बैठकर कर सकता हूं?'

'मैं जानती हूं तुम इसलिए बाहर निकलना चाहते हो क्योंकि तुम्हें वह कुतिया अच्छी लगती हैं।'

'माइंड युअर लैंग्वेज...अकारण किसी का अपमान मत करो।'

अचानक ही किसी ने बाहर दरवाजा पीट डाला और केरन घबराकर खड़ी हो गई- 'वह आ गया।'

डेविड ने उसे घूरकर दरवाजे के पास आकर चीखकर पूछा-

'कौन है?'

'पुलिस।'

डेविड ने दरवाजा खोल दिया। बाहर एक इंस्पेक्टर और चार कांस्टेबिलों को देखकर गुस्से से बोला- 'तुम दरवाजा खुलवाने के लिए शिष्टता से खटखटा नहीं सकते?'

'मैं पूछता हूं तुम्हारे साथ कौन है?' इंस्पेक्टर ने डेविड का डीलडौल और तेवर देरवकर नम्र होते हुए पूछा।

'एक सुन्दर औरत।'

'तुम दोनों को नीचे चलना पड़ेगा। एक गंभीर घटना प्रट गई है। सारे ग्राहक हॉल में मौजूद हैं। छानबीन और अपनी पहचान के लिए।'

इतने में केरन कूदकर सिर से नीचे उतर आई। डेविड ने इंस्पेक्टर से कहा- 'मैडम अमरीकन कौंसिल में डिप्लोमेट हैं और मैं इनका बॉडी गार्ड हूं, कुछ और जानना चाहते हैं?'

'जी नहीं...दैटस ऑल...थैंक्यू।' कहकर इंस्पेक्टर कांस्टेबिलों के साथ लौट गया। केरन ने फिर बिस्तर पर बैठकर बोतल से घूंट लिया। तभी टेलीफोन की घंटी बजी...केरन ने भयभीत स्वर से कहा-

'जरूर उसी का है।'

डेविड ने रिसीवर उठाकर कहा- 'यस!'

'हैलो कमाण्डो!' डेविड ने मेरिया की आवाज पहचान ली और हल्की सांस लेकर कहा- 'कहिए!'

'क्या आपे थोड़े समय के लिए नीचे आएंगे-कुछ बहुत इम्पोर्टेंट डिस्कस करना है।'

'कोशिश करूंगा।'

'क्या मतलब?'

'इसका कोई उत्तर नहीं दे सकता।'

हल्की आवाज आई- 'कम से कम दो घंटे मैं प्रतीक्षा करूंगी।' फिर उसने डिस्कनेक्ट कर दिया।

डेविड केरन की ओर मुड़ा तो उसने पूछा- 'किसका फोन था?'

डेविड ने कहा- 'उन्हीं भली श्रीमती का।'

'क्या कह रही थीं?'

'पुरानी बातें ताजा करना चाहती हैं।'

केरन का दिमाग जैसे भक्क से उड़ गया। उसने बोतल उठाई और एक ही सांस में आधी खाली कर दी फिर बिस्तर से छलांग लगाकर उठती हुई बोली-'मैं उसे आज जिन्दा ही छोड़ेगी।'

डेविड बौखला गया फिर उसने उसे बांह से पकड़ और जोर से बिस्तर पर पटक दिया।

'बास्टर्ड!' केरन चिल्लाई—'क्या कर रहा है?'

'तुम्हारा इलाज...बहुत गर्मी है ना तुममें।'

फिर उरसने बोतल खाली करके फेंक दी और केरन पर टूट पड़ा। चंदू ही क्षण में उसके शरीरपर एक भी कपड़ा नहीं था। केरन स्वयं भी डेविड के कपड़े नोच रही थी। फिर वह इस तरह डेविड से लिपट गई जैसे जीवन भर अलग नहीं होमी। डेविड ने पत्रसे राष्ट्र-रगड़कर अनायास कराहने पर मजबूर कर दिया।

लगभग आधे घटे बाद...अचानक केरन किरलोस्कर ने अपनै हाथ-पांव ढीले छोड़ दिए। ऐसा लगा जैसे उसके शरीर में जान न रही हो। डेविड अलग हट गया और केरन रखें बंद करके चित्त लेटी गहरी-गहरी सांसें खेती रही। उसने रजाई भी ऊपर नहीं खींची थी।

डेविड ने अब अराम से अपने कपड़े पहने और रजाई रबींचकर केरन, को पांव से गर्दन तक डेक दिया। वह बेसुध सो रही थी। फिर डेविड ने बत्ती बुझाई और कमरें की चाबी जेब में डालकर कमरे से निकल आया। फिर दरवाजा लॉक करके आराम से नीचे हल में चला आया।

□□

यद्यपि काफी लोग अपने कमरा में जा चुके थे फिर भी हॉल में खासी भीड़ थी। कुछ लोग किरण मांधर के बारे में

धानने के लिए बेचैन थे...एक ओर सेज पर विकास भी बैठा थाडेविड जान-बूझकर उन लोगों की ओर नहीं गया। वैसे जबसे उसने रूम में टेलीफोन किया था और बीच में फोन पर हंसी थी, उसे सदेह हो गया था कि वह डेविड ही था।

डेविड सीधा काउंटर पर आ गया और वहां खड़े असिस्टेंट मैनेजर से उसने पूछा- 'कोई खास खबर?'

'अभी तो नहीं।' असिस्टेंट मैनेजर ने कहा- 'बैसे कई पुलिस पार्टियां उसकी तलाश में गई हुई हैं...आपका क्या विचार है? क्या इतनी ऊंचाई से छलांग लगाने के बाद उस पथरीली धरती पर जिन्दा बचने की कोई संभावना है?'

डेविड ने पूछा-

'कोशिंग, एक सप्ताह से यहीं ठहरा हुआ था ना?'

'जी हां।'

'इस बीच अगर उसने ऐसी कोई पागलपन की हरकत नहीं की तो फिर कोई कैसे कह सकता है कि अब एकाएक वह ऐसी हरकत क्यों कर बैठा?'

'आप कहना चाहते हैं कि वह बच गया होगा।'

'जी, लगता है उसे मालुम था कि लड़की समेत बचा जा सकता है।'

'मतलब, चह कोई खतरनाक अपराधी है शायद औरतों का शिकारी।'

इससे पहले कि डेविड कौई उत्तर देता एक बेटर ने उसके फस आकर शिष्टता से झुककर कहा-गर वह मेम साहब आपको सलाम बोलती हैं।' उसने मेरिया की ओर संकेत करके कहा।

डेविड ने उधर देखा तो मेरिया के होंठों पर शुस्कराहट फैल गई। इस समय विकास उसके साथ नहीं था।

डेविड हल्की सांस लेकर मुड़ा और धीरे से चलता हुआ मेरिया की मेज कुए पास पहुंचकर शिष्टता से बोला-

'आज्ञा है?'

'अगर तुम इतने शिष्ट बन जाओ तो कोई भी शरीफ लड़की तुमसे शादी के लिए सहमत हो जाएगी।'

'और तुम?'

'तुम जानते हो कि हमारे विभाग वालों को सर्विस के दौरान शादी न करने की शपथ लेनी पड़ती है।'

'फिर तुम मुझे इस झंझट में क्यों घसीट रही हो?'

'खैर छोड़ो...तुम मैडम किरलोस्कर के लिए काम कर रहे हो।'

'तुम उसे जानती हो?'

'वह अमरीकन डिप्लोमैट है और रंगीन मिजाज और अब इस समय तुम उसे संतुष्ट करके आए हो।'

तुम्हारे लिए सम-कुछ करना पड़ता है। तुम बताओ कर्नल कहां गया है?'

मेरिया हंस पड़ी और हल्के व्यंग्य के साथ बोली-

'वह भी दूसरा किरलोस्कर है।'

'ओहो।'

'कोशिश करती हूं कि मैं उसे न्यंएक ना करूं...मगर फिर भी उपेक्षा कर जाती हूं-उसने आते ही एक सोसायटी गर्ल

को एंगेज कर लिया था। अभी तक नैतिक जिम्मेदारी समझकर सहन करसा रहा फिर तुम्हें देखकर मुझे कहा-अब तुम्हारा अकेलापन दूर हो जाएगा, मैं थोड़ी नींद ले लूं।'

'कही...तुम पर हाथ न साफ कर दे?'

'शटअप!' मेरिया का जेहरा थोड़ा लाल हो गया।

'क्या भरोसा! बहरहाल माइंड न करना।

'तुम केरन के हस्बैंड की तलाश में आए हो?'

डेविड ने हल्की सांस ली, 'तुम अब्र मेरी टोह भी लेने लगी हो?'

'क्या तुम सतझते हो किरलोस्कर के गुम हो जाने का केस केवल सिविल पुलिस तक ही सीमित होगा?'

'ओहो...फिर?'

'अमरीकन कौंसिल ने सीधा फोरन मिनिस्टरी से सम्पर्क किया था इसलिए यह केस विशेष रूप से सीक्रेट सर्विस को सौंप दिया गया है।'

'इसका मतलब है किरलोस्कर किसी विशेष व्यक्ति का नाम है।'

'शायद।'

'फिर केरन चे मुझे क्यों हायर किया?'

'हो सकता है कि केरन स्वयं भी किरलोस्कर की असलियत से अपरिचित हो। 'क्या ऐसा हो सकता है?'

'सब-कुछ हो सकता है..इन लोगों ने सारी दुनिया को अपनी मुट्ठी में जकड़ने की योजना बना रखी हैं।'

'क्या तुम इस हवाई दुर्घटना की खबर सुनकर शीतलगढ़ आई थी।'

'किसी सीमा तक।' मेरिया ने कहा, 'क्योंकि मैं उससे पहले ही किरलोस्कर की तलाश के लिए कार्य योजना बना रही थी। मगर इस दुर्घटना ने तो देश भर में कोहराम मचा दिया है।'

"इसका मतलब है तुम इस दुर्घटना को कोई अचानक स्वाभाविक आपत्ति नहीं समझतीं।'

'इसकी उत्तर तो समय ही देगा।'

'मगर तुम मुझे नहीं बताओगी।'

'क्या मैंने पहले कभी जुमसे कुछ छुपाया है?'

'घटना स्थल का निरीक्षण कर लिया है आपने?'

'पहले हम लोग उधर ही गए दे...बहुत दुखदाई दृश्य थाकैसे लोग घटनाओं का शिकार बनाए जाते हैं कि किसी को हवा तकनहीं लगती कि डर किसी योजनाबद्ध कूटनीति का परिणाम है।'

डेविड की आंखों से भी भीतर की पीड़ा झलकी। उसने दारू की बोतल से एक पूंट' भरा।

मेरिया ने कहा, 'मैंने ऐसे मासूम बच्चों की जली, कुचली, घुली-मिली लाशें देखी हैं-क्या एक दिन यह कूटनीति की हरकतें हिटलरी शासन के आतंक के समान उन्हें राख में नहीं मिला देंगी?'

डेविड ने पूछा- 'क्या कर्नल विकास इस काम में तुम्हारा ठीक सहायक सिद्ध होगा?'

मेरा विचार है हो...उसमें कुछ विशेष गुण हैं तभी उसे मिलिट्री इंटेलीजेंस सीक्रेट सर्विस में लिया गया है।'

'ओहो तो क्या पहले वह आर्मी इंटेलीजेंस कोर में था?'

'हां, कश्मीर में उसने बहुत जिम्मेदारी का काम किया है। अनेकों घटनाओं से बचाया है और सैकड़ों उग्रवादियों को पकड़वाया है। उसका खास गुण यह है कि चौबीस घंटे तक साधारण कपड़ों में बर्फ में दबा रह सकता है।'

"नहीं।'

'हां जनवरी में पड़ी कड़ी बर्फवारी में खतरनाक हथियारों से त्तैंल और विदेशी शदु शक्तियों द्वारा शिक्षित मिलिटेंट के घुसपैठ की सूचना मिली थी। विकास ने जो स्थान निगरानी के लिए चुना था वहां आसपास कोई आड़ नहीं थी। वह वहां पूरे बारह घंटे तक गोला-बारूद लिए लगभग दबा रहा और मिलिटेदस की मुहिम को असफल बना दिया।'

तभी अचानक असिस्टेंट मैनेजर तेज-तेज चलता हुआ उनकी ओर आया। उसके चेहरे से जोश और खुशी झलक रही थी। आते ही वह डेविड से बोला-

'साहब! मिस किरण मांधर मिल गई।

'ओहो जिन्दा है?'

'बिल्कुल जिन्दा और सुरक्षित।'

'कहां है?'

'किसी पुलिस पार्टी को मिली थी। अभी केवल यही सूचना मिल पाई है।'

'और कोशिंग की कोई खबर?'

'वह तो नहीं...एक औरे आदमी पकड़ा गया है।'

'पुलिस स्टेशन में है?'

'जी हां।'

डेविड ने मेरिया की ओर देखकर पूछा- 'क्या विचार है?'

'चलिए देखते हैं।'

मेरिया और डेविड उठ गए। होटल के हॉल में काफी लोगों की कानाफूसी की भिनभिनाहट सुनाई दे रही थी। लगभग सभी खुश दिखाई दे रहे थे जैसे ऊपर से आई कोई बला टल गई हो। कुछ लोगों ने डेविड से कुछ बातचीत करनीचाही लेकिन डेविड ने किसी को कोई उत्तर नहीं दिया।

फाटक के पास ही एक पुलिस इंस्पेक्टर नजर आया जिसे कुछ समय पहले डेविड से फटकार पड़ चुकी थी। डेविड के आते ही वह सावधान खड़ा हो गया। डेविड ने कहा-गईरवो मुझे मैडम को उनके रूम में अकेली छोड़कर कहीं जरूरी जाना पड़ रहा है उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी मेरे लौटते तक तुम्हारी है।'

'ठीक है सर? मगर इस समय सड़क पर कोई ट्रांसपोर्ट नहीं मिलेगी।'

'कोई बात नहीं, हम पैदल जा सकते हैं।'

'यह पुलिस की जिप्सी ले जाइए, इमरजेंसी के लिए कमिश्नर साहब इसे यहां छोड़ गए हैं। यह रही चाबियां।'

'थैंक्यू।' डेविड ने चाबी ली और मेरिया और डेविड कुछ देर बाद जिप्सी में पुलिस स्टेशन की ओर जा रहे थे।

□□

जिप्सी कम्पाउंड में छोड़कर वे लोग पुलिस स्टेशन में दाखिल हो गए। जहां एक डी० एस० पी० के पास पहुंचकर डेबिड ने कहा- 'हमें मिस किरपा मांधर से मिलना है।

डी० एस० पी० ने उन्हें सिर से पांव तक अजीब नजरों से देखा और बोला- 'मिस किरण मांधर की मानसिक दशा ठीक नहीं है। अभी किसी को उनसे मिलने की आज्ञा नहीं है।'

'वह हैं कहा?'

'वह हैं सो अभी यहीं...कल सुबह उन्हें सिविल हस्पताल ट्रांसफर कर दिया जाएगा।'

'क्या उनके साथ कोई और आदमी भी गिरफ्तार हुआ।'

'हुआ है पर...।'

मेरिया ने एक विजिटंग कार्ड निकालकर डी० सी० पी० की ओर बड़ा दिया। डी० सी० पी० ने कार्ड लेकर पड़ा 'मिस मेरिया झाम-सी० बी० आई०' वह चौंककर बोला- 'ओह आप!'

मेरिया ने डेविड की ओर संकेत किया- 'यह मेरे असिस्टेंट हैं कैप्टन डेविड।'

'आप एक हवालाती से मिलना चाहेंगे या मिस किरण से?'

'पहले हवालाती से...हा पहले मैं जानना चाहूंगी कि दोनों को किस हालत में पाया गया था?'

'आश्चर्यजनक।' डी० एस० पी० ने कहा- 'मिस किरण एक बिस्तर पर थीं, रजाई कंधों तक ढंकी थी और उनके कपड़े रजाई के ऊपर पड़े थे। मगर थीं वह सुरक्षित। मेरा मतलब है उनके साप कोई अनुचित हरकत नहीं की गई।'

'और वह दूसरा आदमी जो पकड़ा गया है?'

'एक नौजवान है...एक चट्टान के पास बेहोश पड़ा मिला है।'

'चट्टान...और बिस्तर?'

'यही तो आश्चर्य की बात है-मिस किरण एक चट्टान की आड़ में बिस्तर पर रजाई ओडे बेहोश पड़ी थीं। थोड़ी देर पहले एक पुलिस गश्ती पार्टी ने उनकी चीखें सुनी थीं।'

'क्या नौजवान ने कोई बयान दिया है?'

'अभी उसकी नौबत नहीं आई।'

'अभी मैं नौजवान का बयान लेना चाहूंगी।'

'आइए।'

डी० एस० पी० मेरिया और डेविड को लेकर हवालात के पास आया। जहां अंधेरे में कोई नौजवान बैठा था। दरबाजा खुलते ही नौजवान ने सिर उठाया और मेरिया और डेविड उसे देखते ही रह गए। ऐसा मासूम आकर्षक नौजवान खाली-खाली भोली आंखें और ऐसा ही भोला चेहरा। वह यूं ही चुपचाप दोनों की देखता रहा। मेरिया ने अनुभव किया कि बह नौजवान अपराधी नहीं हो सकता। उसने बहुत नम स्वर में उसे कहा- 'क्या तुम बयान देने की हालत में हो?'

'कैसा बयान?'

'क्या तुम्हें याद नही कि तुम किस हालत में पकड़े गए थे?'

'जब मैं यहां लाया गया दूंगा तो बेहोश था। होश में आने पर मैंने अपने आपको यहां हवालात में पड़े पाया, न मुझे मालुम है कि मेरे ऊपर क्या चार्ज है। न कोई बयान लेने आया है।'

'बेहोश होने से पहले का तो कुछ याद होगा।'

'हां...मैंने किसी महिला की चीजें सुनी थीं, मैं उस आशज पर उधर दौड़ पड़ा, वहां मैंने एक लम्बे से पतले सें किसी चीनी आदमी को देखा जो उस महिला पर टूटा पड़ रहा था। मैं उस पर झपट पड़ा। उसने मुझे उठाकर चट्टान से मार दिया। मैं बेहोश हो गया। उसके बाद मुझे कुछ याद नहीं।'

'वह लम्बा चीनी आदमी तुम्हारे बेहोश होने से पहले मौजूद था?'

'जी हां।'

'कोई और आवाज भी तुमने सुनी थी क्या?'

नौजवान ने जो चास्तव में बैडमैन था? अपना माथा रगड़ा और बड़बड़ाया-हार शांयद मैंने उस चीनी को हवा में उड़ते देखा था।'

'क्या मतलब?' मेरिया ने आश्चर्य से उसे देखते हुए कहा-

'पता नहीं...वह मेरा कोई सपना था या कल्पना मात्र।'

'क्या?'

'एक हडियों का ढांचा।'

'ढांचा!' मेरिया और डेविड एक साथ चौंक पड़े।

'जी हां ढांचा!' डैडमैन ने कहा- 'उसने चीनी को गर्दन से पकड़कर हवा में उछाल दिया फ और वह न जाने कहां गया। फिर मैं बेहोश हो गया था।

मेरिया और डेविड ने एक-दूसरे की ओर देखा फिर दोनों नौजवान की ओर देखने लगे। इस बार डेविड ने पूछा- 'तुम्हें अच्छी तरह याद है कि तुम जो कह रहे हो...वह सही है?'

'भला मैं झूठ क्यों बोलूंगा?'

'तुम कहां के रहने वाले हो?'

'बंगलौर का।'

'यहां क्या लेने आए थे?'

'मैं शीतलगढ़ की दुर्घटना की खबर सुनकर टैक्सी ले मुम्बई ले आया था।'

'यहां कहां ठहरे हो?'

'नहीं...नहीं...शाम तक घटनास्थल पर रहा फिर किसी होटल की तलाश में लेकिन सारे होंटल पहले ही से खचाखच भरे थे।'

'मुम्बई में क्या करते हो?'

'एक मैडिकल कम्पनी में प्रतिनिधि हूं।'

'यहां इतनी रात में सूची ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों में क्या करते फिर रहे थे? जब तुमने उस औरत की चीखें सुनीं।'

'क्या यह बताना जरूरी है?'

'क्या मतलब?'

'कुछ ऐसी बातें होती हैं जो शरीफ औरतों के सामने नहीं कहीं जा सकतीं?'

'ओहो।'

'अकेला हूं न, न कोई जिम्मेदारी है, न आगे-पीछे कोई हे फिर और क्या करू?'

'हूं, तो तुमने मिस किरण को बचाने की कोशिश की थी?'

'कौन मिस किरण?'

'जिनके साथ तुम्हें यहां लाया रहा है।'

'जी हां...मदद के लिए किसी के पुकारने का यही मतलब होता है कि कोई किसी के साथ जबरदस्ती कर रहा है।'

'उस समय तुम अकेले थे?'

'नहीं।'

'तुम्हारी साथी कहां गई?'

'पता नहीं...मैं तो चीख सुनकर उधर भागा था। वह पीछे से मुझे पुकारती रह गई थी।'

'अब तुम क्या करोगे?'

'क्या बताऊं साहब? मेरी जेब में यहां आने ले पहले बैटुएँ में लगभग हजार रुपये थे...अब टटोलकर देखा तो जेब खाली पाई।'

मेरिया ने डी० एस० पी० की ओर मुड़कर पूछा- 'इस नौजवान को किसने गिरफ्तार किया है?'

'इंस्पेक्टर सिंह ने।'

'मैं ऑफिस में उनसे पूछताछ करना चाहती हूं।'

ऑफीसर मेरिया और डेविड को दफ्तर में ले आया। थोड़ी देर बाद नौजवान और इंस्पेक्टर सिंह भी वहां पहुंच गए। मेरिया ने? जब दोनों को सामने वाली कुर्सियों पर बिठाया तो इंस्पेक्टर सिंह के चेहरे काउ क्षण भर के लिए रंग फीका यड़ू गया। मेरिया ने उससे पूछा-

'आपने इस नौजवान को कहां से गिरफ्तार किया है?'

'जी...जहां मिस मांधर बेहोश पाई गई थीं।'

'गिरफ्तारी के समय यह नौजवान किस पोजीशन में था?'

'बहोश था।'

'हुलिया?'

'ऐसा ही जैसा अब है।'

'और मिस मांधर का हुलिया उस समय का?'

'वह भी बेहोश थीं परन्तु वस्त्रहीन थी। बैसे वह गर्दन तक रजाई में ढकी थीं और उनके कपड़े बिस्तर के ऊपर पड़े थे।'

'इससे आपने अनुमान लगाया कि मिल मांधर की इस हालत का जिम्मेदार यही नौजवान था और आपने इसे हिरासत में ले लिया?'

इस बार इंस्पेक्टर सिंह के केवल होंठ हिलकर रह गए। रंग भी उड़ गया। मेरिया ने नौजवान की ओर देखकर कहा, 'अब तुम अपना वही बयान दोहराओ जो थोड़ी देर पहले तुमने दिया था।'

नौजवान ने अपना वहीं बयान दोहरा दिया। सिंह ने बैचेनी से पहलू बदलकर पूक निकलकर कहा-

'यह हमें बेहोश मिले थे और मिस मांधर के निकट ही थे। सो यही संदह लगाया जा सक्ता था कि यह इन्हीं की कार्यवाही हो।'

'अगर यह अपराधी होते तो होश में होते और आपको मिलते ही नहीं भाग गए होते।'

सिंह के फिर होंठ हिलकर रह गए। मेरिया ने कहा-

'कानूनी कार्यवाही का अभिप्राय यह नहीं होता कि किसी निर्दोष को परेशान किया जाए। उन्होंने मिस मांधर की मदद की कोशिश की थी जिसका इनाम इन्हें यह मिला हैं-जबकि मिस मांधर के नाम और अगुवा किए जाने की रिपोर्ट आपके पास थी...उनको अगवा करने वाला कोशिम नाम का कोई विदेशी था। खैर! इनकी जेब में जो बटुआ था वह कहां है?'

'जी मुझे नहीं मालूम।'

'आपके साथ जो कांस्टेबिल थे उन्हें बुलाइए।'

'बो...वो...वह...।'

'ठहरिए!' अचानक नौजवान ने हाथ उडेलकर कहा- 'मेरा बटुआ इंस्पेक्टर साहब की अंदर की जेब में है।'

इंस्पेक्टर सिंह का चेहरा बिल्कुल सफेद पटु गया था। उसने अंदर वाली जेब में हाथ डाला और बटुआ निकालकर पूक निगलकर बोला- 'अब याद आया जब इन्हें बेहोशी की हालत में उठाया गया तो यह बटुआ इनकी जेब केले-गिर गया था। जो किसी कार्ड-बिल ने उठाकर मुझे दिया था। वह मैंने चलते हुए जल्दी में जेब में डाल लिया था।'

'कोई बात नहीं।' मेरिया ने कहो- 'प्राय: भूल हो ही जाती है, आप यह उन्हें लौटा दीजिए।'

इंस्पेक्टर ने बटुआ नौजवान को दे दिया जो उसने धन्यवाद कहकर जेब में रख लिया।

मेरिया ने नौजवान से कहा- 'आप चाहें झो जो सकते हैं, बस अपनौ बयान लिखवा दें और जहां भी ठहरें पलिस

स्टेशन फोन करके अपना पता लिखवा दें ताकि जरूरत पड़ने पर आपको बुलवाया जा सके।'

'ठीक है।' नौजवान ने कहा और शिष्टता से अभिवादन करके चलने लगा तो सिंह ने कहा-

'मैं इन्हें' स्वयं जीप में शीलतगढ़ के निकट छोड़ आऊं।'

मेरिया ने डी० सी० पी० की और देरवकर कहा- 'आपको कोई आपत्ति न हो तो इन्हें गाड़ी ले जाने की अनुमति दे दें।'

'ठीक है।' डी० एस० पी० ने सिंह से कहा, उन्हें आराम से पहुंचाकर आकर मुझे रिपोर्ट दें।'

इंस्पेक्टर सिंह नौजवान के साथ जीप में जब काफी दूर तक निकल आया तो एकाएक एक खतरनाक मोड़ पर गाड़ी रोककर रिवाल्वर निकालकर नौजवान पर तानते हुए गुर्राकर बोला, श्वेरी बातों का सच-सच जवाब दो नहीं तो मैं तुम्हें गोली मारकर लाश सामने वाली गहरी खाई में फेंक दूंगा।'

नौजवान ने बड़े सहज भाव से कहा- 'पूछिए।'

'तुम्हें कैसे पता चला कि तुम्हारा बटुआ मेरी जेब ही में है?'

नौजवान ने कहा- 'मैं तो आपको यह भी बता सकता हूं कि आपने मुझे पकड़ने से अपने चार कांस्टेबिलों की टोली के साथ दुर्घटनाग्रस्त हुई औरतों के शूरीर से कितने जेवरात नोच-नोचकर उतारकर इकट्ठे कर लिए हैं और बाद में उनका आपस में बंटवारा करने के लिए एक गठरी में बांधकर कहां छुपा रखे हैं।'

इंस्पेक्टर सिंह के कान खड़े हो गए। लगा, उसने होश से जो दिए हैं। उसने रिवाल्वर की नाल नौजवान के माथे से लगा दी। जिसे नौजवान ने आराम से और धीरे से परे कर दिया और बोला- 'इंस्पेक्टर साहब क्यों गोली व्यर्थ गंवाते है...मुझ पर कोई असर नहीं करेगी...मैं आपको और काम की निजी बातें भी बता सकता हूं...मैं गुप्त ज्ञान का कुशल हूं...बुरा न मानिए इस समय आपकी पत्नी रंजना देवी बच्ची को सुलाकर किसी पराये प्यक्ति से ऐश मना रही हैं।'

इंस्पेक्टर सिंह का चेहरा एकाएक लाल भभूका हो गया। उसने चीखकर कहा-

'कौन है वह आदमी?'

'आप ही के विंभाग का क्राइम ब्रांच का डी० एस० पी० भार्गव।'

सिंह गुस्से से खड़ा हो गया और थरथराते हाथों से रिवाल्वर नौजवान की पीठ से लगाकर चिल्लाकर कहा-

'नीचे उतरी।'

नौजवान चुपचाप नीचे उतर आया। सिंह पीछे ले उसे रिवाल्वर की नोक पर धकेक्ता-दुआ साई के पास रुक गया और फिर एकाएक उसने कई फायर नौजवान की पीठ पर झोंक दिए। नौजवान के गले से एक जोरदार चीख निकली और वह खाई में गिर गया और सिंह जल्दी-जल्दी गाड़ी घुमाने लगा।

कुछ देर बाद उसकी जीप फरटि भरती हुई पुलिस स्टेशन की ओर जा रही थी। थोड़ी देर बाद ही उसने फैमिली क्वार्टर में जीप को अपने क्वार्टर के पास रोककर नीचे उतरकर अपने रिवाल्वर को दोबरा लोड किया और जोर-जोर से दरवाजा खटखटाने लगा।

अंदर पूरा सन्नाटा छा गया थी। कोई उत्तर नहीं मिला तो उसने जोरदार ठोकरें मारना शुरू कर दो।

अंदर की कुण्डी टूट जाने से दरवाजा भड़भड़ाकर खुल गया।

सिंह बिफरा हुआ जुनून में अंदर दाखिल हुआ। रंजना दालान में खड़ी थर- थर कांप रही थीउसके शरीर पर नीली मैक्सी थी। कम्बल सख्त पर पड़ा था और वह नंगे पौध और चेहरा फक्क था।

उसने डरे हुए कांपते स्वर में कहा- 'क...क...क्या हुआ?'

'कहा है वह हरामजादा?'

'क...क...कौन?'

'भ...भ...भार्गव, उसका यहां क्या काम?'

तड़ाक की आवाज के साथ एक जन्नाटेदार चांटा रंजना के गाल पर पड़ा- 'सूअर की बच्ची।' सिंह दहाड़ा, 'अभी-अभी तू उसके साथ डस सरज पर रंगरलियां मना रही थी।'

रंजना रोने लगी...अचानक बहुत धीरे-से भार्गव तख्त के नीचे से निकला। उसने अपने रिवाल्वर की नोक सिंह की पीठ पर ररद दी और गुर्राया- 'हाथ ऊपर उठाओ वरना गोली मार दूंगा।'

सिंह के हाथ ऊपर उठ गए। भार्गव ने उसके हाथ से रिवाल्वर झपटकर छीन लिया और गुर्राया- 'हंगामा करके तुम स्वयं अपने आपको बदनाम करना चाहते हो।'

'मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।'

'इससे पहले मैं तुम्हें गोली मार सकता हूं।'

'तो मार डालो।'

'मैं यह मूर्खता नहीं करूंगा।' भार्गव गुर्राया- 'तुम जिस बात के लिए नाराज हो रहे हो, उसके जिम्मेदार स्वयं तुम हो।'

'क्या मतलब?'

'शीतलगढ़ की कौन सी ऐसी धंधा कर वाली है जिससे तुम हफ्ता वसूली नहीं करते? हर रात किसी पेशे वाली के घर सोते हो।'

सिंह के होंठ कांपते रह गए।

भार्गव बोला- 'अब कान खोलकर सुन लो, मेरे पास तुम्हारे विरुद्ध इतने केसों के प्रमाण हैं कि जेल भिजवा सकता हूं।'

सिंह सन्नाटे में खड़ा रह गया। धीरे-धीरे उसका सारा जोश ठंडा होता खा रहा थाउ। भार्गव ने फिर कहा-

'अब समझदारी इसी में है कि तुम अपनी आंखें और जुबान बंद रखो। मैं कल वापस जा रहा हूं...रंजना से मेरी जान-पहचान पुरानी थी इसलिए ऐसा हो गया लेकिन इसकी ओर से अगर तुम यूं ही लापरवाह रहोगे तो कल मेरे स्थान पर कोई और भी हो सकता है। औरत पत्थर की मूरत नहीं होती। जिस प्रचार तुम्हारे भावों में उबाल आता है उसी प्रकार स्त्री के भाव भी उभरते हैं।'

सिंह चुप रहा।

'बोलो...क्या उत्तर है तुम्हारा? अगर जुम अपनी हठ पर अडे रहे सी विवश होकर मुझे भी तुम्हारे विरुद्ध कार्यवाही करनी पड़ेगी। रंजना यहीं रहेगी और तुम रात हवालात में गुजारोगे कल जेल भिजवाए जाओगे। फिर तुम मेरे ब्रौर रंजना के बीच जेल से निकलकर 'ही आ सक्ते हो।'

इंस्पेक्टर सिंह ने जुबान खोली- 'म...म...मैं रंजना से कुछ नहीं कहूंगा।'

'इसी में समझदारी है।'

फिर भार्गव ने सिंह का रिवाल्वर खाली कर। उसकी गोलियां जेब में डाल ली और उसका रिबाल्वर तरत्त पर फेंक दिया, स्वयं अपना रिवाल्वर ताने हुए पीछे हटो और बोला-

'याद रखो...इंसान गर्मी और जोश में अपना ही नुकसान करता है। अगर तुमने रंजनाके साथ जरा सा भी बुरा व्यवहार किया तो मैं अभी यही तुम्हारी बहुत सारी पोलें जो मेरे पास हैं को उजागर कर दूंगा। जिनमें से सबसे बड़ी पोल है तुम्हारी बदमाशों और गुण्डों को दी गई सहायता जो होटल रूबी में बैठते हैं और हर रोज उनमें पुराने चेहरे गायब होते रहते हैं और नए चेहरे जुड़ते रहते हैं। उनमें कार्तिल भी हैं डकैत भी।'

सिंह कुछ न बोला।

भार्गव ने बाहर निकलकर दरवाजा बंद किया। सिंह ने रंजना को घूरकर देखा और वह अचानक सिंह के पैरों पर गिरकर रोने लगी। सिंह बिकुल सन्नाटे में चुपचाप खड़ा रह गया था। उसके दिमाग में अब वह नौजवान घूमकर उसे ताड़ना दै रहा था। जिसको गोली मारकर वह अभी लौटा था।

5

मेरिया और डेविड रात को लगभग चार बजे वापस होटल राक व्यू पहुंचे। जिप्सी गइलस इंस्पेक्टर को सधन्यवाद लौटाकर अंदर दाखिल हुए।

हॉल में सन्नाटा था। काउंटर पर रिसेम्बानिष्ट बैठा ऊंध रहा था जो उनके कदमों की आवाज सुनकर चौंक पड़ा और अटेंशन होकर बोला- 'गुड मार्निंग! आप मिल मेरिया ही हैं ना?'

मेरिया मस्कराकर बोली-

'क्यों, क्या कोई मैसेज है?'

'जी हां।' उसने बोर्ड से चाबी निकालकर मेरिया को दी और फिर खाने से एक पर्चा निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिया।

मेरिया ने, परचा लेकर पढ़ा- 'जंग बहादुर मैडिकल एजेंट।'

फिर चौंककर बोली- 'क्या कह रहा था यह आदमी?'

'बस इतना ही कहा था कि पुलिस इंस्पेक्टर ने उसे सही जगह पर पहुंचा दिया है और वह सुबह आपसे कांटेक्ट करेगा।'

'ओ० के० थैंक्स।'

डेविड ने भी अपनी चाबी ले ली।

मेरिया और डेविड कॉरीडोर में आए। मेरिया ने एक कमरे के सोमने रुकते हुए मुस्कराकर कहा-

'मेरा रूम तो यही है क्या कुछ देर ठहरोगे नहीं?'

'क्या तुम्हें थकान महसूस नहीं होगी?'

'हिश्त!' मेरिया ने कहा, 'हम सीक्रेट सर्विस वालों के शब्दकोष में थकान का शब्द है ही नहीं, और वह दोनों अंदर दाखिल हो गए।

कमरा एयरकंडीशंड था। डेविड ने बोतल निकाली और घूंट भरने लगा। मेरिया अपने लिए पैरा बनाने लगी। उसने कहा-

'अगर तुम्हारी मैडम जान गई तो यह जानकर कि तुम यहां हो, प्रलय ढा देगी।'

'मैंने जो डोज उसे पिलाई है उसके अनुसार वह सुबह दस बजे से पहले नहीं जागेगी।'

मेरिया ने घूंट भरकर कहा- 'ऐनी वे, उस मैडीकल एजेंट के बारे में तुम्हारी क्या राय है?'

'हड्डियों के ढांचे के बारे में?'

'हां जो तुम-सोच रही हो वही मेरे मन में भी था। डैडमैन अवश्य शीतलगढ पहुंच चुका है। कोशिंग जैसे जानवर मे सिवाय बैडमैन के उसे कोई नहीं बचा सकता था।'

कुछ देर मौन रहकर मेरिया ने कहा- 'उस मैडीकल एजेंट के बयान के अनुसार ढांचे ने कोशिग को उछालकर हवा में उड़ा दिया था। क्या विचार है वह बच गयी होगा?'

'मेरा विचार है वह बच गया होगा।' डेविड ने कहा- 'उसकी हड्डियां रबड़ की मालुम होती हैं, कहीं से भी टकराकर वह वापस आ सकता है।'

'मगर डैडमैन।' मेरिया ने कहा, 'उसकी यहां उपस्थिति अकारण नहीं हो सकती।'

'यूं तो तुम्हारी उपस्थिति भी यहां अकारण नहीं है।'

'निस्सदेह या संयोग है कि तुम निजी रूप से आए हो और मैं विभाग की ओर से।'

'किरलोस्कर का लापता हो जाना क्या इतना महत्वपूर्ण है।'

'क्या इस हवाई दुर्घटना में किरलोस्कर का हाथ हो सकता है?'

'शायद हो।'

मेरिया ने कहा, 'अगर उसने केरन की जेब में सचमुच पर्चा पहुंचवाया है तो इसका मतलब है उसे स्थानीय गुण्डों की सहायता प्राप्त है।'

'लेकिन गुण्डों की जुबान से तो ऐसा लगता है। जैसे उन्होंने किरलोस्कर को कैद कर लिया है।'

'यह पुलिस को धोखा देने के लिए कहा गया है।'

डेविड कुछ देर मौन रहकर बोला- 'शीतलगढ़ में उनका एक ही अड्डा है जहां सफेदपोश और घाघ गुण्डे मिल सकते हैं।'

'होटल रूबी?'

'हां तो फिर होटल रूबी को में चैक करूंगा और तुम केरन को चैक करो।'

'ओ० के०, अब तो यहां कोशिग का होना भी अकारण नहीं मालुम होता। वह इंटरनेशनल क्रिमिनल मालुम होता है।'

एक घूंर्ट भरने के बाद मेरिया ने कहा-

'मैं इस बारे में अपने चीफ से बात करूंगी। अगर यह सच है तो उसका रिकार्ड सीक्रेट सर्विस में जरूर होगा।'

'अच्छा! अब तुम आराम करो।' डेविड एक लम्बा घूंट लेकर बोला।

'तुम्हें ख्त नींद आ रही है?' मेरिया ने पूछा, या फिर केरन को जगाकर उसका जोश ठंडा करना चाहते हो। क्या उसमें इतना यौन आकर्षण है?'

'तुमसे अधिक नहीं लेकिन तुम डैडमैन से प्रेम करती हो और डैडमैन मेरा दोस्त है।'

'मगर वह तो अब आत्मा मात्र है। उसके पास शरीर नहीं जिसकी प्रेम के लिए जरूरत महसूस होती है।' यह कहकर उसने अपना गिलास रखकर डेविड के और निकट आकर उसके गले में बारें डालकर होंठों पर होंठ रख दिए। डेविड की बांहों ने मजबूती से मेरिया की कमर को जकड़ लिया।

मेरिया का शरीर जैसे तपने लगा था और फिर कुछ ही देर बाद दोनों बिस्तर पर थे और दोनों के कपड़े एक ओर रखे थे। शरीर रजाई से ढके थे और मेरिया की उन्माद भरी सिसकारियां गूंज रही थीं।

□□

दूसरी सुबह मेरिया की नींद टूटी! उसने भरपूर अंगड़ाई ली। अपना शरीर अब उसे रदास हल्का महसूस हो रहा था। फिर अचानक फोन की घंटी बजी और उसने रिसीवर उठाकर कहा-

'हैलो!'

दूसरी ओर से आवाज आई- 'मिस मेरिया, मैं जंग बहादुर मैडिकल कम्पनी का एजेंट।'

'ओह हां कल रात तुम्हारा मैसेज मिला था, इंस्पेक्टर सिंह ने तुम्हें सही स्थान पर पहुंचा दिया है।'

'जी ही, अपनी समझ अनुसार उसने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। केवल तीन गोलियां चलाई थीं रास्ते में जीप से उतारकर और छलांग लगाने पर एक मजबूतपेड् कीटहनी मेरे हाथों में आ गई, बड़ी मुश्किल से वहां से निकल सका।'

'मुर्श्किल क्या?'

'मुझसे एक बड़ी भूल हो गई जो मैंने उससे बता दिया कि मैं रमल ज्ञान में कुशल हूं।'

'ओहो।'

'क्या बताया तुमने सिंह को?'

डैडमैन ने उसे सिंह को बताई सारी बातें दोहरा दीं। मेरिया हंसकर बोली- 'तुमने तो सचमुच अपनी गर्दन में फंदा डाल लिया। खैर इस समय तुम हो कहां?'

'वहीं जहां मुझे इंस्पेक्टर सिंह ठहराने वाला था...होटल रूगई के ऊपर केवल एक ही कमरा किराये पर ले रखा है।'

'होटल रूबी मेरिया चौंक पड़ी- 'उस होटल के बारे में तुम कुछ जानते हो?'

'अभी तक तो नहीं लेकिन अब अपने रमल ज्ञान से जान गया हूं। वह स्थान गुण्डों, अपराधियों और कातिलों का बड़ा है और जो कमरा मुझे मिला है वह दूसरे दर्जे की एक क्रिश्चयन जैसेमन नाम की सोसायटी गर्ल का है।'

मेरिया ने पूछा- 'क्या होटल से उस लड़की की कोई संबंध है?'

'हां...उसी ने होटल काउंटर से कमरे की चाबी लेकर मुझे दी थी और बड़ी हंस-हंसकर घनिष्ठता से काउंटर क्लर्क से बातें कर रही थीं। '

'मगर तुम्हें यह कैसे मालुम हो गया कि सिंह तुम्हें वहीं पहुंचाना चाहता थी।'

'अपने रमल ज्ञान से मैं मन की छुपी बातें जान लेता हूं।'

'अच्छा, अपने रमल ज्ञान-द्वारा बताओ मैं इस समय क्या कर रही हूं?'

'एक मिनट।' कुछ देर मौन रहा फिर कहा गया- 'आप अभी सोकर जागी हैं, बिस्तर में रजाई के अंदर थीं और आपके कपड़े सोफे पर पड़े हैं। आप जब बिस्तर में घुसी थीं अकेली नहीं थीआपके साथ वहीं थे जो...।'

मेरिया ने जल्दी से कहा- 'बस बस...बस।'

'जी आज्ञा।'

'देखो, तुम होटल रूबी ही में रुको और अपने आपको किरण मांधर के खानदान काएक गरीब रिश्तेदार बताओ।'

'जो आज्ञा मैडम।'

'ओ० के० ओवर।'

मेरिया ने रिसीवर रख दिया। बिंस्तर पर बैठकर सिरहाने पड़ी नाइटी पहनी। उसी समय वेटर आकर बैड टी दे गया।

नहाते हुए मेरिया जंग बहादुर ही के बारे में सोचती रही जो रमल ज्ञान जानता था। वह भी ऐसाजो किसी के यहां का भी पूरा दृश्य दिरवा दे। उसने सोचा- 'बिल्कुल डैडमैन की तरह, हां जंग बहादुर ही डैडमैन है।'

एकाएक उसका दिल जोर से धड़क उठा।

बहरहाल उसे इस बात का संतोष हुआ। डैडमैन से मिले उसे, एक समय हो गया था और उसका 'हरिओम' का लॉकेट भी कहीं खो गया था जिस द्वारा जब इच्छा हो वह अपने विष्णु को बुला लेती जो हर आपत्ति से उसेकी रक्षा करता था।

डैडमैन का प्रेम अब भी उसके हृदय में था तो...लेकिन डैडमैन स्वयं जान-बूझकर उससे दूर रहने लगाथ्या इसलिए वह जानता था कि मेरिया को वह सब नहीं दे सकता था जो उसको डेविड से मिल सकता था। इसी कारण वह चाहता था कि मेरिया और डेविड जितना एक-दूसरे के निकट रहे दोनों के लिए अच्छा है।

मेरिया तैयार होकर डाइनिंग हॉल में आ गई। डेविड पहले ही केरन के साथ वहां मौजूद था। केरन काफी सुन्दर और सैक्सी थी। मेरिया को देरवकर उसने बुरा-सा मुंह बनाया फिर झुककर डेविड से कुछ खुसर-फुसर करने लगी।

उसके इस ढंग पर मेरिया को हंसी-सी आ गई क्योंकि उसे उसकी पूणा बिल्कुल बच्चों के श्रांपसी द्वेष के समान लगी।

मेरिया डेविड की ओर मुड़े बिना अपनी आरक्षित मेज पर आ गई और नाते का ऑर्डर देकर टी० वी० पर न्यूज रील देखने लगी। हॉल में इस समय कोई भीड़ नहीं थी क्योंकि सहमे डरे लोग रात दो ढाई बजे सोने के लिए अपने कमरों में लौटे थे। टी० वी० पर रात वाली न्यूज रील ही दोहराई जा रही थी। वही नेताओं के बयान उन्की झूठमूठ की सहानुभूति करने वालों के रिश्तेदारों के बयान इत्यादि।

नाश्ता करके मेरिया आराम से बैठ गई कि उसने लम्बे कोट की जेब से सैल्यूलर फोन निकालकर बटन दबाया और फोन कान से लगा लिया। दूसरी ओर से आवाज आई-

'पुलिस स्टेशन शीतलगढ़! फरमाइए आपको कौन चाहिए?'

'डी० सी० पी० साहब।'

'आपका परिचय?'

मेरिया ने अपना परिचय दिया और दूसरी ओर से आवाज आई- 'मुझे आप ही के फोन का इंतजार था।

'क्या मिस किरण सिविल हस्पताल पहुंचा दी गई।

'जी नहीं...अभी यहीं हैं...वह पुलिस स्टेशन से निकने पर अपने आपको असुरक्षित होने सैं चुबरा रही हैं।'

'वैसे तो नार्मल है ना? कोई बयान दिया उसने?'

'जी नॉर्मल है और बयान बेहद आश्चर्च्जनक...आप आएं तो आपको कुछ और सुराग भी शायद मिलें।'

'मैं आ रही हूं।' कहकर मेरिया फोन बंद करके जेब में रखकर बाहर आ गई।

डेविड को उसने वहीं फेरने के साथ छोड़ दिया। बाहर उसके लिए जिप्सी मौजूद थी एक दरोगा ने सैल्यूट करके चाबी उसको थमा दीं और मेरिया जिप्सी लेकर चल पड़ी।

सड़कों पर काफी चहल-पहल थी लेकिन उदासी का-सा वातावरण। कई-कई गाड़ियां आ जा रही थीं जो विभिन्न होटलों के सामने रुक जाती। लोग दुर्घटना स्थल का दृश्य देरबने आ रहे थे।

पुलिस स्टेशन पहुंचकर मेरिया जब जिप्सी से उतरी तो डी० एस० पी० गेट पर ही था। मेरिया उसके साथ आई और डी० एस० पी० उसके एक ऐसे कमरे में ले आया जिसमें बहुत सारा सामान बिखरा पड़ा था। डी० एस० पी० ने एरक बिस्तर की ओर संकेत करके कहा-

"इस बिस्तर पर किरण बेहोश पाई गई थी। यह चीराने में ऐसी चट्टानों के पीछे मिला जहां बिस्तर पहुंचाने की कोई तुक ही नजर नहीं आती।'

"इसमें कोई खास बात?'

'इस पर कुछ ऐसे धब्बे हैं जिनसे रूसी शराब वोदका की गंध आ रही है।'

'ओहो वोदका कोशिंम की प्रिय शराब थी।'

'जी हां...यह बिस्तर शंधाई कोशिग ही का 'है मिस किरण ने भी इसकी पुष्टि की है।'

'मगर यह बिस्तर वहां पहुंचा कैसे?'

'आप स्वयं चलकर मिस किरण से बात कीजिए मेंने किरण की हालत देखते हुए उसे इंवेस्टीगेशन रूम में रखा है जो पुलिस स्टेशन का सबसे सुरक्षित स्थान है।'

थोड़ी देर बाद दोनों इंवेस्टीगेशन रूरम में थे। मेरिया ने किरण को देखा तो उसे उस पर तरस आने लगा। सुन्दर अल्प आयु कोमल सी भोली- भाली लड़की जो डर से पीली पड़ गई थी। मेरिया को वह घबराई सी नजरों से देखने लगी थी। डी० एस० पी० ने उससे बड़ी नरमी से कहा-

'खबराइए नहीं...यह मिस मेरिया हैं सी० बी० आई ऑफिसर।'

मेरिया ने उसे संबोधित करते हुए कहा- 'हैलो मिस किरण।'

'हैलो!'

मेरिया ने डी० सी० पी० की ओर मुड़कर कहा-

'क्या मैं मिस किरण से अकेले में बात कर सकती हूं?'

'श्योर।' कहकर डी० सी० पी० बाहर चला गया।

मेरिया ने किरण के और निकट कुर्सी खिसका कर कहा- 'आप बिल्कुल निर्भीक होकर मुझसे बातें कर सकती हैं...यहां आपको कोई खतरा नहीं।'

'जी।'

'होटल से निकलने पर आप पर जो कुछ बीती, वह सब विस्तार मे मुझे बताइए।'

किरण की आंखों से लगा जैसे बीती हुई घटना की कल्पना ले भी डर रही हो। मेरिया ने बात बढ़ाने के लिए कहा-

'वहां हॉल में मैंने और बहुत से आदमियों ने देखा था कि कोबरा आपको खींचकर एक कमरे में ले गया था जहां केशिंग ने आपको लेकर अपने कंधे पर डाल लिया, तब आप बेहोश थीं। कोशिग ने आपको साथ लेकर खिड़की से छलांग लगा दी थी। उसके बाद क्या हुआ था?'

किरण उछल पड़ी- 'क्या?' उसने सीने पर हाथ रखकर कहा- 'मुझे लेकर कोशिग ने होटल के कमरे की खिड़की म्रे छलांग लगाई थी?'

'हां।'

'ओ गॉड! इतनी ऊंचाई से नीचे पथरीली चट्टानें हैं...मैं कैसे जिन्दा रह गई?'

'यही तो आश्चर्य है कि आप कैसे बच गई...खैर...आपको होश कब आया और उसके बाद?'

'मुझे एक गुफा में दोश आया था।'

'कहा है वह गुफा?'

'पता नहीं शीतलगढ़, के आसपास ही कहीं है और काफी ऊंचाई पर है।'

'यहां आपने क्या देखा? क्या हुआ? सब बताइए।'

किरण सोचती रही फिर उसने। वह सारी घटना दोहरा दी जो उसके साथ घटी थी। आखिर में बोली-

'में उस अज्ञात अचानक आ गए सहायक का चेहरा देखकर बेहोश हो गई थी...वह चेहरा केवल हड्डियों का ढांचा था।'

मेरिया का दिल एकाएक धड़क उठा। बह डैडमैन के ही बारे में बता रही थी। कुछ रुककर किरण ने फिर कहा-
'मगर जब मुझे होश आया तो मैं यहां पुलिस स्टेशन पर थी और ये लोग बताते हैं कि मैं सड़क के पास कहीं, पड़ी मिली थी।'

'हां।' मेरिया ने कहा, 'आप सड़क से अधिक दूर नहीं थीं...आप एक चट्टान की आड़ में पड़ी थी।'

'मुझे आश्चर्य होता है कि मैं वहां कैसे पहुंच गई?' क्या आप जानती हैं कि आप एक बिस्तर पर थी?'

'व्हाट...बिस्तर?'

'आप एक गद्देपर लेटी थी और गर्दन तक रजाई ओढे थीं आपके सारे कपड़े बिस्तर के ऊपर रखे थे।'

'ओह गॉड! क्या मैं उस गुफा में बिस्तर पर थी?' क्या आपको इसके बीच की कोई बात याद नहीं, आपको बीच में जरा भी होश नहीं आया?'

'अच्छी तरह याद है...मगर क्यों?'

'आपको एक मैडीकल फर्म के एजेंट ने बचा लिया था। उसका कहना है कि बह आपकी चीलें सुनकर उस चट्टान के पास पहुंच गया था जहां कीशिंग के हुलिए के एक आदमी ने उमे उठाकर एक पत्थर पर पटककर मारा। वह बेहोश हो गया।'

'ओहो।'

'बेहोश होने से पहले उसने कोशिंग को देखा था जिसे हडियों के एक ढांचे ने उठाकर हवा में उड़ा दिया था।'

'वही ढांचा हो सकता है...मैंने उस समय उसका केवल चेहरा देखा था लेकिन उसी समय मैं फिँर बेहोश हो गई थी। जब होश आया तब मैंने सोचा, चह जो कोई भी था वह सों मेरे लिए देवता बनकर आया था। उसी के कारण मेरी इज्जत, मेरा सतीत्व बच गया।'

'तो तुमने उस मेडीकल एजेंट को बिकुल नहीं देखा?'

'मुझे बिस्कूल याद नहीं। हो सकता है मैं अर्धबेहोशी में चल पड़ी हैं...मगर मुझे फिर यह मालुम नहीं कि मैं उस गुफा से चट्टान तक कैसे पहुंचा। वह भी पूरे बिस्तर के साथ और रजाई से ढंकी।'

'और वह रजाई के ऊपर आपके उतरे हुए कपड़े?'

'वह मैंने स्वयं उतारे थे।' किरण ने कहा, 'मुझे कोशिंग ने कोबरा द्वारा इतना भयभीत कर दिया था कि मैं स्वयं अपने हाथों से अपने कपड़े उतारने पर मजबूर हो गई थी और उसके बाद वह शायद भगवान द्वारा भेजा गया ढांचा मेरी सहायता को आ गया था।'

'हो सकता है वह कोई अंजान शक्ति हो और उसी ने तुम्हें गुफा से निकालकर पहाड़ी तक भूलना हो।'

'हां हो सकता है।'

‘खैर...अब तुम क्या पसंद करोगी?'

‘मैं समझी नहीं।'

'मतलब है, तुम यहां पुलिस स्टेशन में कब तक रहोगी?’

किरण के चेहरे पर भय की परछाई नजर आई। उसने कहा-

‘फिर मैं क्या करू मैं इतनी डर गई दूं कि अपने भीतर इतना साहस नहीं बटोर पा रही कि शीतलगढ़ से अपने होस्टल में या अपने पर नेपाल जाऊं। मैं अपने आपको सुरक्षित नहीं समझती हूं। इन भयानक घटनाओं ने मुझे झिंझोड़ दिया है।'

‘मेरे साथ चलो...मैं होटल राक व्यू में हूं। तुम्हणि सुरक्षा की सारी जिम्मेदारी मुझ पर होगी। मेरे ही कमरे में मेरे साथ रहना।'

‘नहीं।' किरण ने कांपकर कहा- ‘मैं उस होटल की दहलीज के अंदर भी नहीं जा सकूंगीमुझे उसके नाम से भी डर लगता है। वहीं वह कोबरा और उसका मालिक रहता है।'

“देखो...मैं सी० बी० आई० की ऑफिसर हूं। मैं तुम्हें पूरी सुरक्षा का विश्वास दिलाती हूं। मेरे साथ एक आर्मी के कर्नल मेरे असिस्टेंट भी हैं। वहां कोई तुम्हारी ओर बुरी नीयत से देखेगा भी नहीं।'

किरण की आंखों में उलझन-सी नजर आई। मेरिया ने कहा-

‘ऐनी वे मैं तुम्हें मजबूर नहीं करूगी...मैं तुम्हारे ही हित के लिए कह रही हू क्योंकि पुलिस स्टेशन में भी तुम इन्वेस्टीगेशन रूम में हो और यहां तुम्हें कोई सुविधा उपलब्ध नहीं होगी...तुम्हें बाहर तो जामा ही पड़ेगा।'

किरण ने ठंडी सांस ली और कहा- ‘ठीक है मैं आपके साथ चलती हू मगर।'

‘बस अगर मेरे साथ चल रही हो तो निश्चिंत होकर चलो।' और उठते हुए कहा- जुम तैयार हो जाओ...मैं डी० सी० पी० से तुम्हारे बारे में बात करती हूं।'

फिर मेरिया उठकर निकल आई और किरण उसे जाते देखती रही।

6

डेविड बड़ी देर से केरन से पीछा छुड़ाने का प्रयत्न कर रहा था लेकिन केरन उसे छोड़ नही रही थी। पैतीस वर्ष की औरत वह भी इतने बड़े देश के कौंसिल की डिप्लोमैट और बच्चों के समान जिद्दी। डेविड का जी चाह रहा था कि उसका सिर दीवार से दे मारे।

तंग आकर उसने कहा- 'आखिर तुम समझती क्या हो कि मैं कोई जादूगर हूं जो तुम्हारे पास बैठा-बैठा तुम्हारे हस्बैंड को ढूंढ लूंगा?'

'मैं कब कह रही हूं तुम होटल में बैठे रही...हां जहां भी तुम जाओगे मैं साथ चलूंगी...होटलें में अकेली नहीं रूह सकती।'

डेविड झंझलाकर बोला- 'तुम अकेली कहा हो...होटल ग्राहकों से भरा पड़ा है...किसी नौजवान के साथ चिपक जाओ।' और वह उठने लगा कि केरन ने उसकी बांह पकड़ ली।

अचानक ही डेविड की निगाहें कर्नल विकास पर पड़ी जो बहुत स्मार्ट नजर आ रहा था। अधेड़ आयु होते हुए भी उसके मर्दाना आकर्षण का फौलादीपन किसी भी नौजवान को प्रभावित कर सकता था। एक ओर खड़ा हुआ इधर-उधर देरवे रहा था। शायद मेरिया को तलाश कर रहा था जो सुबह ही किरण से मिलने पुलिस स्टेशन गई थी और अभी तक नहीं लौटी थी।

अचानक डेविड को केरन से पीछा छुड़ाने की युक्ति सूझी। उसने विकास की ओर संकेत करते हुए धीरे-से कानाफूसी में केरन से कहा-

'उस आदमी को देख रही हो?'

केरन ने चौंककर विकास को देखा और देखती रह गई। डेविड ने बहुत धीमे स्वर में कहा- 'है ना सजीला जीदार...इसी के कारण तो मेरी गर्लफ्रैंड ने मुझे छोड़ दिया था।'

'क्या मतलब?' केरन ने होंठों पर जुबान फेरकर कहा।

'एक बार भी कोई औरत इसके साथ एज्जॉय कर ले उसे कोई दूसरा मर्द पसंद नहीं आएगा।'

इससे पहले कि केरन कोई उत्तर देती कर्नल विकास डेविड को देखकर मुस्कराता हुआ उसकी ओर बढ़ आया और बोला- 'हैलो!'

'हैलो!' डेविड ने शिष्टता से उत्तर दिया और बोला, शायद आप अकेले हैं।'

'हां, मुझे सोकर उठने में देरलग गईपता नहीं मिस मेरिया कहां गई हैं आपसे तो सुबह मिली होंगी।'

'मिली तो नहीं...हौं बाहर जाते जरूर देखा था। अकेले हैं तो हमारे साथ बैठिए।'

विकास धन्यवाद कहकर पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।

डेविड ने केरन की ओर संकेत करते हुए विकास से उसका परिचय कराया- 'मिसेज केरन किरलोस्कर मेरी आंटी?'

केरन कर्नल विकास के सजीलेपन से ऐसी विभोर-सी हुई थी कि उसने अपने बारे में डेविड का व्यंग्य नहीं सुना और होंठों पर जुबान फेरकर कहा-

"हैलो!'

'मिस्टर विकास।' डेविड ने कर्नल झे संबोधित होकर कहा- 'आप तो अभी यहीं मिस मेरिया का इंतजार करेंगे ना?'

‘जी हां...मेरे योग्य कोई सेवा?'

‘वास्तव में मिसेज केरन कल की दुर्घटना ले बहुत भयभीत हैं शायद इसलिए कि कोशिग की दृष्टि इन पर भी थी।'

केरन के चेहरे पर एक रंग आया और गया। वह चुपचाप विकास को प्रशंसा की दृष्टिसे देखे जा रही थी।

डेविड ने विकास से कहा- ‘वास्तव में मेरा मतलब यह था कि मुझेएक जरूरी काम से कहीं और जाना है और मिसेज केरन अकेली नहीं ठहरना चाहती, आई थिंक शी विल फील सेफ इन युअर कम्पनी इफ यू डोंट माइंड।'

कर्नल विकास ने मुस्कराकर कहा- ‘श्योरली इटस नो प्रॉब्लम आइ विल लुक आपटर दा स्वीट लेडी।'

'थैंक्यू।' कहकर डेविड ने केरन की ओर देखा और कहा- 'अब तो तुम्हें संतुष्ट होना चाहिए।'

केरन से चौंककर कहा-

“हां...मगर...।'

‘घबराओं नहीं...यह एक्स कर्नल हैं। उच्च वर्ग के रईस समय से पहले सेना से रिटायरमेंट ले ली है।'

मेरिया ने कहा- ‘ठीक है, मगर तुम जल्दी आओगे ना।'

‘बस गया और आया...ओ० के० कर्नल।' कहकर डेविड बोहर निकल गया। केरन विकास ही की ओर देरवे जा रही थी।

विकास ने कहा- ‘मिस्टर डेविड बड़े शानदार आदमी हैं।'

‘हां।' वह संभलकर बैठती हुई बोली- ‘मिस्टर डेविड बता रहे के आपने काक नहीं की।'

‘में एक आजाद पंछी हूं और आजाद रहकर ही जीना चाहता हूं।'

‘क्यों?' केरन ने कहा- 'आपके कल्चर में तो जवान होते ही माता-पिता बेटे या बेटी की शादी कर देते हैं।'

‘मगर मेरा दृष्टिकोण अलग है, मैं सोचता हूं सैक्स फ्री होने की स्वाभाविक भावना है ग्से बंधन या जंजीरों में नहीं बंद करना चाहिए।'

‘नाइस।' केरन संभलकर बैठती हुई बोली- ‘हमारे विचौर मिलते हैं आप सचमुच खुले मन के आदमी हैं।'

'थैंक्यू फार कप्लीमेंन्टस, कुछ पिएंगी?’

‘नो हार्म।' कहकर केरन ने स्वयं वेटर को बुलाकर दो बड़े पैरा स्कॉच का ऑर्डर दिया और बोली-

'आपकी बस...मिस मेरिया।'

‘जी हा...वह उच्च सी० बी० आई ऑफिसर हैं।'

‘व्हॉट?' केरन चौंक पड़ी।

‘मैं उन्हें असिस्ट करता हूं।'

'आप लोग किसी केस के बारे में यहां आए हैं?'

‘हम लोग प्लेन क्रैश की इंक्वायरी कर रहे हैं।'

‘क्या आप दोनों अलग-अलग कमरों में रहते हैं?'

'मिस मेरिया का दर्जा मुझसे ऊंचा है और इसका ध्यान रखना ही पड़ता है।'

केरन ने कहा- 'बैसे भी मिस मेरिया डेविड की एक्स गर्ल फ्रैंड हैं।'

'ऐक्स नहीं, अब भी दोनों में घनिष्ट, दोस्ती है।'

केरन का दिमाग जैसे भक्क से उड़ गया। वह मुर्राई- 'इसका मतलब है डेविड और मेरिया नेकहीं होटल से बाहर मुलाकात निश्चित कर रखी होगी।'

'क्यों उन्हें किस बात का डर है?'

'ओह! कुछ नहीं मैं यूं ही कर रही थी।'

विकास ने कहा-'बह दोनों अपनी-अपनी जगह आजाद हैं, किसी के पाबंद नहीं।'

तभी अचानक हॉल में एक चीख सुनाई दी- 'सांप...सांप।'

वे लोग एकाएक चौंक पड़े। दूसरे ही क्षण केरन की जोर से चीख निकल गई और डर से घिग्धी बंध गई क्योंकि कोशिग का कोबरा तेजी से केरन की ओर बढ़ रहा था।

7

डेविड ने थ्री-व्हीलर होटल रूबी से काफी दूर छोड़ दिया था और पैदल चलता हुआ होटल के पास पहुंचा था।

होटल के बाहर एक बड़ी मूंछों वाला गुण्डा एक शरीफ सूरत नौजवान के चांटे मारता हुआ गुर्रा रहा था-

'हरामजादे लौंडिया को छेड़ता है।'

'अरे नहीं साहब।'

'साहब के बच्चे झूठ बकता है।'

'देखिए मैं तो केवल कमरा पूछ रहा 'था।'

'कमरा पूछ रहा था या धंधे की बात कर कहा था? देखते ही देखते गुण्डें ने नौजवान की जेब खाली करा ली। घड़ी उतरवाई और उसे धक्के मारकर भगा दिया और...नौजवान बेबसी से रोता हुआ चला गया।

डेविड होटल में घुसने लगा तो गुफ्टें ने नथुने फुलाकर पूछा- 'अब किसको मंगता है?'

डेविड ने दांत निकाल दिए, 'साहब, मेरे एक दोस्त ने यहां मिलने का समय दिया है।'

'अबे फूट...यह होटल है मुलाकातियों का अड्डा नहीं।'

'मुक्त में नहीं ठहरूगा साहब...नाश्ता भी करूगा।'

'बेकार घंटे भर मेज रोकेगा, भाग यहां से।'

'देखिए साहब यहां का पता दे चुका हैं...कहां जाऊं?'

'छोकरी है या छोकरा?'

'जी छोकरी है।'

'तब ठीक है...चल अंदर।'

डेविड गुण्डे के साथ दोस्त के ढंग में अंदर आया। एक मेज के गिर्द छः गुण्डे बैठे, फ्तैश रवेल रहे थे। एक ओर एक पेशेवर औरत के साथ बैठा एक आदमी बार-बार उसका हाथ दबाता...फ्लैश खेलने वालों से एक मुण्डे ने डेविड की ओर देखा फिर दूसरे साथियों से कुछ इशारा करके डेविड के पास आकर कुछ रुआब से बोला-

'क्या करने का है इधर?'

'मैं इन्हें बता चुकके! हूं।' डेविड ने दांत निकालकर साथ आए युछेड़े गुण्डे की ओर देखते हुए कहा।

'अरे! मैं इसका बाप हूं।'

डेविड ने मुछेड़े से कहा- 'क्यों साहब, क्या सचमुच यह आपकी मां का यार है?'

साथी गुण्डे की औरवे निकल पड़ी- 'क्या बोला? और उसने झटके से डेविड का गिरेहबान पकड़ लियामगर दूसरे ही क्षण उसके सिर पर डेविड ने अपने सिर की टक्कर मारी और वह चकराता हुआ ऐसे पीछे हटा जैसे भेजा हिल गया हो और मेज कुर्सियों से टकराकर गिर पड़ा और बड़ी मेज के नीचे घुस गया।

'अबे तेरी तो।' कहकर गुस्से से दूसरे गुण्डे ने डेविड पर छलांग लगाई और डेविड ने उसे रबड़ के पुतले की तरह हवा में ही लपककर दूर उछाल दिया। गुण्डा मेज के ऊपर गिरा और मेज चिरमिराकर ढेर हो गई।

आसपास से आकर और कई गुण्डों एक सोथ डेविड पर झपटे। डेविड ने कोट के अंदर से दारू की बोतल निकाल ली थी और एक लम्बा मूंट भरकर बोतल की गर्दन पकड़कर हथियार की तरह चारों ओर बिजली की तरह इस ढंग से घुमाई कि थोड़ी देर में कोई सिर थामे कोई आरव, कोई टांग, कोई बांह पकड़े लखरान पड़ुए थे और डेविड आराम से एक कुर्सी पर बैठा ने घूंट भर रहा था और इस बात से बेखबर था कि धीरे से एक लम्बा-संड़गा शायद गुण्डों का सरदार एक भारी पत्थर की मूसल लिए खड़ा उस पर वार करने वाला था। अगर वह भृस्ल्‌ डेविड के सिर पर पड़ जाता है तो जरूर डेविड का नेजा बाहर निकल आता लेकिन-एकाएक कुछ ऐसा हुआ कि मूसल उसके हाथ से गिर गया और बदमाश छत की ओर उछलकर एक कड़ी से लटका रह गया।

डेविड ने पलटकर देरवा। उसके सामने मेडीकल फर्म का एजेंट जंग बहादुर खड़ा हुआ था।

काउंटर क्लर्क भी आश्चर्य से उसे देख रहा था। डेविड के होंठों पर मद्धिम सी मुस्कराहट फैल गई और उसने कहा- 'हैलो! थैंक्यू।'

'हैलो साहब।' जंग बहादुर आगे बढ़ता हुआ बोला- 'अपने और मेम साहब ने तो मुझे हवालात से निकाला था। आप लोगों का उपकार था कि मैं सिविल पुलिस के शिकंजे से निकल सका।'

'आओ...बैठी।'

जंग बहादुर बैठ गया और बोला- 'आप इधर कैसे आ गए साहब?'

'बस यूं ही।' डेविड ने मुस्कराकर आरव भारी, बस जरा मूड और मुंह का स्वाद बदलने के लिए। उधर अपनी मैडम के सामने तो चौकन्ना रहना होता है।'

यह बात डेविड ने थोड़ा जोर से कही ताकि ऐसे लोगों के कानों तक पहुंच सके जो छुपकर उनकी बातें सुन रहे हों। फिर उसने घूर लेकर इधर-उधर देखा और बनता हुआ बोला- मुगर यहां वीराने जैसा सन्नाटा क्यों है?'

'साहब!' जंग बहादुर मुस्कराया- 'जिनसे इस होटल की शोभा है वह रात को जागने वालिया हैं और दोपहर के बाद ही बिस्तर जोड़तीं हैं।

अचानक एक गोल चेहरे और गठीले बदन वाला सांवला आदमी जो उम्र से सबका सरदार लगता था। लाल-लाल बाहर को निकली औरवे वाला बाहर आया और भेज के बिकल पास आकर ऐसे खड़ा हो गया कि जैसे डेविड पर टूट पड़ेगा।

डेविड भी चौकन्ना हो गया था।

काउंटर क्लर्क उस व्यक्ति को देखकर सावधान हो गया था-जंग बहादुर भी खड़ा होकर बोला- 'सलाम साहब।'

'सलाम।' उसने धीरे से कहा और निरंतर डेविड ही को घूरता रहा।

जंग बहादुर ने जल्दी से कहा- 'इन साहब का कोई दोष, नहीं ये लोग स्वयं लड़ाई मोल लेते हैं।'

आने वाला डेविड के सामने बैठ गया और जंग बहादुर को जाने का संकेत करके बोला--

'मेरा नाम शुभांकर है।'

जंग बहादुर जाकर दूसरी मेज पर जा बैठा था। डेविड ने एक नजर हॉल में डाली और शुभांकर से लापरवाई से बोला- 'अच्छा नाम है।'

शुभांकर ने दो फोटो जेब से निकालकर सामने मेज पर रख दिए। वह फोटो केरन किरलोस्कर और डेविड के थे। डेविड ने बूट भरते हुए आराम से कहा- 'अच्छे आए हैं।'

शुभांकर ने फोटो जेब में रख लिए और बोला-

'कल केरन मेम साहब को चेतावनी दी गई थी कि वह वापस चली जाए...लेकिन वह अभी त्तक यही हैं।'

डेविड ने हल्की सांस लेकुर कहा- तो वह चेतावनी तुमने दी थी।'

'जी हां और आप मेम साहब के बाडी गॉर्ड हैं।'

'हां...मुझे अच्छा मुआक्चा मिला है।'

'मेम साहब ने पुलिस से मदद ली होगी?'

डेविड ने कुछ पूणा भरे स्वर में उत्तर दिया- 'पुलिस ऐसे मामलों में क्या कर सकती है। वह तो बस पकी-पकाई खाने और हफ्ता वसूल करने वाले हैं।'

'आप ठीक कहते हैं लेकिन ऐसे मामलों में प्राय: डेविड साहब की सहायता लेते हैं।'

'तुम उसे जानते हो?'

'हम लोग डेविड साहब के फैन हैं। क्या आपको उन्होंने ही मेम साहब के साथ भेजा है?'

'अगर मैं हां कहूं तो?'

'तब हम चाहते है कि आप इस झंझट में न पड़े...। हम नहीं चाहते कि डेविड साहब के नाम पर कोई धब्बा लगे।'

'क्या मतलब?'

'क्या आप अनुमान नहीं लगा सकतें कि हम केरने मेम साहब को उसी समये समाप्त कर सकते थे जब हमने उन्हें मैसेज दिया था।'

'क्या डेविड को कभी आमने-सामने देखा है?'

'न भी देखा हो तो भी वह हमारे मार्ग दर्शक हैं।'

'क्या तुम्हें किरलोस्कर ने हायर किया है?'

'नहीं, उसने जिसकी कैद में किरलोस्टर हैं।'

'वह कौन हैं?'

'यह बताना हमारे नियम के विरुद्ध है।'

'अगर डेविड तुन्हें स्वयं कहे तो।'

'तो हम उनके पांव पकड़कर क्षमा मांग लेंगे।'

'क्या तुम मुझे उक्से मिलवा सकते हो?'

'आप क्या करेंगे उनसे मिलकर।'

'मामले की बात।'

शुभांकर कुछ देर सोचता रहा फिर बोलो- 'मैं बॉस ले पूछे बिना कोई उत्तर नहीं दे सकता।'

'कोई बात नहीं, केरन का फोटो तुम्हें किसी ने मुम्बई से भेजा होगा।'

'जी हां।'

'और भेजने वाला वही होगा जिसने किरलोस्कर को अगवा किया है।'

'जी।'

'इसका मतलब हुआ वह केरन पर शुरू ही से नजर रखा रहा होगा। तुम उस आदमी की पहचान नहीं कर सकते?'

'नहीं...अगर कर भी सकता तो भी यह हम लोगों के नियमों के विरुद्ध है।'

'खैर...मुझे अपने बॉस का उत्तर कब तक दोगे?'

'शाम तक या कल।'

'केरन के जीवन को तो कोई खतरा नहीं?'

'नहीं...बस हमें उनकी निगरानी का आदेश मिला है।'

'अच्छा...मैं उत्तर लेने फिर यहीं आऊंगा।'

'ठीक है। इस समय आप हमारे मेहमान हैं...मेरे आदमियों ने जो अशिष्ट व्यवहार आपसे किया है उसके लिए मैं क्षमा मांगता हूं।'

यह कहकर शुभांकर उठकर अंदर चला गया और डेविड आराम से घूंट भरता रहा। ना जंग बहादुर अपनी मेज से उठकर डेविड के पास आया और ना डेविड ने उधर ध्यान दिया। दोनों एक्यद्रसरे से जान-बूझकर अजनबी बने रहे।

लगभग पंद्रह मिनट बाद एक बहुत सुन्दर लड़की बढ़िया मेकअप किए जो मध्य प्रकार की धंधा करने वाली मालुम होती थी। बाहर आई और डेविड के पास आकर मुस्कराती हुई बोली- 'सलाम हुजूर।'

डेविड ने उसे सिर से पैर तक निहारा और आराम से बोला- 'सलाम! अपन को शुभांकर ने भेजा है आपकी सेवा में।'

'हूं..क्या लोगी?' डेविड ने अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा।

'अरे साहब! शुभांकर साहब अपन को मार डालेंगा अगर कुछ लुंगी तो। क्या इधर कमरे में ठहरने का हैं या बाहर चलने का है?'

'थोड़ी देर बाद फैसला करूगा।'

'ठीक है तब तक अपन नाश्ता कर ले।' लड़की ने संकेत से किसी को बुलाकर एक लम्बे नाते का ऑर्डर दिया और डेविड से पूछा-- 'आपको क्या मंगता साहब।'

डेविड ने कहा-'मैं जो मंगता वह मेरे पास है।'

जब वेटर चला गया तो लड़की ने कहा- 'अपन का नाम जेसेमन है, अपन कभी चमेली की कली की माफिक था साहब...अपन का बाप मुम्बई में टैक्सी चलाता था... उधर रात में स्मगलर लोग जबरदस्ती उसकी टैक्सी में स्मगलिंग का सामन लाता ले जाता सा। अपन बहुत् बक-बक करता साहब...बुरा तो नही लगता।'

'नहीं बोलती जाओ।'

'हां साहब...उधर एक दिन अपन का बाप को पलिस पकड़ लिया...उसको तीन साल की सजा हो गई साहब तीन वर्ष बाद अपन का बाप बाहर आया और फैसला किया कि जो लोग उसको जेल भिजवाया था उनको सजा दिलवाएगा। एक दिन च्छ स्मलगर का पांच आदमी स्मगलिंग का सामान लेकर बाप के साथ था। बापं उनको सीधा पुलिस स्टेशन के अंदर लेता-चला गया। पांचों को सामान के साथ पकड़ लिया राया साहब और स्मगलर का लोग अपन को और अपन की मां को घर से उठाकर ले गया। अपन के बाप के सामने मां को और अपन को बार-बार रेप किया-अपन की मां उसी दिन आत्महत्या कर ली और अपन को वह स्मलगर रखैल बना लिया। जब जी भर गया तो अपन को खुला छोड़ दिया और, अपन इधर आ गई साहब। क्षण भर रुककर उसने फिर कहा- 'आपको बुरा तो नहीं लग रहा साहब, यह अपन का दुखड़ा है अपन मजबूर है।'

इतने में वेटर जेसेमन का नाश्ता रखकर चला गया और वह नाश्ते पर ऐसे टूट पड़ी जैसे वर्षों से भूखी हो।

डेविड उसे बड़े ध्यान से देरव रहा था। लड़की की उम्र भी कम थी और चेहरे पर भोलापन था। नाश्ता करके उसने प्लेट एक ओर सरकाकर कहा- 'साहब कुछ फैसला किया।'

'किस बात का?

'हां...हां...साहब कमरे में चलने का है या बाहर जाने का?'

डेविड ने कहा- 'कमरे में तो मुम्बई में जाते ही रहते हैं कहीं खुले में चलने को जी चाह रहा है। मगर यहां मुझे किसी खुले ठिकाने का ज्ञान नहीं।'

'साहब, अपन को सब मालूम, चलिए।'

डेविड जेसेमन के साम उठ गया। जंग बहादर आराम से अपनी मेज पर बैठा उन्हें जाते देखता रहा। डेविड के बाहर निकलते ही अचानक शुभांकर कई बदमाशों को साथ लेकर जंग बहादुर की मेज के गिर्द आ खड़ा हुआ।

डैडमैन ने शांत भाव से उनको देखा और बोला- 'मुझसे कोई भूल हो गई साहब।'

'तुम कौन हो? अपना पूरा परिचय दो।'

'जी मेरा नाम जंग बहादुर है, दवाइयां बेचता हूं और मुम्बई का रहने वाला हूं। लेकिन अचानक मेरे इस इंटरमू की जरूरत क्यों पड़ी?'

'तुम्हें जेसेमन के पास किसने भेजा था?'

पुलिस इंस्पेक्टर सिंह साहब ने।'

'क्या तुम उस आदमी को जानते हो जो अभी उस लड़की के साथ कहीं गया है?'

'निजी तौर पर तौ नहीं मगर जब मैं हवालात में था तो यह मेम साहब के साथ आए थे और दोनों ने मुझे हवालात से छुटकारा दिलाया था।'

'बह मेम साहब कोई ऑफिसर थीं?'

'जी हां सी० बी० आई० ऑफीसर और यह साहब उनके असिस्टेंट हैं।'

शुभांकर ने कहा- 'यहां इन्होंने अपने आपको कुछ और बताया है। तुमने इनकी मदद क्यों की? तुम्हारे और इनके जरूर कोई गुप्त संबंध हैं।'

'कमाल है साहब, संबंध होता तो मैं हवालात में क्यों होता?'

'तुम्हें जासमन के पास सिंह ही ने भेजा था ना?'

'जी हां।'

अचानक जूतों की चिरमिराहट की आवाज आई और सब ने सामने इंस्पेक्टर सिंह को खड़े देखा जो गुस्से से उसे घूर रहा था।

'सलाम साहब।' डैडमैन ने हाथ उठाकर कहा।

सिंह गुर्राया, 'मैंने तुम्हें यहां भेजा था?'

'जी हां, आप ही ने मुझे गोली मारने से पहले बताया था ना।'

'गोली तुम्हें लगी और तुम खाई में गिरकर मर गए थे। फिर जिन्दा कैसे हो गए?'

'जी...मैं जिन्दा नहीं हूं।'

'फिर मरने के बाद यहां आकर क्या कर रहे हो?' और सिंह ने शुभांकर से कहा- 'मार डालो साले को।'

'अरे साहब, आप मरे हुए को क्या मारेंगे।'

अमानक शुभांकर के एक साथी ने उसे पककर उठा लिया और दूसरे ने छः इंच के फल का चाकू उसके पेट में घोंप दिया।

'अरे साहब, क्या कर रहे हैं? मेरे शरीर में रदून तो है ही नहीं। आप अकारण मेरी खाल को बिगाड़ रहे हैं।'

वे लोग चकित रह गए क्योंकि उसके पेट से एक बूंद भी लहू नहीं निकला था। फिर अचानक उन सबने चारों ओर से चाकुओं के वार करने शुरू कर दिए लेकिन व्यर्थ। बैडमैन वैसे ही खड़ा रहा। फिर अचानक सिंह ने बौखलाकर रिवाल्वर के कई फायर उसे पर झोंक दिए। लेकिन डैडमैन खड़ा ठहाके लगाने लगा।

सिंह लड़खड़ाकर पीछे हट गया और बदमाश चिल्ला-चिल्लाकर बाहर भाग गए। काउंटर क्लर्क भी सटपटा कर पीछे हट गया। अचानक बाहर भागने वाले बदमाशों को कोई उठाकर दोबारा अंदर फेंकने लगा। चीरबों का कोहराग सा मच गया था और फिर...।

डैडमैन ने दरवाजे में से कोशिंग शंघाई को अंदर दाखिल होते देखा। पिटे-पिटाये सभी बदमाश भी कोशिंग को भयभीत नजरों से देख रहे थे।

शंघाई कोशिंग ने चारों ओर इस प्रकार देखा जैसे किसी की तलाश में हो। उसने डैडमैन की ओर ध्यान भी नहीं दिया। लेकिन काउंटर क्लर्क के पास आकर बोला-

'वह कहां मर गया?'

'कौन साहब?' काउंटर क्लर्क ने घबराए हुए पूछा।

कीशिंग ने डेविड का हुलिया बताकर कहा, 'थोड़ी देर पहले ही वह इधर आया था...कहां चला गया?'

'वो...वह तो जेसेमन को लेकर चला गया मौज मस्ती करने।'

'सुअर के बच्चे...वह सरकारी जासूस है।'

शुभांकर ने कहा- 'साहब हमें क्या मालुम!'

'उसके आने का मतलब समझते हो।' कोशिंग ने शुभांकर की आंखों में देखा और शुभांकर का चेहरा पीला पड़ गया।

'इसका मतलब है तुम उसकी असलियत जान गए हो। तुम लोग पुलिस की नजरों में आ चुके हो इसलिए तुममें से किसी का भी जिन्दा रहना खतरनाक है। तुम सब कुरल हो। और फिर कोशिंग ने आग उगलने वाला रिवाल्वर तरुन लिया। डैडमैन ने धीरे-से तीन बार जप किया।

'हरिओम।' और कोशिंग का रिवाल्वर आग उगलता ही रहा लेकिन डैडमैन पर एक भी कारी निशाना न लगा, वह, ज्यों का त्यों खड़ा रहा। डैडमैन की आंखों में से आश्चर्य झलका।

'डैडमैन ने कहा- 'मरे हुए को क्या मारोगे?'

'कौन हो तुम?'

'डैडमैन।'

कोशिंग ने फिर वही लाल गेंद जेब से निकालकर डैडमैन पर रबीच मारी जिसे बैडमैन ने हवा ही में लपक लिया। कीशिंग सन्नाटे में रह गया।'

'हां साहब, अब बोलो। ' डैडमैन ने कहा-

'तुम...तुम...वही मालूम होते हो।' कोशिंग मुस्कराया- 'यार मैंने कल भी तुमसे दोस्ती की प्रार्थना की थी।'

कोशिंग की इस एकाएक तब्दीली पर सबको आश्चर्य हुआ। डैडमैन ने कहा-

'कल मैंने तुम्हारी बात ठुकरा दी थी। सोचता हूं अब स्वीकार कर लूं...मगर मुझे बदले में क्या मिलेगा?'

'जो चाहो वही।'

'तो संभालो अपनी गेंद और हाथ मिलाओ।' डैडमैन ने गेंद उसे लौटाते हुए कहा।

कोशिंग ने हाथ बढ़ाते हुए कहा- 'तुम जरूर कोई विज्ञान की खोज की महान मशीन हो।'

'जी हां। अभी आपको ज्ञान हो जाएगा।' और डैडमैन ने कोशिंग का हाथ जकड़कर रबड़ के पुतले के समान घुमा डाला। कोशिंग के गले से आवाज तक नहीं निकली। डैडमैन ने उसे छोड़ दिया और वह खिड़की तोड़ता हुआ बाहर निकलकर किसी मशीन से खौड़े राकेट के समान हवा में उड़ता चला गया। शुभांकर और उसके साथी थर- थर कांपते रह गए।

'घवराओ मत।' डैडमैन ने कहा, 'हां तुम लोगों ने उसका साथ नहीं छोड़ा तो इससे भी भयानक सजा दूंगा।'

उन लोगों के चेहरों पर हवाइंयां उड़ रही थी। डैडमैन ने कुछ नम स्वर में कहा- जुम लोग शायद मुझे प्रेत समझ रहे हो...मगर मैं अपने वैज्ञानिक बॉसके भयानक तजुर्बे का मारा हूं। मैं विज्ञान की एक बहुत बड़ी प्रयोगशाला में असिस्टेंट था। उसने एक ऐसा तजुर्बा किया कि आदमी अमर हो जाए। बस उसने तैयार किए तरल पदार्थ का एक गिलास मुझे पिला दिया था। बस मैं पिघलकर मेरे तो गया लेकिन मेरे शरीर को सारा मांस गलकर, बह गया और मैं हडियों का ढांचा भाव रह गया। इसी कारण मुझ पर कोई हथियार काम नहीं करता इसकी विशेषता यह है कि मुझमें असीम शक्ति आ गई...दिमाग बहुत तेज हो गया। मगर मैं उस अद्‌भुत शक्ति का अनचित प्रयोग नहीं करता।'

धीरे-धीरे शुभांकर और उसके साथियों का डर दूर होता गया। शुभांकर ने होंठों पर जुबान फेरकर कहा-

'अब कोई सेवा हमारे योग्य हो तो बताइए।'

'कुछ नही...मुझे यही ठहरने दो तुम, सबकी सुरक्षा की जिम्मेदारी मैं लेता हूं। लेकिन एक वचन तुम्हें देना होगा जेसेमन के साथ जो आदमी गया है तुम उसे पूरा सहयोग दोगे और मेरा भेद तुम्हीं तक सीमित रहेगा। बस अब तम लोग जाओ।'

शुभांकर ने कहा-'एक निवेदन हमारा भी है...हमारा होटल एक खास धंधे के लिए बदनाम है।...क्या हम यह धंधा बंद कर दें? हमार गुजर इसी पर है।'

'मैं तुम्हारे उस धंधे पर कोई रोक नहीं लगाता इसलिए कि यह औरत-मर्द की कुछ आवश्यक स्वाभाविक जरूरत से जुड़ा है और अतइद काल से किसी न किसी ढंग से चालू है तुम किसी से जबरदस्ती लूटोगे नहीं।'

'हम आपके आदेश का पालन करेंगे। अग्र कोशिंग फिर इधर आ गया तो?'

'उसे मैं संभाल लूंगा और हां मुझे लगता है कोशिंग ही तुम्हारा बॉस है।'

'जी बॉस तो नहीं मगर उसका भेद जानता है।'

'तुमने अपने बॉस को देखा है?'

'जी नहीं।'

'फिर उसके लिए इस धंधे का आरंभ कैसे हुआ?'

शुभांकर ने कुछ सोचा और बोला—'वास्तव में मै इस होटल का मालिक हूं। मेरे होटल के धंधे का आपको ज्ञान है ही। एक बार एक विदेशी अति सुन्दर औरत को यहा ठहरना पड़ा। मेरी नीयत उसे देरवते ही खराब हो गई। रात को जब वह सोने के लिए! लेटी तो मैं अपने साथियों के साथ उसके कमरे में घुस गया। हम सबने जी भरकर एच्चॉय किया और इसी क्रिया- में वह मर गई। उसके सागान में उसका पासपोर्ट वीजा देखकर- हम घबरा गए।

इन भयानक अपराधों को छुपाने के लिए हमें इंस्पेक्ट सिंह जैसे घूसखोर पुलिस वालों की मदद, मिल जाती है। हम लोगों ने उसकी लाश उसे सारे सामने के साथ गहरी खाई में फेंक दी। वह औरत रात देर ले अकेली आई थी और कोई नहीं जानता था कि वह हमारे होटल में ठहरी है।

'हमने सोचा हम कानून की पकड़ से बच गए लेकिन यह हमारी भूल सिद्ध हुई क्योंकि दूसरी रात के जब केटर वह कमरा साफ करने गया तो उसी औरत की लाश पूरे सामान के साथ वहीं पड़ी मिली। वेटरचीरव मारकर भाग आया। हम सबके हाथ-पांव फूल गए कि इतनी गहरी साई में ऊंचाई से फेंकी जाने वाली लाश कैसे वापस कमरे में आ सकती है।'

'कुछ देर बाद हमें किसी अज्ञात व्यक्ति का रहस्यमयी फोन आया और कहा गया। हजार बार फेंकने पर भी लाश सामान के साथ तुम्हारे होटल में पहुंच जाएगी। लाश पर पोस्टमार्टम की रिपोर्ट भी है और दूसरे निशान भी। यह सिलसिला तब तक चलता रहेगा जब तक हम उस अज्ञात आदमी की गुलामी स्वीकार न कर ले। हमारे पास और कोई उपाय था नहीं...उसने आदेश दिया कि हम सब अपने- अपने हाथ से आलग-अलग लिखे इस अपराध के स्वीकृति पत्र एक बड़े लिफाफे में डालकर लाश के कपड़ों के साथ उसके अईने पर ररब दें और लाश को फिर साई में फेंक दें। हमने ऐसा ही किया।'

डैडमैन ने पूछा- 'उसके बाद वह लाश और सामान नहीं लौटे?'

'जी नहीं। हां, उस अन्नान रहस्यमयी व्यक्ति ने यह बताया था कि वह लाश दवाइयों के साथ हजार वर्ष तक न सड़ेगी न गलेगी अगर हमने उसका हुक्म न माना तो वह हम सबको पकड़वा देगा।'

'फिर?'

शुभांकर ने कहा, 'फिर एक दिन उसने हमें एक ऐसे खतरनाक काम का हुक्म दिया जिसे सुनकर मेरे पैरों तले से

धरती खिसक गई-उसने हमें एक विदेशी पर्यटक का फोटो भेजा जो शीतलगढ़ ने, बाला था। उस फोटो पर उस आदमी का नाम, देश और पोजीशन भी लिखी हुई थी।'

डैडमैन ने कहा- 'और वह विदेशी पर्यटक किरलोस्कर था।'

'जी हां, हमें नहीं मालूम था कि वह कैसे आएगा बस यह आदेश था कि उसे अगवा करके हम लोग उसे उत्तर में उस गफा में पहुंचा दें। हमने उस गुफा को देखा है। उसे प्राय: छुपकर आशिक जोड़े मनोरंजन के लिए प्रयोग करते हैं। रास्ता इतना खतरनाक है कि पगडंडी से जरा भी पांव फिसला तो हजारों गज गहरी खाई में गिरकर दृष्टियां सुरमा बन जाए।'

फिर क्षण भर रुककर उसने सांस लेकर कहा- 'हमारा विचार था कि वह किसी शानदार कार में आएगा फिर भी हमने बस स्टाप और टैक्सियों पर नजर रखी। वह आदमी एक साधारण बस से उतरा और उसके पास केवल एक शोल्डर बैग थी। उस समय संयोग से मैं ही बस स्टाप पर था और मैं होटल का एजेंट बनकर उसके मास पहुंच गया।

'किरलोस्वर ने स्वयं ही किसी सस्ते होटल में ठहरने की इच्छा व्यक्त की जहां मनोरंजन का प्रबंध भी हो। मैंने उसें होटल में खास कमरे मैं ठहराया और जेसेमन को उसके लिए चुना। मुझे विश्वऊ हो गया था कि मैं आसानी से उस पर हाथ साफ कर सकता हूं। जेसेमस ने किरलोंस्कर को राय दी कि कमरे की घुटन से दूर रहकर उन्हें कहीं रोमांटिक स्थान पर चलना म्माहिए। किरलोस्कर ने उसकी बात मान ली और वह व्हिस्की की बोतल और खाने पीने का दूसरा समान खेकर गुफा तक पहुंच गए। वहां पहुंचकर पहले तो उम्होंने बहुत पी। जेसेमन पीने के मामले में बड़ी धाकड़ है।

'अभी वह पूरे नशे में नहीं डूबी थी कि अचानक गुफा में बुआ-सा भर गया। दोनों ने हड़बड़ाकर भागने की कोशिश की लेकिन जेसेमन बेहोश होकर गिर गई।'

शुभांकर ने फिर ठंडी सांस लेकर कहा- 'मालुम नहीं जेसेमन न्ही बेहोशी में किरलोस्कर पर क्या बीती? बहरहाल जब वह होश में आई तो किरलोस्कर गायब था। जेसेमन ने गुफा में लाया हुआ सामान खाई में फेंक दिया और वापस होटल आ गई।

इसके बाद मुझे उस अंजान रहस्यमयी व्यक्ति का फोन मिला कि किरलोस्कार उसे मिल गया है और उसकी पहचान का सारा सामान नष्ट कर दिया गया है।'

डैडमैन सब ध्यान से सुनता रहा फिर बोला- 'इसके बाद उस रहस्यमयी व्युक्ति ने तुममेसे क्या काम लिया?'

'काम तो बहुत लिए लेकिन आरिवरी काम केरन और उसके बॉडी गॉर्ड को शीतलगढ़ से वापस भगाने का था।'

'तुम लोग वह काम न कर पाते तो क्या उसने इसके परिणाम की कोई धमकी भी दी थी?'

'हां...उस सूरत में हमें देवेन्द्र सिंह उर्फ डेविड को ठिकाने लगाना पड़ता।'

'हूं! केशिंग से उक्के संबंध का कब ज्ञान हुआ था?'

'पिछले हफ्ते उसका फोन मिला था कि उसका एक खास आदमी शीतलगढ़ पहुंच रहा है और हमें उसके आदेश पर काम करना होगा क्योंकि अब वह फोन पर कुछ नहीं बताएगा फिर उसने हमें कोशिंग का फोटो भी भिजवाया। कोशिंग ने यहां पहुंचते ही बताया कि वह होटल राक जूमें ठहरा है और जरूरत पड़ने पर हमें आदेश पहुंचा देगा।'

'क्या उसने तुम्हें आमने सामने भी कभी कोई हुक्म दिया।'

'कोई खास हुक्म नहीं, बस बराबर सम्पर्क बनाए रखा। उसके बाद आज ही नजर आया था।'

'हूं। डैडमैन ने कहा, 'ठीक है तुम लोग अपना काम साधारण रूप से चलाते रहो और अपने बॉस को मेरे बारे में कुछ गत बताना...जो आदमी जेसेमन के साथ गया है उसे भी मेरी असलियत का ज्ञान न होने पाए।'

'आप संतोष रखिए।'

डैडमैन कुछ सोचने लगा।

8

डेविड और जेसेमन पगडंडी पर आ गए थे। जेसेमन ने अपना हाथ डेविड की ओर बढ़ाकर कहा-

'अपना हाथ मुझे दो साहब, यह पगडंडी बड़ी खतरनाक है।'

डेविड ने अपना हाथ उसके हाथ में देकर कहा-

'मगर तुम इस पगडंडी पर चलकर मुझे कहां ले जा रही हो?'

'एक ऐसे स्थान पर जहां आपके एन्वॉय करने का मजा दोगुना हो जाएगा। बड़ा रहस्यमयी रोमांटिक स्थान हे।'

'तुम रोमांटिक भी होती हो?'

'साहब।' जेसेमन ने ठंडी सांस लेकर कहा—'नौजवानी में कदम रखने से पहले ही वेश्या बना दी गई थी। रोमांस को अवसर ही नहीं मिला। कभी-कभी कोई ऐसा आदमी मिल जाता है तो मन प्रसन्न हो जाता है।'

'लेकिन यह पगडंडी तो बड़ी खतरनाक है। इधर कभी कोई गिर जाने की घटना नहीं घटी?'

'नहीं साहब, कभी नही।'

'मगर तुम्हारे स्वर से तो लगता है कि तुम कुछ छुपा रही हो।'

'नहीं साहब, हमारे पास छुपाने को क्या है?'

'अच्छा...तुम्हारे साथ वह जो ग्राहक आकर ठहरा है, वह कौन है?'

'उसका नाम जंग बहादुर है, बड़ा अजीब आदमी है। कई-कई दिन खाना नहीं खाता और जब खाना मंगवाता है तो दरवाजा बंद रखता है। ड्रिंक बिल्कुल नहीं करता। वैसे बला को शक्तिशाली है वह तो आपने देख ही लिया है।'

'कभी उसने तुम्हारे साम एज्जॉय किया?'

'नहीं साहब...एकदम हनुमानजी का भक्त लंगोट का पक्का।'

वे लोग बातें करते-करते धीरे-धीरे गहराई में उतरते गए। जिस स्थान पर हवाई-दुर्घटना घटी थी वह स्थान पहाड़ियों के पीछे रह गया था। अब वह ऐसे स्थान पर थे जहां से ज्वालामुखी का मुंह नजर आ रहा था। नीले-पीले से शोले उठ रहे थे।

डेविड ने पूछा- 'यह ज्वालामुखी कभी ज्यादा आग नहीं उगलता?'

'नहीं साहब, लेकिन कहते हैं सौ वर्ष बादयह ज्वालामुखी शीतलगढ़ और आसपास की बस्तियों को दास कर देगा। कुछ देर बाद वेलोग गुफा के मुंह पर पहुंच गए।

जेसेमन ने कहा- 'यह गुफा मुझे बहुत अच्छी लगती हैं।'

गुफा के अंदर पहुंचने के लिए उन्हें थोड़ा कष्ट उठाना पड़ा। गुफा के अंदर व्हिस्की की कई खाली बोतलें और खुराक के खाली टीन के डिब्बे थे।

डेविड ने कहा- 'यही वह स्थान है जहां तुम अपने ग्राहकों को लाती हो?'

'केवल आप जैसे ग्राहकों को। देखिए कितना रहस्यमयी रोमांटिक दृश्य है।'

फिर वह बॉस्कट से व्हिस्की की बोतल और दो गिलास निकालने लगी...तो डेविड ने कहां- 'रहने दो। गिलास तुम अपने लिए निकाल तो...मैं तो बोतल ही से पीला है।'

फिर डेविड ने बोतल से एक बड़ा घूंट लिया और जेसेमन ने गिलास ऊपर तक भर लिया। फिर एक चौथाई गिलास खाली करके एक अंगड़ाई लेकर डेविड की ओर देखकर मुस्कराई।

'आप बड़े धैर्य वाले हैं बॉस।' उसने कहा, 'और कोई होता तो गुफा में घुसते ही टूट पड़ता और पहले कपड़े उतरवाता।'

'तुम्हारे साथ यह कौन आदमी था जिसके बारे में कुछ बताने ले तुम हिचकिचाई थी?'

जेसेमन के चेहरे पर एक रंग आया और गया। फिर बोली- 'आप उसके बारे में जानने के लिए! क्यों बेचैन हैं?' आप अपने काम से काम रखिए।'

'इसका मतलब है तुम्हारे साथ कोई ऐसा आदमी आया था जिसके साथ अनहोनी घंटी थी।'

'जाने दीजिए यहां ऐसी बातें आए दिन होती रहती हैं।'

अचानक डेविड ने उसे घूरकर देखते हुए कहा- 'क्या उसका नाम किरलोस्कर था?'

जेसेमन के चेहरे की रंगत बदल गई। आंखों में भय की परछाईयां उभर आई- 'वह मुझे मार डालेगा।'

'कौन? शुभांकर?'

'नहीं शुभांकर का बॉल।'

'क्या तुम उसे जानती हो?'

'उसे स्वयं शुभांकर भी नहीं जानता। शायद एक चीनी आदमी जानता है उसे केवल।'

'चीनी?' डेविड चौंक पड़ा।

'हां साहब, वह चीनी है लेकिन उसका कद हिन्दोस्तानियों जैसा लम्बा है। उसकी न भवें हैं न दाढ़ी मूंछें, एकदम सफाचट।'

'कोशिंग!'

'हां साहब...शायद यही नाम है।'

'वह होटल आता है?'

'वह साहब असली बॉस है।'

'क्या वह शुभांकर ले काम लेता है?'

'प्राय:।'

'किरलोस्कर के अगवा में उसका हाथ था?'

'साहब, मैं जिन्दा रहना चाहती हूं। मुझसे कुछ मत पूछिए।'

डेविड ने उसे सांत्वना के लिए थपैकी दी- 'तुम जिन्दा रहोगी यह मेरा वचन रहा।'

'साहब, किरलोस्कर ही मेरे साथ यहां आया था...वह किसी रहस्यमय ढंग से गायब हो गया। मैं शुभांकर के आदेश पर उसे यहां लाई थी।'

'गायब कैसे हुआ?'

'बस अचानक गुफा में सुआ भर गया। हम दोनों हड़बड़ा गए। जब मैं होश में आई तो वह गायब था।'

डेविड कुछ नहीं बोला-वह कुछ सोचता हुआ गुफा के मुंह की ओर देखने लगा। जेसेमन व्हिस्की पीती रही। धीरे-धीरे उसका नशा तेज होता गया। आखिर में बोलते-बोलते उसकी आवाज लड़रवड़ाने लगी। उसने गिलास खाली किया और भरपूर अंगड़ाई लेकर डेविड की ओर देखा। फिर डेविड के चेहरे के पास हाथ लाकर चटकी बजाई।

'ऐ साहब, उसने लडरबड़ाते स्वर में कहा- 'उधर की आग में क्या रखा है जी ज्वालामुरवी से निकल रही है। वह तो जला देगी-इधर की आग पर हाथ तापों साहब, एकदम मीठी-मीठी ठंडक महसूस होगी।'

और उसने आगे झूलकर डेविड के गले में बाहें डाल दी। अगर डेविड ने उसे बांहों में संभाल न लिया होता तो वह लुढ़क जाती। दूसरे ही क्षण वह उसकी गर्दन में झूल गई और उसके होंठों पर अपने होंठ जमा दिए। डेविड ने उसे आलिंगन में लेकर लिपटा लिया।

जेसेमन ने हांफते हुए होंठों पर से होंठ हटाकर कहा- 'साहब उतार दो यह कपड़े। साहब, यह बदन में चुभ रहे हैं।

'यहां पर बिस्तर नहीं...जमीन खुरदरी है।'

'अरे साहब अपने को इस चुभन की आदत पड़ गई है। आपको तो नर्म शरीर मिलेगा, आप तो...।'

इससे पहले कि वह आगे कुछ कहती, डेविड ने उसके होंठ चूमकर कहा- ऐसे ही ठीक है...यहां बहुत ठंडक है, तुम ऐसे ही बहुत अच्छी लग रही हो...हमें रोज कपड़े उतारने होंगे...कमरे ही में सोएंगे साथ- साथ।'

'जैसी आपकी खुशी साहब...आप जैसा मर्द तो शायद ही कभी मिला है। वरना और तो यह कोशिश करते हैं कि कपड़े तो कपड़े खाल तक उतार फेंके। आदमी भी एक जानवर ही है।

डेविड ने धीरें से उसका स्कर्ट ऊपर उठा दिया। जेसेमन के होंठों से सिसकारी निकली और वह डेविड से आकाशबेल की तरह लिपट गई।

डेविड को किसी अजनबी लड़की के मिलन में इतना आनंद अनुभव नहीं हुआ था। क्योंकि वह धंधे वाली होते हुए भी सौदा नहीं कर रही थी और भरपूर आत्म- समर्पण कर रही थी।

□□

शाम ढलने लगी-डेविड नें उठकर अपने कपड़े ठीक किए। जेसेमन गहरे खर्राटों के साथ सो रही थी जैसे सुबह से पहले नहीं जागेगी। डेविड ने बोतल से दो लम्बे घूंट लेकर उवालामुरवी की ओर देखा-उसके मुंह के पास कोई संवरा-सा मंडराता नजर आया जिसका आसमानी रंग आकाश सेनइमलता था। यह चौंक पड़ा और उसने गले में हाथ डालर्कर दूरबीन निकाल ली और आंखों पर एडजस्ट करने लगा। यह दूरबीन अंधेरे में भी विस्तुत साफ देखती थी। दूसरे ही क्षण डेविड के शरीर में सनसनी सी दौड़ गई और उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लेगा। फलामुखी के मुंह के ऊपर एक सुरमयी रंग का हैलीकाप्टर मंडरा रहा था। जो साधारण हैलीकाप्टरों से अलग था। पंरव भी बहुत छोटे थे। देखते ही देखते हैलीकाप्टर ज्वालामुखी के मुंह में उतरता चला गया फिर नजरों से ओझल हो गया।

डेविड सन्नाटे में रह गया। अगर वह ज्वालामुखी ही होता तो हैलीकाप्टर शोला बन गया होता या फिर वह किसी ऐसी धातु के मिश्रण मे बना था जिस पर आग का कोई प्रभाव नहीं होता लेकिन वह ज्वालामुखी के मुंह में होता है। क्या उस हैलीकाप्टर में कोई आदमी भी हो सकता है?

अब उसके मस्तिष्क में केवल वह काले अक्षर घूमे जा रहे थे कि जो हैलीकाप्टर के ऊपर लिखे थे। यह भाषा भी कोई ऐसी थीजिसे वह नहीं पहचान सका था क्योंकि वह शीघ्र ओझल हो गया था।

डेविड की धड़कने सीने में हथौड़े से बजा रही थीं। इसका मतलब है कि वह ज्वालामुखी का मुंह ही नहीं क्योंकि अगर सचमुच ज्वालामुखी होता तो उसमें जो कोई भी जाता पिघलकर मोम हो जाता और इस मुंह से तो नीले-पीले शोले उठते हैं। कभी-कभी शूं-शूं की आवाज भी आती है। एक बड़ी धौंकनी ही तरह यह कोई साधारण या नजरअंदाज कर देने वाली घटना नहीं हो सकती और इसी गुफा से किरलोस्कर का गुम हो जाना भी ऐसी ही रहस्यमयी घटना है। आखिर उस मुंह के भीतर है क्या? क्या यह मुंह धरती के भीतर लगी किसी गैस की चिमनी हो सकती है?

काफी देर तक आंखों से दूरबीन लगाए वह उधर ही देखता रहा। एक बार वह फिर चौंक पड़ा...लगभग पन्द्रह-बीस मिनटबाद ज्वालामुखी के मुंह से एक हैलीकाप्टर भी निकला और उसे लगा कि वास्तव में वह हैलीकाप्टर नहीं था। कोई तेजी से सनसनाती किसी लम्बी दूरी की मिसाइल थी...इसकी असंलियत जानने के लिए उसे क्या करना चाहिए? अभी वह सोच ही रहा था कि उजेले ज्वालामुखी के बिल्कुल पास की पहाड़ी में से एक भूरे रंग की चट्टान उखड़ते देखी जो हवा में उड़ती हुई सीधी गुफा की ओर आई।

डेविड दहलकर रह गया- अगर वह चट्टान गुफा से टकराई तो गुफा को तोड़ती हुई अंदर धंसती चताई जाएगी और डेविड के साथ ही जेसेमन भी कीमा बनकर गुफा की गहराई में दफन हो जएगी। अगर डेविड को जरा भी सुरक्षा का एहसास होता तो वह जेसेमन को साथ लेकर गुफा से बाहर छलांग लगा देता...अब तो अंधेरा भी इतना गहरा हो चुका था कि नीचे खत्रांग लगाने का मतलब मौत ही होता...अब सोचने और फैसला करने के लिए समय बहुत कम था। उसके अस्तिष्क में एक ही विचार आया...उसने बिजली की सी फुर्ती से जासमन को खींचकर कंधे पर डाला और बाहर छलांग लगाने का निश्चय ही कर रहा था कि उसे गुफा के मुंह के पास वही लम्बा छरहरे बदन का व्यात्कें नजर आया जिसके शरीर पर लुम्बा काला लिबास था चट्टान का व्यास गुफा के मुँह से देस गुना अधिक था और वह मिसाइल की तरह आ रही थी।

अचानक ही वह काले लिबास वाला लम्बा व्यक्ति बीच में आ गया...पता नहीं ज्या हुआ, वह गुफा की ओर उड़ती हुई चट्टान नीचे की ओर मुड़ गई और जन्नाटे की आवाज करसी हुई हजारों फुट नीचे गहराई में काफी देर बाद एक मद्धिम से धमाके के साथ जा गिरी।

डेविड का दिल बहुत जोर से धड़क उठा था।

वह काला साया सा डैडमैन अब गुफा के अंदर आ चुका था और डेविड के सामने खड़ा हुआ था।

डेविड ने भूक निगलकर जुबान होंठों पर फेरी और फंसी-फंसी आवाज में बोला- 'धन्यवाद दोस्त!'

फिर उसने जेसेमन को लिटा दिया।

डैडमैन ने कहा- 'मैं तुम्हारी ओर से गाफिल नहीं था।'

'मेरा सदेह भी ठीक था...तम्हीं जंग बहादर हो।'

'हां...इन दिनों तुम्हारा दोस्त है।'

'तब तो तुम बहुत कुछ जानते होगे।'

'किस बारे में?'

'अभी- अभी यह चट्टान किसी मिसाइल की तरह जिस पहाड़ी से निकलकर आई थी वहपहाड़ी ज्वालामुखी के मुंह के पास है।

'हां।'

'मैंने कुछ देर पहले उस आग उगलते मुंह में एक हैलीकाप्टर उतरते और एक राकेट निकलते देखा था।

'मैंने भी यह दृश्य देखा है।'

'वह सब क्या है?'

'यह मालूम करना तुम्हारा और मेरिया का काम है।'

'तुम भी अंजान तो नहीं होगें।'

'मगर मुझे आज्ञा नहीं है कि तुम लोगों की यहां तक मदद करू।'

'क्यों?'

'इसलिए कि तुम लोग अगर हर बात के लिए अज्ञात शक्ति पर निर्भर रहोगे तो तुम्हारे अपने दिमाग निन्क्रिय हो जाएंगे। तुम लोगों पर देश की रक्षा का भारी उत्तरदायित्व है। ध्यान से मिलकर सोचोगे तो जान जाओगे।'

'ओहो!'

'मगर मझे भी यह आदेश नहीं कि मैं तुम लोगों का जीवन खतरे में देखकर अपनी आंखों बंद रखूं।'

'तुम कब से होटल रूबी में हो?'

'अधिक समय नहीं हुआ। बस जहां मेरिया और तुम होगे वहां मेरी उपस्थिति आवश्यक हो जाती है क्योंकि मुम लोगों के साथ मेरे लगाव की भगवान भी अवहेलना नहीं करता।'

'क्या तुम्हें मेरिया में पहचान लिया था?'

'शायद नहीं।'

'मगर मैंने सम्हें होटल में देखते ही पहचान लिया था।'

डैडमैन ने कहा-'जेसेमन ने तुमसे मेरे बारे में काफी बातें की होंगी।'

'हां, वह तुमसे बहुत प्रभावित है। उसकी बातों ही से मैंने अनुमान लगा लिया था कि तुम्हीं मेरिया के विष्णु उर्फ डैडमैन उर्फ जंग बहादुर हो।'

‘मुझे इस लड़की से बड़ी सहानुभूति है। वह सुन्दर है और मासूम बच्ची सी लगती है।'

‘मैंने भी यही महसूस किया है...तुम अभी रूबी ही में रहोगे ना?'

‘हां, जब तक मेरिया और तुम शीतलगढ़ में हो तब तक मैं उसी होटल में रहूंगा।'

‘मेरिया को तुम्हारे बारे में कुछ बताऊं?'

‘नहीं, वह स्वयं पहचान ले तो कोई बात नहीं। मेरी उपस्थिति का एहसास उसके लिए जिस सुरक्षा का एहसास बन जाता है, वह उसे अपनी रक्षा से लापरवाह कर देता है...यह अच्छा नहीं है।'

‘ठीक है...नहीं बताऊंगा...मगर...एक बात और, तुम्हें इसी विमानों की हवाई टकराव की दुर्घटना के बारे में कछ मालूम है?'

‘ऐसे प्रश्न कृपया मुझसे न करो जिनके उत्तर मैं न दे सकूं...मुझे दु:ख होता है। अब तुम्हें अपने होटल लौट जाना चाहिए।'

डेविड ने पूछा- ‘मैं इस चट्टान के मिसाइल जैसे गोले और ज्वालामुरवी के विषय में अपनी शंकाओं को तो मेरिया से डिसकस कर सकता हूं।'

‘जरूर, तुम दोनों की मिलकर ही इस केस पर काम करना है।'

‘जेसेमन का क्या होगा?'

‘इस मैं होटल पहुंचा दूंगा इसलिएं कि वह मानसिक रूप से बहुत भोली है। अगर उससे तुम्हारा भावपूर्ण संबंध द्रृड़ हो गया तो बाद में उसके लिए मुश्किल बन जाएगी। बस...अब तुम चुपचाप आंखें बंद करके तीन बार श्रद्धा से हरिओम का जाप करो।'

'अच्छा दोस्त...धन्यवाद!’ कहकर उसने आंखें बंद करके हरिओम का जाप किया...फिर जब उसने औरब खोली तो हल्की सांस ली क्योंकि अब वह होटल राक व्यू के घोस खड़ा था।

बोझिल से कदमों से वह होटल की ओर बढ़ने लगा...वह जल्दी से जल्दी मेरिया को ज्वालामुखी और चटकी चट्टान की मिसाइल की सूचना देकर कोई कार्यक्रम तैयार करना चाहता था।

वह अभी केरन से नहीं मिलना चाहता था।

9

मेरिया अपने कमरे ही में थी और अपने खास ट्रांसमीटर पर चीफ से सम्पर्क कर रही थी...चीफ स्वयं भी उसकी रिपोर्ट की बेचैनी से प्रतीक्षा कर रहा था।

उसने चीफ को बताया कि विमानों के हवाई टकराव की दर्घटना के बारे में दर्घटना का कोई रहस्यमयी कारण वह नहीं मालुम कर सकी किरलोस्कर के बारे में उसे केवल इतना ही पता चल सका है कि वह शीतलगढ़ जरूर आया था...आगे कुछ नहीं।

'और कोई खास बात?' चीफ ने पूछा।

'जी हां...किरलोस्कर की पत्नी केरन किरलोस्कर यहतो मौजूद है उसने किरलोस्कर का पता लगानेके लिए डेविड को एगेंज कर रखा है शायद पुलिस कमिश्नर के परामर्श पर?'

'यह तो तुम्हारे लिए अच्छा है।'

'तो क्या मैं डेविड को कान्फ्रीडेंस में ले सकती हूं।'

'जरूर...वह सदा तम्हारे साथ रहा है और भरोसे का आदमी है और बहुत योग्य है।

'ओ० के० सर वैसे में यहां होटल राक जू में दूं, इसी होटल में एक संदिग्ध चीनी शंघाई कोशिग भी ठहरा हुआ है।'

'शंघाई कोशिंग!' चीफ ने चौंककर कहा, वह सिर मुड़ा बिना बाड़ी मूंछों और भवों वाला लम्बे कद वाला?'

'यस सर...इसका मतलब है उसका रिकार्ड हमारे विभाग में है।'

'हां...वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर का अपराधी अपने देश में भी वांटेड है। वह काफी समय से एक बहुत बड़ी हुकूमतें के लिए जासूसी कर रहा है।'

'लेकिन उसके पास तो अपने देश का पासपोर्ट है।'

'जाली है जो अमरीकन दूतावास के सौजन्य से मिला है।'

'ओहो! तो वह हिन्दुस्तान में आजादी से कैसे घूम रहा है?'

'क्योंकि हमारी और चीन की सरकारी के बीच अपराधियों की अदला-बदली का कोई आपसी समझौता नहीं है।'

'तो क्या उसे हमारे देश के विरुद्ध अपराध करने की छूट है?'

'हम अपने देश के अक्षर अनुसार कार्यवाहीं कर सकते हैं...मगर क्या उसने कोई बड़ा अपराध किया है?'

'जी हां...उसने भारत में स्टडी के लिए आई एक नेपाली नागरिक लड़की जिसे हमारे देश की नागरिकता भी प्राप्त है, उसे रेप करने का प्रयास किया है लेकिन आज उसने एक और अपराध किया है। कुछ देर पहले उसने केरन किरलोस्कार को गण्डों से अगवा कराने की कोशिश की है।'

'कैसे?'

'उसने एक कोबरा पालकर उसे ऐसा ट्रेंड कर रखा है कि वह आदमियों के बीच रहता है हालांकि उसके पूरे जहरीले दांत सलामत हैं उसने नेपाली फडेंट ऑऐर केरन क्रिलोस्कर को उसी कोबरा द्वारा अगवा करने का प्रयत्न किया था।'

"करने किरलोस्कर का क्या हुआ?'

'वह इसलिए बच गई कि कर्नल विकास ने बडी फुर्ती से फायरिंग करके कोबरा कोई दुम घायल कर दी लेकिन

केरन बहुत भयभीत हो गई है। उसे दौरा-सा पड़ गया है। इस अभय वह सरकारी हस्पताल में है और मैंने कर्नल विकास को उसकी सुरक्षा पर लगा दिया है।'

'तुमने ठीक किया और डेविड?'

'बह उस समय से होटल से गायब है जब मैं किरण मांधर को पुलिस स्टेशन से लेने गई थीं।'

'किरण मांधर नेपाली लड़की है?'

'जी हां, हिन्दोस्तान में हायर स्टडी के लिए आई हुई है।'

'कैसी है और उस पर क्या बीती?'

मेरिया ने विस्तार से किरण के बारे में बताते हुए उसके बचाव के संबंध में बैडमैन का जिक्र एक रहस्यमयी अजनबी के रूप में किया। क्योंकि उसके मस्तिष्क में अभी तक वह जंग बहादुर बना हुआ था यद्यपि उसे सदइह था कि वही डैडमैन है।

चीफ की आवाज आई- 'ठीक है...अब तुम उन विमानों के हवाई टकराव की इस लाइन पर छानबीन करो कि चह भयानक दुर्घटना केवल संयोग नहीं था।'

'क्या मतलब सर?'

'परिस्थितियों से यह प्रगट होता है कि वह दुर्घटना किसी विनाशकारी शक्ति ने योजना बनाकर करवाई है।'

'इस विचार का कोई स्रोत तो होगा।'

'है...दोनों विमानों के ब्लैक बॉक्स किसी रहस्य भरे ढंग से गायब कर दिए गए हैंखबकि घटना स्थल पर सी० बी० आई० और सिविल पुलिस की पार्टियां पहुंच गई थीं।

'सर...मैंने सुना है ब्लैक बॉक्स मिल गए हैं लेकिन उन्हें खोला नहीं गया।'

'हां...जो ब्लैक वापस मिले हैं उनमें से एक में राक पॉप स्टार माइकल जैक्सन की आवाज भरी है और दूसरे में मीरा बाई का भजन।'

'नहीं।'

'आपका मतलब है कि दोनों असल ब्लैक बॉक्स घटना होते ही गायब हो गए और उनके स्थान पर दूसरे नकली पहुंच गए। यह बहुत बड़ा षड्यंत्र है।'

'हां...तुम्हें इसी लाइल पर छानबीन करनी है...इस संबंध में जरूर कीशिंग की महत्वपूर्ण भूमिका है। वह अकारण तमाशा देखने नहीं गया हुआ।'

'मेरा भी यही विचार है सर...लेकिन अब तो वह फरार है।'

'कोई अंतर नहीं पड़ता...वह होगा कहीं आसपास ही। शीतलगढ़ की पहाड़ियां, गुफाएं और गहरी खाइयां अपराधियों के लिए सुरक्षित स्थान है अच्छा और कोई खास बात?'

'नहीं सर...हुई तो सूचना दूंगी, ओवर सर!'

दूसरी ओर से सम्पर्क कट गया। मेरिया कुछ देर खाली से मस्तिष्क से शून्य में घूरती रही। तभीं फोन की घंटी सुनकर बहु चौंक पड़ी और रिसीवर उठाकर बोली-

'यस।'

एक परेशान-सी आवाज आई जिसे मेरिया ने पहचान लिया। यह केरन थी।

'मिस मेरिया...मुझे बहुत डर लग रहा है।'

'आप कहां हैं?'

'बता नहीं सकती? सेल्युलर फोन पर बोल रही हूं।'

'बहां तो और लोग भी होंगे फिर डरने का कारण?'

'पता नहीं क्यों...मैं बहुत भयभीत हूं।'

'मैं आ रही हूं।' यह कहकर वह उठी ही थी कि दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक सुनकर वह चौंक गई...दरवाजे के पास आकर उसने रिवाल्वर निकाल लिया और पूछा- 'कौन?'

'डेविड!'

उसने धीमी-सी आवाज कान ली और दरवाजा खोल दिया।

डेविड के आ जाने पर मेरिया ने दरवाजा लॉक किया और डेविड ने कुर्सी पर बैठकर बोतल से एक घूंट लिया। मेरिया ने पूछा- 'दिन भर तुम कहां थे?'

'किरण के पास।'

'यहां हॉल में केरन बहुत भयभीत है।'

'मैं उसे देखकर आया हूं...मगर केरन नजर नहीं आई।'

'विकास ने तुम्हें कुछ नहीं बताया?'

'नहीं। वह भी वहां नहीं था। मगर वहां खडे घबराए लोगों ने बताया कि कोबरा ने केरन पर हमला कर दिया था...लेकिन उसके साथ बैठे विकास ने झट कोबरा पर फायरिंग कर दी...कोबरा को कई गोलियां लगीं और कोबरा का निचला धड़ जरप्यी हो गया और जल्दी से पलटकर भारने में सफल हो गया।'

'ओह...गॉड!'

'केरन बुरी तरह घबरा गई है लगता है वह दिमाग का मंतुलन खो बैठी है.. .मजबूरन मुझे उसको सरकारी हस्पताल में भेजना पड़ा। अब वह कलि विकास की बांह पकड़े उसे एक क्षगा के लिए भी अपने पास से हिलने नहीं देती।'

डेविड ने सती मांस लेकर कहा- 'शुक्र है मेरा उससे पीछा छूट गया...कर्नल विकास अब केरन के साथ ही रहेगा।'

मेरिया मुस्कराकर बोली- 'मैं तो अकेली पड गई।'

'तुम अकेली नहीं रहोगी...अब मैं तुम्हारे साथ हूं।'

मेरिया ने हल्की सांस लेकर उससे कहा- 'अभी-अभी मेरी चीफ से बात हुई थी ...उसने बताया कि तुम भी अगर शीतलगढ में हो तो मैं तुम्हें अपने साथ ले लूं...एक बात बताओ, क्या तुम सचमुच केरन के साथ केवल किरलोस्कर की ही तलाश में आए थे?'

'मेरिया। तुम तो जानती हो कि मेरी आजीविका का क्या साधन है। केरन को अपने लापता हसबैंड की तलाश थी। पुलिस कमिश्नर ने अच्छे मुआचजे पर यह काम मुझे दिलवा दिया...बस एक परेशानी है।'

'मैं तुम्हारी परेशानी समझती हूं..वह ग्क नम्बर की 'मर्दखोर' औरत है। रबैर, तुम सुबह से कहां थे? केरन की

सुरक्षा की तुम्हारी जिम्मेदारी है।'

'मैं जहां भी था तुम्हारे लिए बड़ी महत्वपूर्ण जानकारी इकट्ठी कर लाया हूं।'

'जंग बहादुर को चैक करने होटल रूबी में गए थे?'

'हां, वहां गुण्डों से मेरा टकराव हो गया और उन्हीं ने मेरी मदद की।'

'उस आदमी के बारे में कोई खास बात?'

'वह बहुत ताकतवर है...मुझे पहले ही संदह था कि वह डैडमैन है जो मैडीकल कम्पनी का एजेंट बनकर आया है...मगर।'

'मगर क्या?'

'डैडमैन तो किसी लड़की के योग्य नहीं जबकि जंग बहादर जेसेमन नाम की वेश्या के साथ रहता है?'

'ओहो वही लड़की जिसके पास इंसपेक्टर सिंह उसे भेज रहा था।'

'हां! वहे रूबी होटल का सबसे बड़ा आकर्षण है।'

'फिर क्या हुआ?'

'मैने जंग बहादुर की मदद से रूबी का मालिक शुभांकर प्रभाव अधीन कर लिया। फिर जेसेमन को अपने साथ ले गया।' डेविड ने कहा, 'मुझे यह पहले ही मालूम हो गया था कि किरलोस्कर को शुभांकर ने अगवा कराया था।'

'तुम्हें कैसे मालुम हुआ था?'

'जब मैं विमानों की हवाई दुर्धटना वाले दिन घटनास्थल स्वल पर गया था तो केरन भी मेरे पीछे वहां गई थी। तब किसी ने उसकी जेब में एक परचा डाल दिया था जिसमें उसको वहां से शीध्र चले जाने की चेतावनी दी गई थी।'

'ओह!'

'केरन ने यह भी बताया था कि अरारिवणई बार किरलोस्कर को किसी ने शक्तिगढ़ से ही फोन किया था और किरलोस्कर यही आकर गायब हो गया। इसलिए मेंने उसकी खोज की शुरुआत यहीं की...शुभांकर ने स्वीकार कर लिया है कि वह परचा उसी ने केरन की जेब में रखवाया था और किरलोस्कर के अगवा में उसका हाथ है।'

'फिर?' मोरया ने उत्सुकता से पूछा।

'जेसेमन मुझे एथ्याशी के लिए पहाड़ियों में एरक दुर्गम स्थान पर एक ऐसी गुफा में ले गई जहां से बाहर का दृश्य बहुत रोमांचक था और यह गुफा ऊंचाई पर थीनशे की हालत में जेसेमन ने यह बता दिया कि किरलोस्वार भी होटल रूबी में ठहरा था और वह उसे इसी गुफा में लाई थीयहां आकर जब वह बेहोश हो गई तौ किरलोस्कर गायब था।'

"मतलब, किरलोस्कर उस गुफा से गायब हुआ था।'

"हां और वह गुफा ज्वालामुखी के बिल्कुल सामने है जिसमें से शीतलकाल में भी आग निकलती रहती है।'

'फिर?'

'मैंने ज्वालामुखी के दहाने को दूरबीन से देखा। एक भंवरा सा मंडराता दिखाई दिखा। दूरबीन को और भी एडजस्ट करके गौर से देखने पर पता चला कि वह कोई खास प्रकार का सिलेटी रंग का हैलीकाप्टर था जिसके पैरव भी छोटे थे।'

मेरिया उछलकर बैठ गई।

'हां मेरिया, शाम के धुंधलके में वह ऐसा ही नजर आता था। कुछ सुरमयी कुछ आसमानी फिर देखते ही देखते वह हैलीकाप्टर ज्वालामुखी के मुंह में उतरता चला गया। मैं बड़े ध्यान से एकाग्र वहीं देखता रहा और कोई बीस मिनट बाद उस ज्वालामुखी के मुंह से एक राकेट सा निकला और मिसाइल की गति से उड़ता हुआ गायब हो गया।'

'ओह गॉड! इसका मतलब है ज्वाला! खी के बीच किसी ने कोई अड़ा बना रखा है।'

'फिर क्या हुआ?' मेरिया ने बड़े आश्चर्य से थोड़ा रुककर पूछा।

"फिर मौत मुझसे केवल चंद फुट के फामले से गुजर गई।'

'क्या मतलब?'

मैं देख ही रहा था कि ज्वालामुखी के साथ की पहाड़ी से एक चट्टान इस तरह उड़कर गुफा की ओर लपकी जैसे तोप में से गोला फेंका गया हो और फिर।' उसने हल्की सांस लेकर कहा- 'शायद मेरी और जेसेमन की राख भी न मिलती।'

मेरिया बोली- 'तुम तो बहुत महत्वपूर्ण जानकारी लाए हो...मतलब है वह ज्वालामुखी ही सारे फसाद की जड़ है।'

"मुझे भी यही सदइह है।' डेविड ने कहा, 'और वह विमानों के हवाई टकराव की दुर्घटना संयोगमात्र नहीं, यहीं से मानिटर हुई है।'

'तुम्हारा मतलब है...किसी रिमोट कंट्रोल दारा विमानों का सम्पर्क कंट्रोल टॉवर मे तोड़ दिया गया था जहां से उनकी उड़ान की ऊंचाई का निर्देश मिलता है और उन्दें एक ऊंचाई की लाइब पर डाल दिया यया जहां वह टकरा गए।'

'बिल्कुल और क्या सोचा जा सकता है?'

मेरिया सन्नाटे में बैठी रह गई...कुछ देर बाद उसने कहा-

'इस संबंध में कोशिंग की भूमिका भी अवश्य है।'

'मुझे भी यही लगता है।'

'वैसे भी चीफ ने बताया है, शंघाई कोशिंग अपने देश में वांटेड है। उस पर अपने देश के विरुद्ध जासूसी करने का आरोप है।'

'फिर यहां वह अपने देश के पासपोर्ट पर कैसे रुका है?'

'उसके लिए यह नकली पासपोर्ट किसी बड़ी शक्ति ने तैयार करवाया है और वह हशरे देश के लिए भी वांटेड अपराधी बन गया है। वह शायद दनिया का सबसे खतरनाक अपराधी है...बहुत कुशल षड्यंत्रकारी।'

तभी अचानक फोन का बानर बोला- यह सेलो फोन था। मेरिया ने रिसीवर रबोलकर कान से लगा लिया और बोली- 'हैलो।'

'हैलो।' दूसरी ओर से आवाज आई- 'मिस मेरिया!'

मेरिया चौंककर बोली- 'यह मेरिया हीयर।'

'तुम्हारे लिए एक सूचना...सुनो।'

मेरिया सुनने लगी।

रिसीवर पर अपनी और चीफ की वह आवाजें सुन रही थी जो आपस में ट्रांसमीटर पर हुई थीं। मेरिया सन्नाटे में रहा। गई...वह सुनती रही और उसके चेहरे के रंग बदलते रहे डविड उसके चेहरे के भावों को ध्यान से देखता रहा। उनकी आपस की बातचीत की यह रिकार्डिंग पूरी होते ही फिर पहली आवाज आई - 'तुमने सुन लिया मिस मेरिया?'

'हां सुन लिया।' मेरिया ने शांत स्वर में कहा।

‘तुम समझ गई होगी कि हमारे हाथ कितने लम्बे हैं। तुमने अपने चीफ से ट्रासमीटर पर जिस झीक्वैंसी पर बातचीत की, उसी फ्रीक्वेंसी की आवाज दूसरे ट्रांसमीटर पर कैच नहीं हो सकती मगर...हमारे पास ऐसे नए विज्ञानिक यंत्र हैं कि ख्म दुनिया के हर ट्रांसमीटर या टेलीफोन की आवाज की लहरें कैच कर लेते हैं। इसलिए हमसे किसी का कोई भेद छुपा नहीं रह सकता।'

'और कुछ?' मेरिया ने गंभीरता से कहा।

'तुम शीतलगढ़ में सी० बी० आई० ऑफिसर बनकर आई हों मगर हमें तुम्हारी असलियत मालुम हो गई है कि तुम्हारा संबंध सीक्रेट सर्विस से है।'

‘फिर क्या?'

'अगर तुमने किरण मांधर के मामले में इतनी अधिक रुचि न ली होती तो शायद हमारा ध्यान तुम्हारी ओर न जाता।'

'अब तुम क्या करोगे?'

‘केवल तुम्हारी बेबसी का तमाशा देखेंगे।'

‘मगर तुम्हारे इरादे खतरनाक मालुम होते हैं।'

‘हम जो कुछ कर रहे हैं तुम्हारे देश की जनता की भलाई के लिए कर रहे हैं...इस देश पर स्वार्थी नेताओं का राज है...हम उन सबको जनता की दृष्टि में इतना गिरा देंगे कि जनता स्वयं ही उन्हें मार-मारकर सत्ता से गिरा दे।'

मेरिया ने कहा- 'और फिर यह सत्ताधारी तुम्हारी इच्छा और तुम्हारे हितों के लिए तुम्हारे इशारों पर कठपुतलियो की तरह नाचा करेंगे। यही कहना चाहते हो ना?'

'यही समझ लो...लेकिन हमें सत्ता से बढ़कर दुनिया भर की जनता से हमदर्दी है।'

'और इसके लिए तुम गरीब, कुचली, पिसी जनता ही को निशाना बनाते हो।'

'यह तुम्हारा भ्रम है।'

'भ्रम नहीं है सच्चाई है। बहरहाल तुम अपने षड्यंत्र में अधिक सफल नहीं हो सकते। हमारे देश की जनता त्कई भलाई के लिए बहुत बार विदेशी आगे बड़े है और देश के धन को लुट-खंसोटकर ले गए हैं लेकिन भगवान साक्षी है कि हमने किसी विदेशी सरकार या उसकी कठपुतली सरकार कों अपनी भूमि पर अधिक समय तक नहीं टिकने दिया।'

'तुम प्रयास करती रहो, शायद हमें उखाड़ने में सफल हो जाओ कभी...हम तो अपनी चलाएंगे ही।'

फिर दूसरी ओर से डिस्कनेक्ट हो गया। मेरिया ने रिसीवर बंद करके हल्की सांस ली। उसकी आरके से चिन्ता झलकने लगी थी।

डेविड ने ध्यान से उसे देखते हुए पूछा- 'कौन था।'

'कोई अज्ञात रहस्यमयी व्यक्ति।'

'क्या कह रहा था?'

मेरिया ने उसे टेलीफोन पर हुई सारी बात सुनाई और धीरे से बड़बड़ाई- 'इन लोगों के इरादे बहुत खतरनाक मालुम होते हैं।'

'बह तो इस हवाई दुर्घटना ही से प्रगट हैए। अब इसमें रत्ती भर भी सदइह नहीं रहा कि यह भयानक कार्यवाही इंसानी दिमाग ही का षड्यंत्र है।

'अब तुम क्या करोगी?' डेविड ने पूछा।

'पहले तो हमें उस ज्वालामुखी की ओर ध्यान देना पड़ेगा।'

अचानक डेविड ने चौंककर कहा- 'उसने उस चट्टान के बारे में कुछ नहीं बताया जो तोप के गोले के समान मेरी ओर लपकी थी।'

अचानक सैल्यूलर फोन की घंटी बजी और मेरिया ने चौंककर रिसीवर कान से लगा लिया और कहा- 'यस।'

आवाज आई- 'मिस मेरिया, मैं तुम्हारा एक हमदर्द बोल रहा हूं।'

'बोलो।'

'इस समय डेविड साहब तुम्हारे कमरे में हैं?'

'हां...तुम कहां से बोल रहे हो और तुम्हें डेविड के बारे में कैसे ज्ञान हुआ?'

'अपने रमल ज्ञान से।'

'ओह...जंग बहादुर।'

इस नाम पर डेविड भी चौंक पड़ा...उधर से मेरिया को आवाज सुनाई दी- 'हां मैं जंग बहादुर ही हूं।'

मेरिया ने कहा- 'अभी- अभी डेविड ने बताया है कि उसकी तुमने कैसे मदद की थी।'

'वह मेरा कर्तव्य मात्र था जिसे मैं पूरी तरह निभा नहीं पाया। मैं कुछ खास बातें तुम्हें बताना चाहता हूं।'

‘तुम होटल रूबी ही में हो?'

‘ठहरा तो वहीं हूं...मगर इस समय वहां नहीं हूं...वास्तव में मिस मांधर की मदद के बाद मैं अपने आप ही इन मामलों में उलझ गया हूं...आप एक सरकारी अफसर हैं.. .मैं हिन्दुस्तानी नागरिक इसलिए इन मामलों में आपसे सहयोग करना मेरा कर्तव्य है।'

‘कहिए।'

‘कल मैंने डेविड साहब को होटल रूबी के मालिक शुभांकर के गुण्डों से बचाया।' ‘डेविड ने मुझे सब-कुछ बता दिया है।'

‘डेविड साहब के जाने के बाद उसी होटल में मेरे ऊपर चीनी शंघाई कोशिंग ने हमला किया जिसने मिस मांधर को अगवा किया था।'

'ओह...फिर।'

‘यह मेरा सौभाग्य था कि मैं उसके हमले से न केवल बच गया बल्कि उसे मारकर यहां से भागने पर मजबूर कर दिया...तब से होटल रूबी का मालिक और उसका स्टाफ मेरा मान करने लगे हैं...कोशिग उन्हें भी मारना चाहता था मगर मैंने उन्हें भी बचा लिया...कोशिग से उनकी सुरक्षा भी मेरी जिम्मेदारी है।'

‘फिर?'

‘इस घटना के बाद शुभांकर से बहुत कुछ मालुम हुआ है...डेविड ने आपको बताया ही होगा कि उस डिप्लोमैट औरत मेरने किरलोस्कर के हस्बैंड के अगवा में शुभांकर का हाथ है...मगर शुभांकर ने डेविड को यह नहीं बताया कि उसने किरलोस्कर का अगवा किसके इशारे पर किया था।'

‘किसके लिए?'

‘बह एक गुमनाम आदमी है जिसने शुभांकर को अपने जाल में फसा लिया था और उसे ब्लैकमेल कर रहा था।

‘किस प्रकार?'

‘होटल रूबी में एक सुन्दर गोरी विदेशी औरत ठहरी थी जिसे देखकर शुभांकर और उसके साथियों की नीयत खराब हो गई थी।'

‘फिर?'

‘शुभांकर और उसके साथियों ने रात भर उसे रेप किसा फलस्वरूप वह मर गई।'

'ओह...फिर?'

‘उन लोगों ने उसे सामान समेत खाई में फेंक दिया लेकिन उसकी लाल और सामान फिर वापस कमरे में पहुंच गए। उन्होंने फिर उसका सामान और लाश वैसे ही फेंक दिए...लेकिन वह फिर वापस कुमरे में पहुंच गए।'

‘माई गॉड!'

‘फिर शुभांकर को गुमनाम फोन मिला कि उस लाश और उसके सामान द्वारा शुभांकर और उसके आदमियों को फांसी पर लटकाया जा सकता है। इससे बचने का यही एक उपाय है कि वे लोग उस गुमनाम अजनबी के गुलाम बन जाएं उसकी हर आज्ञा का उन्हें पालन करना होगा।'

'ओह फिर?'

‘उस गुमनाम आदमीं ही ने किरलोस्कर को अपहरण भी कराया और उसी के आदेश पर जेसेमन डेविड को गुफा में लेकर गई थी। अब जेसेमन तो लौट आई है लेकिन डेविड लापता है। इस बात से जेसेमन बहुल घबराई हुई है।

उसने शुभांकर को बता दिया है कि डेविड भी किरलोस्कर की तरह गुम हो गया है।'

'ठहरो जंग बहादुर।' मेरियां ने कहा, 'मैं उस औरत के बारे में और भी कुछ जानना चाहती हूं जिसकी लाश बार-बार होटल रूबी में वापस आ चुकी है और जिसके द्वारा शुभांकर उस गुमनाम आदमी का गुलाम बना है।'

'जसके बारे में स्वयं शुभांकर की जाक्कारी सीमित है।'

'उसका नाम?'

'शुभांकर के अनुसार उसका नाम डोरोथी था।'

'देश?'

'इंग्लैंड।'

'क्या वह कोई वी० आई० पी० थी?'

'शुभानकर यह नहीं जौनता लेकिन होगी वह वी० आई० पी हो वरना गुमनाम आदमी उसकी लाश के प्रयोग का लाभ न उठाना चाहता।'

'अच्छा ठीक है, तुम रूबी ही में हो ना?'

'जी हां।'

'तुम यह मेरे लिए नहीं, देश के लिए कर रहे हो। इसका मुआवजा तुम्हें सरकार से भी मिल सकता है। बस इतनी रिक्वेस्ट है कि जब तक मैं न चाहूं तुम वहां से हटना मत...जितना अधिक जान सको मालूम करने की कोशिश करना।'

'जी आज्ञा मिस मेरिया।'

'मैं इसी होटल में हूं...अगर किसी समय मुझसे सम्पर्क न हो सके तो बात डेविड द्वारा बता देना। अच्छा बहुत-बहुत धन्यवाद! मेरिया ने रिसीवर रख दिया। उसकी आंखों में गहरी चिन्ता थी।

डेविड ने पूछा- 'कोई खास बात?'

'हां...बहुत खास।' मेरिया ने जंग बहादुर से हुई बातचीत दोहरा दी।

डेविड सुनता रहा। उसे मालूम था कि डैडमैन और जंगबहादुर एक ही है लेकिन उसने डेविड से वचन लिया था कि वह यह भेद मेरिया से दूर रखेगा।

मेरिया ने कुछ रुककर कहा- 'मुझे आश्चर्य है कि एक विदेशी औरत अस्ने पासपोर्ट समेत गायब हो गई और हमारे विदेशी विभाग को इसकी जानकारी तक नहीं।'

'हो सकता है वह कोई वी० आई० पी० हो।'

'वी0 आई० पी० न सही फिर भी संबंधित विभाग को उसकी खबर तो होनी चाहिए ताकि सरकार उसके दूतावास को बतार सके।'

'शायद उसके वीजा का समय अभी समाप्त न हुआ हो। समय समाप्त होने पर ही संबंधित दूतावास पूछताछ करेगा।

'फिर भी यह प्वाइंट महत्वपूर्ण है लेकिन मैं चीफ से कहूं तो वह मेरी आवाज अपने मैगा ट्रांसमीटर पर रिसीव कर लेंगे।'

'हो...सकता है अचानक ही उस अज्ञात व्यक्ति के ट्रांसमीटर ने तुम्हारी फीक्वैंसी कैच कर ली हो, अब ट्राई करके देखो।'

'ठीक है।' कहकर रिसीवर निकालकर चींफ से सम्पर्क किया- 'हैलो सर! मैं मेरिया बोल रही हूं।'

'ओहो...कुशल तो है मेरिया।'

'सॉरी सर! दोबारा डिस्टर्ब कर रही हूं।' आवाज चीफ ही की थी।

'सर! मुझे एक ऐसी अंग्रेज औरत के बारे में जानकारी चाहिए जिसका पासपोर्ट इंग्लैंड का था और नाम डोरोथी। उसके पास शीतलगढ़ को वीजा भी था।'

'उसके बारे में कोई खास बात?'

'सर! डोरोथी नाम की उस औरत का कत्ल हो चुका है और उसकी लाश सामान समेत गायब है लेकिन संबंधित दूतावास ने उसके बारे में कोई रिपोर्ट शायद कहीं दर्ज नहीं कराई।'

'ओह!'

'उसके बारे में कुछ विशेष बात एएम हुई है जिसके बारे में बाद में आपको बताऊंगी।'

'मैं पंद्रह मिनट बाद तुमसे कांटेक्ट करूगा।'

'लेकिन सर...उस ट्रांसमीटर पुर नहीं जिस पर हम सम्पर्क करते हैं।'

'क्यों?'

'उसकी आवाजें कहीं ट्रेस हो रही हैं...इसीलिए मैं सैज्यूलर का प्रयोग कर रही हूं।'

'ओ० के०।' और चीफ ने डिस्कनेक्ट कर दिया।

मेरिया ने डेविड को बताया कि उसने चीफ से क्या इंफार्मेशन मांगी है।'

डेविड ने मेरिया को बड़े ध्यान से देखते हुए पूछा- 'तुम उस औरत की लाश को इतना महत्व क्यों देती हो?'

'तुम्हें उस औरत का जो हुलिया शुभांकर च्चें सुनकर बयान किया है और जिस देखते ही उसके स्टाफ और स्वयं उसकी नीयत खराब हो गई। ऐसी औरत मे यह पश्चिमी देश विशेषतया वह पश्चिमी देश जो जासूसी का काम लेते हैं। ऐसी औरतें अपनी सुन्दरता को कैश कर सकती हैं।'

'हूं, तुम ठीक कहती हो।'

'दूसरी बात, ऐसी औरत अगर किसी फाइव स्टार होंटल में पहुुंच जाती तो उसके लिए सुरक्षा का विशेष प्रबंध करने से जासूसी का उद्देश्य समाप्त हो जाता है। उसने जान-बूझकर यह होटल चुना है...बल्कि उसे यही। ठहरने का

आदेश दिया गया है।'

'हां, यह बात तो विचारणीय है।'

'और फिर गुमनाम आदमी उल औरत की लाश का स्थानीय गुण्डे से काम लेकर भरसक लाभ उठाना चाहता है। हर षड़यंत्र में स्थानीय गुण्डों की भूमिका होती है। फिर चीफ का परामर्श भी यही था कि हमारी लाइन आफ इन्वेस्टीगेशन का केन्द्र उस हर संदिग्ध व्यक्ति या घटना की थाहें तक पहुंचकर उनकी अलग-अलग कड़ियों को जोड़ना है।'

दोनों ने एक-एक घूंट लिया और औरवे बंद करके सोचने लगे।

थोड़ी देर बाद सैल्यूलर फोन का बजर बोला और मेरिया झट रिसीवर उठाती हुई बोली।

'आ गया फोन।' फिर रिसीवर कान से जगा लिया- 'यस।'

'मेरिया इट इज चीफ।'

'यस सर।'

'डोरोथी नाम की उस औरत का नाम हमारे एक्सटर्नल अफेयर डिपार्टमेंट के रिकार्ड में है। वास्तव में उसका असली नाम डोरोथी नहीं कैथराइन है।'

'सिर...यह भेद कैसे खुला?'

'विभाग के वीजा सैक्शन से सम्पर्क करने पर जिस डोरोथी की फोटो मिली है वो स्काटलैंड यार्ड की शिक्षित एक योग्य जासूस महिला है जो ब्रिटेन के सोवियत एशिया के एक दूतावास, सोवियत यूनियन में नियुक्त थी। जहां किसी लालच में उसने अपनी वफादारी बदल ली...सोवियत यूनियन के बिखराब पर उसने सी० आई० ए० से नाता जोड़ लिया और अमरीका की सिफारिश पर ब्रिटेन ने उसके लिए निश्चित दंड क्षमा कर दिया। कुछ समय पहले वह अमरीकन डिप्लोमेट के नाते पाकिस्तान में रही। शायद वहीं उसके लिए ब्रिटिश पासपोर्ट बनवाया गया जिस पर वह हिन्दुस्तान आई है।'

'मतलब है बह वी० आई० पी० भी।'

'स्पष्ट है...लेकिन अचंभे की बात है कि इतनी चतुर औरत इतनी आसानी से कैसे मर गई और अपने विभाग कार्य में इतनी कुशल होते हुए क्या सचमुच बह स्थानीय गुण्डे उसे रेप कर पाए या कुछ हुआ ही नहीं...सब फर्जी हो।'

'सुर! स्वयं मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।'

'एक बार फिर मुझे सब विस्तार झे बताओ।'

मेरिया ने डोरोथी उर्फ कैथराइन वाली पूरी घटना के बारे में जो कुछ जंगबहादुर से सुना था सब दोहरा दिया।

'ओहो! फिर तो पक्का षदयंत्र ही है।'

'मुझे भी यही लगता है सर...क्योंकि डेविड से मिली जानकारी से इसको जोड़ा जाए तो कैथराइन की एंट्री का पोल खुल जाता है।'

'मगर उसकी लाश?'

'वह शुभांकर ने या उसके साथियों ने देखी भी थी या नहीं, यह संदेहजनक है। मुझे भी याद पड़ता है कैथराइन के बारे में मैंने सुन रखा है कि वह घंटों मुर्दो की तरह सांस रोके रह सकती है।'

'हां....यह जरूरी प्वाइंट है।'

‘बहरहाल सर...मैं इन्वेस्टीगेशन कर रही हूं...बाद में रिपोर्ट दंगी।'

दूसरी ओर से डिस्कनेक्ट हो गया और कुछ देर मेरिया शून्य में झांकती जाने क्या सोचती रही फिर डेविड की ओर देखकर बोली-‘शायद सैल्यूलर के फोन मैसेज वे लोग नहीं कैच कर पाए।'

‘ऐसा ही लगता है।'

“मगर कैथराइन के बारे में चीफ द्वारा दी गई इंफार्मेशन हमारे बहुत काम आएगी। बहरहाल तुम्हारा अब क्या प्रोग्राम है?'

डेविड ने कहा- 'अगली रणनीति अब हम दोनों को मिलकर तैयारी करनी है।'

‘ठीक है...आज रात हम दोनों मिलकर उस ज्वालामुखी की निगरानी करेंगे।'

'और दिन में?'

“तुम मिल किरण मांधर कोर अटैंड करो...मैं तुम्हें शाम को होटलें ही में मिलूंगी।'

‘केरन का क्या होगा?'

‘उसे कर्नत विकास के ऊपर छोड़ दो। दोनों एक है स्वभाव और तबियत के हैं। वैसे भी तुम्हारे सहयोग वे बाद मुझे विकास की जरूरत नहीं रही।'

‘ओ० ३०।' कहकर डेविड कमरे से निकल गया और मेरिया उसे जाते देखती हुई भी इस केस के बारे ही सोचती रही...अब उसके चेहरे से अधिक चिन्ता नहीं झलकर थी...जैसे डेविड ने उसका मानसिक भार बांट लिया हो।

10

जब डेविड हल में आया तो किरण मांधर वहां मौजूद नहीं थी...डेविड उसी समय पलटकर उसके रूम के पास आया। क्षण भर उसने दरवाजे से काम लगाकर सुन-गुन ली फिर धीरे से दस्तक दी।

आवाज 'आ जाओ।' दरवाजा केवल भिड़ा हुआ था।

डेविड अंदर दारिवेल हो गया। किरण सामने ही कुर्सी पर बैठी थी। उसका चेहरा डर से फीका पड़ा हुआ था आंखों से भी भय झांक रहा था?

डेविड ने उसके भावों से भांप लिया कि बह अकेली नहीं थी इसलिए वह भीतर ही भीतर चौकन्ना हो गया और ध्यान से उसे देखता हुआ बोला- हैलो मिस किरण।'

किरण ने थूक निगलकर कहा- 'हैलो।'

'मिस मेरिया किसी कार्यवश बाहर गई हैं, उन्होंने तुम्हें लुक आफ्यर करने की ड्यूटी सौंपी है।'

'थैंक्स।'

'मैंने सोचा, क्यों न हम लोग इकट्ठे हॉल ही में चलकरं लंच ले लें।'

'ज...ज...जी...म...म...मैं इस समय नहीं जा सकती।

'क्यों मिस किरण?'

'मेरी तबियत ठीक नहीं-म...म...मैं मजबूर हूं।'

'अच्छा...मैं आपका बाथरूम तो प्रयोग कर सकता हूं...जस्ट फार ए मिनट।'

किरण के चेहरे पर एक रंग आकर चला गया और डेविड बिना उसका उत्तर सुने बाथरूम की ओर बढ़ गया और उसने हैंडिल घुमाकर फटाक से दरवाजा खोलते ही झट बंद कर दिया और रिवाल्वर निकालकर गुर्राकर जोर से बोला- 'तुम जो कोई भी हो बाहर निकल आओ क्योंकि इस रूम के बाथरूम के नीचे फरार होने, चुपने का कोई स्थान नहीं।'

अंदर से आवाज आई- "मैं जानता हूं तुम निडर और बहादुर हो मगर बहादुर लोग हराम मौत मरना नहीं पसंद करते...बेहतर होगा कि तुम्हीं बाहर चले जाओ।'

'ओहो...शंघाई कोशिग।'

'तुम ठीक समझे।'

'यहां क्या कर रहे हो?'

'मिस किरण एक बात तो मेरे हाथों में बच निकली थी। मगर अब नहीं बच सकेगी...मैं यह भी बचन देता हूं कि मैं मिस किरण की जान नहीं भूलूंगा। केवल एक बार उनसे शारीरिक मिलन के बाद छोड़ दूंगा। मैं नहीं जानता क्यों? मगर यह भाव मेरे भीतर आग की तरह भड़क रहा है। इसके बाद तुम मुझे अपना दोस्त समझो।'

डेविड ने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया- 'तुम्हारी यह इच्छा मेरे होते हुए तो इस जन्म में पूरी नहीं होगी।'

अंदर से हल्के से ठहाके के साथ कहा गया-

'डेविड! तुम कई बार मेरे निशाने पर आस्न बच गए हो मगर जरूरी नहीं कि हर बार ऐसा ही हो।'

'केशिंग! क्या तुम उस महान अज्ञात शक्ति को नहीं जानते जो मुझे हर आपत्ति से सुरक्षित रखती है।'

'कोई ऐसी अज्ञात शक्ति नहीं है, कोशिंग ने ऐसे बहुत सारे विज्ञान के अजुबे देखे परखे हैं...हर ऐसे चमत्कार का तोड़ इंसान के दिमाग ने निकाल लिया है।'

'यह तो समय ही बताएगा, अभी तो तुम अपने हथियार फेंककर हाथ उठाए हुए बाहर निकल आओ।'

'जिस दिन कोशिंग हाथ उठा देगा वह उसके जीवन का आरियरी दिन होगा...मुझे यहां बहुत काम हैं अभी।'

'हम जान चुके हैं तुम इंटरनेशनल क्रिमिनलों हो। पहले जुम हिन्दुस्तान में आजाद थे क्योंकि हमारी और आपकी सरकार के बीच क्रिमिनल के आदान-प्रदान का कोई समझौता नहीं था। अब किरण मांधर के केस के बाद तुम यहां के कानून के लिए भी वांटेड अपराधी बन चुके हो।'

'कोशिंग किसी ऐसे कानून का पाबंद नहीं। वैसे अगर तुम यह सब केवल किरण मां को बचाने के लिए कर रहे हो तो बता दूं। वह भी तुम्हारी दोस्त नहीं है।'

किरण के चेहरे पर कई रंग आये और चले गए। उसने होंठों पर जुबान फेरकर कहा- 'फार गॉड सेक! मेरे लिए अपना जीवन खतरे में मत डालिए।'

'खतरों से खेलना तो हमारी हॉबी है मिस मांधर और कोशिग जैसे अपराधी को पकड़ना सारी मानव जाति के लिए आवश्यक है।' कहते-कहते उसने एकाएक बाथरूम के दरवाजे पर प्रबल ठोकर मारी। दरवाजा फटाक से खुल गया और तन्धण डेविड ने साइड लेकर अंदर की ओर लगातार कई फायर झोंक दिए मगर अंदर ले कोई जवाब नहीं मिला। किरण ने अंदेर देखा और उंसके गले से चीख निकली।

'वह मर गया।'

अंदर कोशिंग चारों जाने चित्त पड़ा था। उसका मुंह खुला था और होंठों के कोनों से कोई नीला तरल पदार्थ बह रहा था। खुली औरवे छत पर टिकी थी। किरणे फिर चिल्लाई- 'उसने आत्महत्या कर ली।'

डेविड को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं आ रहा था। ऐसा भयानक इंटरनेशनल अपराधी यूं चूहे की-सी मौत नहीं मर सकता। डेविड ने अंदर घुसकर झुककर उसके दिल की धड़कन सुननी चाही लेकिन उसी क्षण उसे खटी का दूध याद आ गया।

कोशिंग के सिर की सरन्त चट्टान जैसी एक ही टक्कर ने उसकी आरके के सामने अंधेरा-सा कर दिया। लेकिन डेस्सि ने अपने हवाश नहीं खोए और बिजली की फुर्ती से बाहर छलांग लेगा दी। किरण कुर्सी ले गिरकर सरकती हुई बैड के नीच पुस गई थी। अगर वह बैडके नीचे ना घुसी होती तो अवश्य कोशिग उसे ले उड़ता क्योंकि कोशिग उड़न छलांग लगाकर सीधा कुर्सी के पास था जिस पर कुछ समय पहले किरण बैठी थी। कोशिग ने झट दूसरी छलांग दरवाजे के ऊपर लगाई और जब तक ठेविलें उठता, कोशिंग दरवाजा तोड़कर बाहर जा चुका था।

डेविड उठकर उसके पीछे भागने ही वाला था कि किरण चिल्लाई- 'नहीं, मुझे अकेला मत छोड़िए।'

डेविड कुछ सोचकर वहीं रुक गया। वह जानता था कि अब इस समय तो वह केशिंग को पकड़ नहीं सकेगा। किरण जल्दी से बैड से निकल आई और डेविड से लिपटकर थर-थर कांपने लगी।

'मैं अकेली नहीं रह सकती।' उसने कांपते स्वर में कहा-'वह मेरे पीछे पड़ गया है, में हवालात या इन्वेस्टीगेशन रूम में अधिक सुरक्षित थी।'

'तुम्हें समय पर बचा लिया गया है अब मत डरी।'

'लेकिन यह संयोग था...अगर आप न आए होते तो।'

'अब ऐसा नहीं होगा बैठ चाओ।'

किरण बैठ गई लेकिन उसका चेहरा एकदम पीला हो रहा था डेविड ने स्कॉच का एक पैरा बनाकर उसकी और बड़ा दिया- 'इसे पियो, तुम्हारे अंगों में गर्मी और एनर्जी आ जाएगी।'

किरण ने एक घूंट ले लिया। डेविड ने भी अपनी बोतल से एक लम्बा घूंट लेकर ध्यान से किरण को देखा और धीरे से बोला- 'क्या सचमुच तुम स्टूडेंट हो।'

किरण चौंक पड़ी। उसके चेहरे पर एक रंग आया और गया। फिर थोड़ा सिप करके उसने कहा- 'आपको विश्वास नहीं आ रहा मेरी बातों पर।'

डेविड ने कहा-'अभी कोशिंग ने तुम्हारे बारे में कुछ कहा था।'

'हां, उसने कहा था कि मैं आपकी दोस्त नहीं हूं।'

'और मुझे लग रहा है उसने झूठ नहीं कहा था।'

'इस अविश्वास का कारण?'

'पता नहीं क्यों कीशिंग कोई तीसरे दर्जे का घटिया साधारण आतंकवादी अपराधी नहीं है। उसके प्रत्येक वाक्य में कोई सच्चाई जरूर है...वैसे भी आपका व्यक्तित्व कुछ संदिग्ध हुआ लगने लगा है। कीशिंग से यूं जुड़कर आखिर वह तुम्हारे पीछे ही क्यों पड़ा है?'

किरण कुछ नहीं बोली। डेविड ने बड़े ध्यान से उसे देखा और एक लम्बा घूंट लेकर बोली- 'हमारी जिम्मेदारी आपको कोशिंग से बचाना है...मगर उससे भी बड़ा हमारा कर्तव्य देश के कानून की रक्षा है जो सबसे महत्वपूर्ण है।'

इससे पहले कि किरण कुछ बोलती टेलीफोन की घंटी बजी। डेविड ने चौंककर फोन की ओर देरवाकिरण के चेहरे से घबराहट झलकी। रिसीवर डेविड ने उठाकर कहा—'हैलो।'

'हैलो...मिस्टर डेविड।' दूसरी ओर से आवाज आई।

'ओहो कोशिग।' डेविड ने कहा- 'तुम शायद अपनी बच निकलने की सफलता पर खुश हो।'

'नहीं, मैं तुम्हें एक भेद की बात बताना चाहता दूं।'

'बोली।'

'मैंने किरण मांधर से जो कुछ किया वह अनुचित नहीं था।'

'उचित क्या है?'

'किरण मांधर फ्राड है...उसका असली नाम किरण थापर है। अपने मुल्क में उसने बारह वर्ष की उम्र से जासूसी की शिक्षा ली है और यह अच्छी नीयत से हिन्दुस्तान नहीं आई हुई है।'

'किस उद्देश्य से आई है?'

'वह साम्यवादी देश की गुलाम है...जब से सोवियत रूस टूटा है, लोग अपने बिखरे टुक्खें फिर जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं...मिस किरण उसी उद्देश्य की एक कड़ी है...चाहे खोटी सही।'

"किस तरह।'

'वह यहां मास्को दूतावास में पश्चिमी देशों के विरुद्ध जासूसी करती है...उन देशों के भारत से संबंधों के बारे में रिपोर्टे भेजती है।'

'कुछ और?'

'शायद तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ।'

'विश्वास न करने का भी कोई कारण नहीं।'

'तो फिर सुन लो-वह तुम्हारे देश के कानून की अपराधिन है।'

'हो सकता है।'

'फिर उसको मेरे हवाले करने में तुम्हें क्या आपत्ति है।'

'यही कि हम अपने अपराधियों से स्वयं ही क्यों ना निबटें। मगर तुम उसी के पीछे इतना क्यों पड़े हो।

'यार! वह जालिम चीज ही ऐसी है कि उसे देरवकर नीयत डावांडोल हो जाती है। 'मगर तुम हमारे देश की धरती पर तो उसे पा नहीं सकते।'

कोशिग ने हल्का-सा ठहाका लगाकर फोन बंद कर दियां।

डेविड ने रिसीवर रखकर किम्ण की ओर देखा फिर घूंट भरकर बोला- 'तुम समझ ही गई होगी कि किसका फोन था और क्या कहा गया?'

"जी।'

"क्या उसने जो कहा, वह सच है।'

'जी।'

'मतलब है तुम ख्रल देश की जासूस हो और चौदह वर्ष की आयु से तुम्हें असूरी की शिक्षा मिल रही है।'

'जी हां।'

"तुम्हारा असली नाम किरण थापर है।'

'जी।'

'तुम अब तक यहां किस बात की जासूसी कर रही हो।'

'उसने आपको बताया नहीं क्या?'

'मैं तुम्हारी जुबानी सुनना चाहता हूं।'

'किरण थोड़ी देर सोचती रही फिर फीकी-फीकी-सी आवाज में बोली- 'वास्तव में मेरी पहली नियुक्ति बम्बई ही में हुई। मुझे बताया गया कि भारत में शीतलगढ़ के आसपास कोई ऐसा गुप्त अड्डा बनाया जा रहा है जहां से न केवल दुनिया के दो बड़े देशों पर नजर रखी जाए बल्कि भारत को उन देशों के भरसक निकट न जाने दिया जाए ताकि भारत कमजोर देश बना बड़े देशों पर निर्भर रहे।'

'हूं, तुम्हें क्या करप्ट था?'

'उन देशों की गतिविधियों, मण्डियों के भावों, युद्ध सामग्री की उपलब्धियों और भारी युद्ध सामग्री के गुप्त अड्डों की जानकारी की कोशिश करके रिपोर्ट भेजना, इसमें तुम्हारे देश का ही हित था क्योंकि यहां की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति लाल देश कर सकता है वह भी कम भाव पर...लाल देश के साथ भारत का आक्सी समझौता भी है।'

'हूं।'

'वैसे मैं राजनीति के बारे में कुछ नहीं जानती। केवल जो निर्देश मुझे उन लोगों से मिलता है में उसी अनुसार काम करती हूं और मेरा विश्वास भी है कि लाल देश भारत का शत्रु नहीं है...ना वह यहां कोई गड़बड़ी देखना चाहता है।'

'तुम केरन को जानती हो?'

'हां थोड़ा बहुत।'

'वह एक नम्बर की सेक्सी है और इसी से जासूसी के लिए शिकार फंसाती है। तुम्हारा छोटा-सा देश इतना .उन्नतिशील नहीं कि अपने जासूसों से सैक्स से सौदेबाजी करके गुप्त जानकारी प्राप्त करे। तुम कुछ भोली लगती हो, अगर तुम कोशिग शंघाई से न डरती तो वह तुम्हारा सबसे अच्छा मददगार सिद्ध होता। वह इतना चतुर है कि मौत के मुंह से निकल आता है?'

किरण कुछे नहीं बोली। डेविड ने फिर कहा- 'अगर तुम सैक्स को भी हथियार बना लेतीं तो एक सफल जलम होतीं तुम सूरत शक्ल से मासूम भी लगती हो।'

किरण चुप रही। डेविड ने कहा- 'मेरा पेरामर्श है कि तुम जासूसी का विचार छोड़ दो और अपने देश लौट जाओ। यह कड़ा और खतरनाक व्यवसाय है। तुम इसके योग्य नहीं हो।'

किरण की आंखें छलक पड़ी- 'मैं अब अपने देश भी नहीं जा सकती।' उसने रुधे गले से कहा-

'क्योंकि मुझे हायर करने वालों की आज्ञा का पालन न करने का मतलब है मौत-वह मुझे मार डालेंगे।'

'और तुम इस उम्र में मरना नहीं चाहती।'

'मौत से मैं नहीं डरती लेकिन उन्होंने मेरी मां को फिरौती के रूप में बंद कर रखा है।'

'इस समय वह कहां हैं?'

'मेरे देश में तो हैं नहीं।'

'तुम्हारे लिए एक ही उचित और सुरक्षित स्थान है...वह मैं बाद में बताऊंगा।'

'आपकी कृपा होगी-मैं आपका हर आदेश मानूंगी।'

'ठीक हैं, अब तुम निश्चिंत रहो।' यह कहकर डेविड ने सैल्यूलर फोन निकालकर बटन दबाया और रिसीवर कान से लगा लिया।

दूसरी ओर से हैलो सुनकर उसने कहा- 'मुझे स्पइस्टर जंग बहादुर से बात करनी है।'

'आपका शुभ नाम।'

डेविड के अपना फर्जी नाम देवेन्द्र सिंह बताने पर योल्ड ऑन की आवाज आई-और कहा गया- 'हैलो।'

'मैं डेविड हूं, तुमसे साक्षात् मिलना चाहता हूं।'

'कोई विशेष बात हो तो कहो, कहां मिलूं?'

'बहुत विशेष बात है...मैं कॉरीडोर में कमरा ३२० के सामने मिलूंगा।'

डेविड ने रिसीवर रखकर किरण की ओर देखा और बोला-- 'अब बिल्कुल निश्चित हो जाओ। तुम्हारी सुरक्षा का पक्का प्रबंध हो जाएगा।' यह कहकर वह दरवाजे की ओरें बढ़ गया।

'कहां जा रहे हैं आप?' किरण ने घबराकर पूछा।

'घबराओ मत...मैं यहां कॉरीडोर में ही हूं...तुम्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने से पहले कहीं जाऊंगा नहीं।'

डेविड बाहर निकल आया। इस समय वहां और कोई नहीं था लेकिन डैडमैन सामने ही नजर आ रहा था।

डेविड ने कहा- 'मुझे मालुम था कि तुम आ चुके होगे।'

'तुम बुलाओ और में न आऊ...ऐसी क्या प्रॉब्लम है?'

डेविड ने किरण मांधर के बारे में विस्तार से बताया और आखिर में बोला- 'मेरिया ने उसकी सुरक्षा का उत्तरदायित्व मुझे सौंपा है और किरण की सुरक्षा के लिए ऐसी जगह की जरूरत है जहां कोशिग की पहुंच संभव न हो...वह पंजे झाड़कर उसके पीछे पड़ गया है।'

'मेरा विचार है सीक्रेट सर्विस हैडक्वार्टर से बढ़कर उसके लिए कोई स्थान नहीं। क्या मेरिया से बात हुई?'

'मेरा भी यही विचार है। मेरिया से मेरी भेंट अब शाम को ही होगी। वह होटल छोड़ चुकी है क्योंकि शाम को हम लोग मिलकर ज्वालामुखी की निगरानी करेंगे।'

'क्या मैं मेरिया से बात करू?'

'कैसे?'

डैडमैन ने अपनी जेब से छोटा-सा आईना निकाला और कहा-

'इस शीशे द्वारा। इसमें मेरिया जहां भी होगी उसकी अंर्तात्मा बात करेगी जिसका उसके जागृत जीवन के भी ज्ञान नहीं होगा, उसे पता भी नहीं चलेगा।'

'ठीक है जैसा उचित समझो।'

डेविड ने आईना सामने रखकर तीन बार 'हरिओम' का जाप किया और आंखें खोलने पर उसे मेरिया की कवि नजर आई...डैंडमैन ने कहा- 'मेरिया! तुमसे एक जरूरी बात पर परामर्श करना है।'

मेरिया ने कहा- 'विष्णु तुम हो...हां बोलो।'

'किरण मांधर यहां होटल में सुरक्षित नहीं। अभी-अभी कोशिग ने उसे उठाने की कोशिश की थी...संयोग ले डेविड समय पर पहुंच गया जैर वह धोखा देकैर भाग गया।'

'ओहो!'

'शंघाई कोलिंग किरण तक कहीं भी पहुंच सकता है और डेविड ने फैसला किया है कि उसे सीक्रेट सर्विस के हैडक्वार्टर में पहुंचा दिया जाए।'

'डेविड के फैसले से मैं सहमत हुं...उस लड़की से मुझे भी सहानुभूति है।'

'ठीक है...मैं उसे वहां पहुंचा रहा हूं।' डैडमैन ने शीशे पर हाथ घुमाया और मेरिया की छवि लोप हो गई। डैडमैन शीशा जेब में रखकर डेविड सइए बौला- 'चलो किसी प्रकार उसे बेसुध करो, इसेके लिए तीन बार 'इरिओम' कहकर फूंक मारो। वह मूर्च्छित हो जाएगी। मैं बाहर हूं...उसके मूर्च्छित हो जाने पर आऊंगा।'

डेविड उसे छोड़कर अंदर दाखिल हुआ तो किरण में पूछा- 'क्या हुआ?'

'प्रबंध हो गया-तुम जल्दी से पैग खाली कर लो।'

किरण ने पैरा मुंह से लगाया और डेविड ने 'हरिओम' का मन में जाप करके उस पर फूंक दिया...जैसे ही किरण ने खाली पैग रखा, वह बेहोश होकर लुढ़क गई।

डैडमैन अंदर आकर डेविड से बोला- 'बस अब तुम जाओ...किरण अपने सुरक्षित स्थान पर इसी दशा में पहुंच जाएगी।'

और डेविड बाहर निकल आया।

11

मेरिया सबसे पहले पुलिस स्टेशन पहुंची जहां डी० एस० पी० ने उसका स्वागत किया। मेरिया ने उसके अभिवादन का शिष्टतापूर्ण उत्तर देते हुए कहा-

'मुझे इंस्पेक्टर सिंह से कुछ जरूरी काम है आप कृपया उन्हें बुला दें।'

थोड़ी देर बाद इंस्पेक्टर सिंह उनके सामने खड़ा था। उसका चेहरा पुराने रोगियों के समान मुरझाया हुआ और चिड़चिड़ा-सा हो रहा था। आते ही उसने अटेंशन होकर सैल्युट किया। डी० एस० पी० ने पूछा-

'आपकी तबियत ठीक है।'

'सर।' सिंह ने केहा- 'मैं कुछ दिनों के लिए मिसेज के साथ...।'

'जरूर जाइए लेकिन यहां इस समय जो इमरजेंसी चल रही है उसमें किसी को तुरंत छुट्टी देना संभव नहीं। फिर मिस मेरिया की ओर संकेत करके उसने सिंह से कहा-

'मिस मेरिया फ्राम सी० बी० आई०। इन्हें आपसे कुछ जरूरी काम है।'

'म...म...मुझसे!' सिंह के चेहरे का रंग बदला।

मेरिया ने मुस्कराकर कहा- 'घबराइए मत, वास्तव में हमें एक स्थानीय सिविल पुलिस अफसर की जरूरत है। आपसे बढ़कर उचित आदमी मेरे विचार में और कोई नहीं हो सकता।'

'मेरे लिए यह गौरव की बात होगी।'

'ठीक है-डी० एस० पी० साहब।' मेरिया डी० एस० पी० की ओर देरवती हुई बोली- 'मैं इन्हें साथ ले जा सकती हूं क्या?'

'बाइ ऑल भीन्ज।'

'धन्यवाद।' कहकर मेरिया सिंह के साथ बाहर निकल आई। जब वे लोग जिप्सी में बाहर निकल रहे थे तो सिंह ने क्राइम ब्रांच के डी० एस० पी० भार्गव की गाड़ी अंदर आते देखी और उसका खून खौल उठा। उसने जिप्सी को ब्रेक लगाए और मेरिया से प्रार्थना की-

'मैं आपसे चंद मिनट की इजाजत चाहूंगा।'

'जरूर।'

सिंह जिप्सी से उतरा तो क्राइम ब्रांच के डी० एस० पी० की गाड़ी पार्क हो चुकी थी। वह उतरकर अंदर चला गया और सिंह अपने क्वार्टर में।'

रंजना बीमार मुरझाई सी लग रही थी। सिंह ने रंजना से ऊंचे गंभीर स्वर में कहा- 'चलो उठो।'

'जी...कहां?' रंजना ने घबराकर पूछा।

'पूछो मत जल्दी उठो।'

रंजना ने ऐसे कपड़े पहन रखे थे जैसे कहीं जाने के लिए तैयार हो। सिंह ने कहा- 'मैं तुम्हें स्टाप से टैक्सी में बिठा दूंगा, तुम सीधा मायके जा रही हो...अभी-अभी।'

'म...म...मगर सामान और आप?'

'आता रहेगा, मैं कुछ दिन बाद आऊंगा।'

रंजना चुपचाप निकल आई। सिंह ने क्वार्टर को ताला लगाया और रंजना को जिप्सी में पीछे बिठाया तो वह मेरिया को देखकर चौंक पड़ी-काइम ब्रांच का डी० एस० पी० दूर खड़ा होंठ भींचे उन दोनों को देख रहा था।

सिंह ने ड्राइविंग सीट संभाली और मेरिया से बोला-त्रौंरी मैडम...यह मेरी पत्नी है रंजना।'

मेरिया ने पलटकर मुस्कराकर कहा- 'हैलो।'

रंजना के केवल होंठ हिलकर रह गए। जिप्सी बाहर आई। सिंह ने मेरिया से कहा- 'इनके घर से तार आया है पिता आखिरी दमों पर हैं...मैं भी साथ जाता अगर छुट्टी मिल गई होती।'

'मुझे दुःख हुआ सुनकर...मैं डी० एस० पी० से कहूंगी।'

'आपकी बड़ी कृपा हागी।'

थोड़ी देर बाद जिप्सी स्टाप पर पहुंचकर रुक गई। सिंह ने उतरकर एक टैक्सी ड्राइवर में बात की और रंजना को टैक्सी में बिठाकर नोटों की एक गड्डी थमा दी। उधर टैक्सी रवाना हुई, इधर जिप्सी फरटि भरने लगी। सिंह के चेहरे पर अब संतोष झलकने लगा था। उसने मेरिया से पूछा- 'हमें किधर चलना है?'

'जहां विमानों की हवाई दर्घटना घटी है...आपको मेंने इसलिए साथ लिया है कि आप पुलिस यूनीफार्म में हैं। आम नागरिकों को उधर जाने की आज्ञा नहीं क्योंकि रिलीफ वर्क के लिए सेना के लोग आ गए है और इंक्वायरी ऑफिसर भी।'

'जी।'

'आप मुझे प्रेस रिपोर्टर बताएंगे जिसके पास आज्ञा पत्र भी है...हां, एक उद्देश्य आपको लाने का और भी था, कुछ खास बातें करनी थीं।'

'जी क्या?'

'आपने मिस किरण मांधर के साथ एक मैडीकल फर्म के एजेंट को गिरफ्तार किया था।'

सिंह के चेहरे का रंग उड़ गया- 'क...क...कोई खास बात है?' उसने बेचैनी से घबराए स्वर में पूछा।

'आपने कहा था कि आप उनके ठहरने का प्रबंध कर देंगे।'

'जी हां...वो...वो...तो।'

'एक मिनट साइड में गाड़ी रोक लें।'

सिंह ने गाड़ी रोक ली...लेकिन उसके चेहरे से बेचैनी तो झलक रही थी लेकिन ऐसे जैसे बह कोई बहाना ढूंढ रहा हो। एकाएक इस प्रश्न ने उसका पोल खोल दिया हो। अपने विचारों में तो वह जंग बहादुर को गोलियों से भूनकर गहरी खाई में गिरा आया था।

मेरिया ने ध्यानपूर्वक उसे देरवकर पूछा- 'बताइए कहां है वह मैडीकल फर्म का एजेंट?'

'म...म...मुझे नहीं मालूम।'

'क्यों?'

'वो...वास्तव में उसने कहा था कि वह अपने ठहरने का स्वयं ही कहीं प्रबंध कर लेगा और मेंने उसे रास्ते हो में उतार दिया था।'

'कहा?'

'म...म...मुझे मालुम नहीं।'

'आपने उसे खाई के किनारे सड़क पर उतारा था।'

'न...न...नहीं।'

'उसके शरीर पर आपने तीन गोलियां दागी थीं। आपने ऐसा किया था या नहीं?' मेरिया का स्वर एकाएक कड़ा हो गया था।

'ज...ज...जी।'

'और वह जगह यही थी ना।' अचानक ही मेरिया के तेवर बदल गए- 'चलो...नीचे उतरो।

सिंह ने थूक निगलकर कहा- 'क...क...क्यों?'

'उतरी!' मेरिया गुराई। 'मैं मैडीकल एजेंट नहीं हूं एक सी० बी० आई० ऑफिसर हूं और यह भी मत समझना कि यह रिवाल्वर शोर मचाएगा। इसकी एक गोली तुम्हारे भेजे में उतारकर तत्क्षण तुम्हें अमर शांत कर देगी।'

'म...म...मगर...।'

'सिंह, मैं तुम्हें वहीं भेज रही हूं जहां तुमने उस मैडीकल एजेंट के ठहरने का प्रबंध किया है। उसका कोई प्रमाण नहीं इसलिए तुम्हें सजा नहीं मिल सकती। इसलिए उस अपराध की सजा मैं तुम्हें देने पर मजबूर हूं।'

अचानक सिंह कोहनी में सिर छुपाकर रोने लगा और रोते-रोते बोला- 'मार डालिए, सचमुच मुझे मार डालिए...जिस मानसिक तनाव में से मैं गुजर रहा हूं उससे मर जाना ही बेहतर है।'

मेरिया रिवाल्वर ताने ही उसे देखती रही। कुछ देर बाद सिंह ने आंसू पोंछे और गाड़ी से उतरकर गाड़ी के किनारे खड़ा होकर भारी आवाज में बोला- 'मारिए गोली, जल्दी कीजिए।'

मेरिया ने हल्की सांस ली और बोली- 'वापस आ जाओ।'

सिंह मुड़ा लेकिन वहीं खड़ा रहा। मेरिया ने कुछ मद्धिम स्वर में कहा- 'मेरा हुक्म है वापस आ जाओ।'

सिंह चुपचाप लौट आया लेकिन उसके आंसू निकले पड़ रहे थे। मेरिया ने उसे ध्यान से देखकर पूछा।

‘तुम अपने जीवन से तंग क्यों आ गए हो।'

‘जी।' सिंह ने भारी आवांज में कहा- ‘कुछ बातें ऐसी होती हैं जो बाहर वालों को नहीं बताई जातीं।'

‘मगर मैं तुम्हारी अंदर की बातें जानती हूं...तुम अपनी पत्नी की बेवफाई से परेशान हो।'

‘म...म...मैं।'

‘घबराओ मत...मैं कोई ज्योतिष विद्या नहीं जानती। हां, यह मैडीकल फर्म का एजेंट जिले तुमने गोलियां मारकर अपने विचार अनुसार मार डाला था वह मरा नहीं था केवल खाई में गिरा था। उसे एक भी गोली नहीं लगी थी। वह इस गलाके को जानता था। एक पेड़ की मजबूत शास से लटकगया था। जब तुम चले जाए तो वह वापस ऊपर चढ़ आया।'

सिंह हक्का-बक्का रह गया। मेरिया मे कहा- ‘तुम इसलिए उसे मारना चाहता थे कि वह रमल ज्ञान का ज्ञाता था और उसने तुम्हें बता दिया था कि उस समय तुम्हारी अनुपस्थिति में तुम्हारे घर में क्या हौ रहा था और सभी से तुम अपनी पत्नी की ओर से परेशान थे और क्राइम ब्रांच के उस डी० एस० पी० से पूणा करते हो।'

सिंह केवल होंठों पर जुबान फेरकर रह गया।

मेरिया ने फिर कहा- ‘लेकिन कभी तुमने गहराई से यह बात सोची है। अपनी इस परेशानी के जिम्मेदार स्वयं तुम ही हो और तुम्हारी लूट-खसोट की लज्जाजनक कहानी भी मैं जानती हूं...इसी भयानक दुर्घटना में तुमने कितनी लाशों की जेबों साफ की औरतों के जेवर उतारे।

'खैर, यह तुम्हारा निजी मामला है...लेकिन सोचो...यह ऊपर की कमाई, तुम अपनी अंर्तात्मा ही नहीं अपना देश बेचकर करते हो। इन अपराधों की सजा तो तुम्हें एक दिन मिलनी ही है। तुम देशद्रोही हो।'

‘ज...ज...जी मैं देशद्रोही नहीं...हां कुछ भूलें मैंने की हैं।'

‘मिस्टर सिंह! तुम तुम रूबी होटल के मालिक शुभांकर से हफ्ता लेते हो। वह अपने होटल में पेशेवर औरतें रखकर उनसे धंधा करवाता है...उसने एक विदेशी औरत डोरोथी के आपके साथ मिलकर रेप करके मार डाला था और उसकी लाश खाई में फेंक दी थी...डोरोथी ने अपने यहां पहुंचने की सूचना पुलिस में दी होगी मगर तुमने उसका पन्ना ही फाड़ डाला होगा।'

‘म...म...मैं...।'

‘डोरोथी की लाश द्वारा न केवल शुभांकर ब्लैकमेल हो रहा है मगर तुम भी ब्लैकमेल किए गए। अब जुम कुछ विदेशी जासूसों की मद्द करने के लिए मजबूर हो, बदले में तुम्हें मोटी रकमें मिलती है।'

‘म...म...मैं अब आपसे क्या छपाऊं?'

‘तो तुम्हें अपना अपराध स्वीकारं है।'

‘जी हां...मैं अब सजा पाने पर ही इस घुटन की जकड़न और आत्मग्लानि से मुक्ति पाऊंगा।'

'सजा तुम्हें मिलेगी...मगर दूसरे रूप में।'

‘कैसे?'

‘तुम अपने आपको वादा माफ गवाह स्वीकार करके अपने आपको सैंट्रल इंटेलीजेंस का मददगार बना लो... लेकिन इसकी खबर डी० एस० पी० को भी न हो।'

‘जी...मुझे स्वीकार है...यह मेरा सौभाग्य होगा।'

'तो फिर मुझे बताओ, तुम्हें किस विदेशी जासूस से रकमें मिलती हैं।'

'जी यह वही क्राइम ब्रांच का डी० एस० पी० है।'

'कहीं यह बात तुम आपसी द्वेष के कारण तो नहीं कह रहे।'

'जी नहीं, वह मेरी कमजोरी जानकर ही मेरी पत्नी से...।'

'वह तुम्हारा अपना मामला है। मुझे बताओ क्या वह पहिले ही से विदेशियों से मिला हुआ है।'

'जी...शत-प्रतिशत।'

'वह इस हवाई दुर्घटना से पहले भी यहां था।'

'जी हां और दुर्घटना स्थल पर सबसे पहले पहुंचने वाला भी वही था।'

'अब तुम्हें एक खास और जरूरी सवाल का जवाब देना है और झूठ नहीं बोलना।'

'जी...झूठ बिल्कुल नहीं बोलूंगा।'

'दोनों विमानों के ब्लैक बॉक्स दुर्घटनाग्रस्त होते ही बदल गए हैं, असल बॉक्स कहां गए?

'जी...मुझे विश्वास है यह काम भी डी० एस० पी० ही का है।'

'उसका कोई गुप्त ठिकाना भी है?'

'जी हां, यहीं पहाड़ियों के चल में बहुत लुका-छिपा सुरक्षित है और वहां पहुंचने का खुफिया रास्ता भी है।'

'मुझे गाइड करो, मैं वहीं जाना चाहती हूं।'

'मैडम! मुझे खुशी होगी अगर मैं उसे गिरफ्तार कराने में सफल हो गया तो। भले ही मुझे मौत की सजा हो जाए।'

'तुम्हें कुछ नहीं होगा...क्योंकि तुम अब हमारे गवाह हो।'

थोड़ी देर बाद जिप्सी फराटे भरने लगी...ड्राइव सिंह ही कर रहा था और उसके चेहरे से जोश और खुशी झलक रही थी।

12

जिप्सी एक ऐसे स्थान पर पहुंचकर रूक गई जहां से न सड़क से उसे देखा जा सकता था न पहाड़ियों पर से।

मेरिया सिंह के साथ पतली और दुर्गम पंगडंडी पर से होती हुई उसी गुफा में पहुंच गई जहां डेविड जेसेमन के साथ आया था। सिंह ने कहा- 'यही गुफा उन लोगों का खास अड्डा है।'

'और किरलोस्कर जेसेमन के साथ यही आकर गायब हुआ था।'

'जी हां।'

'क्या तुम्हें ज्ञान है कि कल भी जेसेमन किसी की साथ लेकर यहां आई थी।'

'नहीं...वह लोग मुझे केवल बहुत जरूरी बातों की खबर देते हैं।'

"तो डी० एस० पी० क्राइम ब्रांच का यह खास अड्डा है?'

'जी हां।'

'मगर मैंने सुना है कि यह गुफा एय्याशी के लिए काफी रोमांटिक है इसीलिए इसे जेसेमन और दूसरे लोग प्रयोग करते हैं...लेकिन यहां ऐसा कोई खुफिया रास्ता तो दिरबाई नहीं देता।'

'है एक रास्ता...आइए मेरे साथ।'

सिंह गुफा के आखिरी भाग में चला गया जहां वह अंदर हाथ डालकर कुछ टटोलने लगा और फिर...दिल हिला देने वाली एक चीख मारकर वह उछला और पीछे आ गिरा। मेरिया के हाथ पहले ही रिवाल्वर पर थे। वह एकाएक चौकन्नी हो गई।

सिंह बुरी तरह तड़प रहा था। उसके मुंह से नीला-नीला-सा पानी बह रहा था। मेरिया ने चौंककर देखा-वही कोबरा वहां फन उठाकर कुण्डली मारे बैठा था। देखते ही देखते सिंह के शरीर कार मांस पिघलकर बह गया और वह कैवल हड्डियों का ढांचा रह गया।

मेरिया के माथे पर पसीना आ गया। फिर अचानक उस कोने में से एक ऐसा पत्थर सैरक गया जो गुफा ही का भाग दिखाई दे रहा था। अब वहां पर एक ऊंचा गोल दरवाजा सा प्रगट हो चुका था और दरवाजे में ही डी० एस० पी० क्राइम ब्रांच खड़ा नजर आया। उसके होंठों पर मुस्कराहट थी।

'बैल्कम मिस मेरिया।'

मेरिया भी अचानक मुस्कण पड़ी और बोली- 'थैंक्यू शंघाई कोशिंग।'

कोशिंग ने हल्का-सा ठहाका लगाप्ता- 'तो तुमने पहचान लिया...मैं ही केशिंग हूं।'

'संदेह तो मुझे पहले ही था...शायद इसीलिए तुम सफाचट रहते हो कि आसानी से अपने चेहरे पर नकली चेहरा चढ़ाकर ररब सको। फिर थोड़ी पैडिंग करके आसानी से डी० एस० पी० क्राइम ब्रांच बन गए होगे?'

'स्पष्ट है।'

'और असली डी० एस० पी० परलोक में होगा।'

'यह भी स्पष्ट है।'

'फिर तो असली ब्लैक बॉक्स भी तुम्हारे ही पास होंगे मगर थोड़ी देर पहले तो तुम पुलिस स्टेशन पर थे।'

कोशिग ठहाका लगाकर बोला- 'कोशिम के लिए यह कोई असाधारण बात नहीं। यह गधा सिंह यह नहीं जानता

था कि इसके कंधे के एक स्टार में ट्रासमीटर फिट था। दूसरे में एक छोटा-सा आडियो वीडियो जिसकी बातें और आवाज यहां रिकार्ड होते रहते थे। इसने तुम्हें जितना बयान दिया उसकी आडियो वीडियोग्राफी यहां मौजूद है।'

'खूब!'

'मैंने बहुत पहले ही पुलिस स्टेशन छोड़ दिया था क्योंकि मुझे अनुमान हो गया था कि यह मूरर्व तुम्हें लेकर यहां पहुंचेगा और यह पहाड़ियां मेरे लिए ऐसी हैं जैसे छोटे-मोटे टीले।'

'मैं जानती हूं तुम्हारे असाधारण गुणों को।' उसने मुस्कराते हुए अप्रिय व्यंग्य से कहा था।

कोशिंग ने फिर ठहाका लगाया और बोला- 'तुमने मेरे गुण देखे ही कहां हैं। अच्छा हुआ तुम यहां आ गई...मुझे अपने गुण दिखाने का अवसर दिया।'

कहते-कहते उसने आरव मारी मेरिया का दिल जोर से धड़का लेकिन उसने अपने चेहरे से कोई ऐसा भाव झलकने नहीं दिया। अगरचे वह बिना हथियार भी दस-पन्द्रह गुण्डों के लिए काफी थी लेकिन कोशिंग उन सबसे अलग था।

उसने भी मुस्कराकर कहा- 'मैं पहले उन दो बॉक्सों के बारे में जानना चाहूंगी जो इस हवाई दुर्घटना में तबाह होने के बाद तुम्हारे कब्जे में आ गए गए थे और उनकी जगह तुमने नकली ब्लैक बॉक्स ररब दिएयह काम तुमने नकली डी० एस० पी० बनकर ही किया था?'

'हां...वह ब्लैक बॉक्स नीचे तहरवाने में है...आओ देख लो...मेरे साथ अंदर चलते हुए तुम्हें डर तो नहीं त्मोंगा।'

'डर और मेरिया।' हल्का-सा ठहाका लगाकर कहा- 'दोनों विपरीत बातें हैं।'

'मेरे पीछे चली आओ...चिन्ता मत करो...अपना रिवाल्वर साथ रख सकती हो।' 'धन्यवाद।'

कोशिंग उस गोल दरवाजे में दाखिल हो गया। मेरिया उसके पीछे थी। अंदर आक्सीजन का अभाव नहीं था। लगता था एयर कंडीशंड है...सीढियां पहाड़ को काटकर बनाई गई थीं...मेरिया ने उतरते हुए कहा- 'काफी तैयारी के बाद तुम लोगों ने इस वीराने को आबाद किया है। इस कंस्ट्रक्शन में महीनों लग गए होंगे।'

'जगभग पांच वर्ष। लेबोरेट्री है ना।'

जहां वे लोग रुके वह हमवार थी लेकिन घुष्प अंधेरा था। मेरिया किसी भी आकस्मिक हमले के लिए अपने आपको पूरी तरह से तैयार कर रही थी। उसे कथन पर भरोसा नहीं था। अंधेरे में कोशिंग की आवारन गूंजी- 'मुझे मालूंम है तुम अंधेरे में भयभीत हो मगर घबराओ नहीं...कीशिंग जाल में फंसे शिकार पर बेखबरी में हमला नहीं करता।'

फिर अचानक अंधेरा चांदनी में परिवर्तित हो गया। क्षण भर के लिए मेरिया की आंखें चुंधिया राई। उसने जल्दी से चारों ओर देरवकर निरीक्षण किया।

यह कमरा अच्छा-खासा रिहायशी था जिसमें फर्नीचर भी था, टी० वीर भी फोन भी। किचन का सामान भी और साइड में एक लेबोरेट्री भी।

टी० वी० के पीछे एक बहुत बड़ा बोर्ड लगा था जिस पर छोटे-बड़े विभिन्न रंगों के स्विच लगे थे और प्लग भी। मेरिया ने यह सब आराम से देखा। कोशिंग ने कहा-

'क्या यह सब देरवकर तुम्हें आश्चर्य नहीं हो रहा?'

'बिल्कुल नहीं।' मेरिया ने कहा- 'हां, यह सब अगर मैं किसी और के साथ देखती तो जरूर आश्चर्य होता...मेरा विचार है यह बिजली कृत्रिम है।'

'यह तो जैनेरेटर से पैदा होती है...क्या तुम्हें जैनेरेटर की आवाज नहीं सुनाई दे रही?

‘जैनेरेटर किसी दूमरी गुफा में भी हो सकता है और पावर को केवल द्वार द्वारा लाया जा सकता है। फिर भी लगता है कि रोशनी बिजली का प्रबंध कोई नई ईजाद है साइंस की।'

‘तुम सचमुच बहुत तीव्र बुद्धि महिला हो मिस मेरिया।'

‘कोशिंग मैं यहां वह रिजनल ब्लैक बस देखने आई हूं, अपनी प्रशंसा सुनने नहीं। मुझे ब्लैक बॉक्स की आरिवरी आवाजें सनाओ।'

कोशिंग ने एक बड़े से सेफ से एक ब्लैक बॉक्स निकाला और बोला- ‘लो, पहले एयर इंडिया के ब्लैक बॉक्स की आवाज सुनो और फिर आवाज आने लगी।

‘मैं एयर इंडिया के बोइंग ७०७ का पायलट बोल रहा हूं...मेरा कांटेक्ट कंट्रोल टॉवर से टूट चुका है और मुझे नहीं मालूम कौन सी चुम्बकीय आकर्षण शक्ति है जो विमान से एक ओर खींचे जा रही है। मैंने शीतलगढ़ खी आबादी को बचा लिया है...मगर आश्चर्यजनक ढंग से स्वयं ही विमान का इंजन जाम हो गया है।' फिर एक भयानक धमाका हुआ और एकाएक आवाज बंद हो गई।

मेरिया ने यह सब बातें अच्छी तरह दिमाग में जमा ली।

कोशिंग ने मुस्कराकर पूछा- 'सुन लिया।'

'हां।' मेरिया ने कहा- 'मगर इसमें कोई खास बात नहीं।'

'इसलिए कि यह तुम्हारे देश केई विमान का ब्लैक बॉक्स था। अब दूसरे विमान की आवाज सुनो।'

फिर आवाज आने लगी-यह बिगड़ी हुई अंग्रेजी में थी क्योंकि यह विमान दूसरे देश का था। शुरू में तो वही बयान था जो एयर इंडिया के विमान के ब्लैक बॉक्स में था फिर आखिरी भाग सुनकर मेरिया चौंक पड़ी।

'ओहो...मेरा प्लेन आश्चर्यजनक रूप से एक ओर खिंच रहा है...डैशबोर्ड इंण्डीकेटे कर रहा है कि आसपास कहीं बड़ा कोई चुम्बकीय सिस्टम मौजुद है। उससे स्वयं ही प्लेन का इंजन जैम होकर रुक गया है और अब यह विमोन दूसरे विमानें से टकरा...' बिना वाक्य पूरा हुए धमाका हुआ और आवाज बंद हो गई।

मेरिया ने कोशिंग की ओर देखा।

'क्यों?' कोशिंग मुस्कराया। उसने कहा- 'इसमें कोई खास अनोखी बात सुनाई दी?'

'हां।' मेरिया ने कहा- 'बह अनोखी खास बात यहीं आसपास कहीं मौजूद है।'

'तुम्हारा अनुमान सही है।'

'बह भी ऐसी ही किसी का में कोई बहुत बड़ी लेबोरेट्री।'

'यही समझ लो।'

'लेबोरेट्री कहो या ऐसी भयानक प्रयोगशाला जिसमें कोई सिरफिरा सायंसदान उड़ते हुए जहाजों को आपस में टकराने का तजुर्बा करके हजारों निर्दोष यात्रियों की जानों से रवेल रहा है।'

'तुम्हारा ख्याल ठीक है।' कोशिंग ने कहा- 'मगर इन हजारों निर्दोष से महत्वपूर्ण महान देश होता है। यह प्रयोग वही देश कर रहा है जिसके पास अब इतना बड़ा विनाशकारी हथियार है कि किसी भी युद्ध में शत्रु के लड़ाकू विमानों को आपस में टकराकर बर्बाद कर दिया जाए तो युद्ध कितनी जल्दी जीता जा सकता है क्योंकि वर्तमान युद्ध में हार जीत भयानक शस्त्रों की उड़ान शक्ति पर निर्भर होती है। किस तेजी से विभिन्न एटमी गर हैड पहुुचाए जा सकते हैं।'

'तुम ठीक कहते हो। केशिंग। यह खुला पागलपन है ना। केवल युद्ध की सफलता कें लिए नहीं बल्कि उस प्रयोग की परख के लिए करोड़ों आदमियों की बलि और भी बढ़कर सम्पत्ति का विनाश हो...ऐसे तो इंसान का नामो-तिशान ही धरती से मिट जाएगा क्योंकि दूसरा देश पहले देश से बढ़ने की छोड़ में लग जाएगा। युगों से संजोई सभ्याताओं का नाम निशान नहीं रहेगा।'

'नहीं मेरिया! दुनिया का हर शक्तिशाली देश नशीला हो जाता है...शक्ति बहुत बड़ा नशा है। वह मानसिक हो 'या शारीरिक वह इंसान को कुछ ऐसा विभोर कर देती है कि उसकी व्याख्या नहीं की जा सकती। दूसरे को अधिक पीड़ा पहुंचाने का आनंद अंग्रेजी में इसे सैडिस्ट कहते हैं। कहते हैं शहंशाह ने जब विजय प्राप्त की तो उसने मरे सिपाहियों की खोपड़ियों पर बैठकर शराब पी थी पुराने कबीलों को देरके दुश्मनों की खोपड़ियों की घर में सजावट करते हैं...जीतते हैं तो उनका लहू पीकर नाचते और जश्न मनाते हैं। जब हिटलर अपने खतरनाक वैज्ञानिक ढंगों और शस्त्रों से विजय पर विजय प्राप्त करता जाता तो उसने गैरा चैम्बर बनाए जिसमें असंख्य यहूदियों को, औरतों, बच्चों, बूढ़ों को बंद करके जहरीली गैस छोड़कर मार डाला जाता था। विजय का नशा।'

'तुम भूल रहे हो कोशिंग...तुम्हारे सामने जो औरत खड़ी है वह भी इसी देश की नागरिक है और वह देश की सुरक्षा के जिम्मेदार विभाग सीक्रेट सर्विस की सदस्य है... इसलिए आज तुम्हारे सामने खड़ी है।

'तुम जिस सत्ता और कुर्सियों के भूखे लोगों की बातें कर रहे हो वह लोग तो आते-जाते रहते हे। मगर हम जिस दिन अपनी ड्यूटी संभालकर शपथ लेते हैं उसे मरने तक निभाते हैं।'

कोशिंग ने ताली बजाकर कहा- 'मुझे तुम्हारी कर्तव्य परायणता पर खुशी है लेकिन बाकी नेता मिट्टी के माधो हैं।'

'हर देश की यही स्थिति है...जरूरी नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति पक्का देशभक्त हो... तुम अपने गिरेहचान में झांको...धिक्कार है ऐसी अमानवीय देश सेवा पर।'

'मिस मेरिया! मैं तर्क में नहीं पड़ना चाहता...लेकिन मैं जो कुछ हूं एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। प्राणी का पहला द्वेष उसकी छोटी-सी दुनिया 'मां की कोरक' होती है। मैं जब मां की कोख ही में था, मेरे ही देशवासियों ने मेरी मां की कोख में इतंनी गंदगी उडेली कि आज तक उसके छींटे मेरे शरीर और मेरी आत्मा पर हैं।'

मेरिया सन्नाटे में खड़ी सुन रही थी।

कोशिंग ने थोड़ा रुककर कहा- 'मेरी मां से मेरा पिता बहुत प्यार करता था। स्तब यह घटना घटी मेरे पिता ने मां को घर से निकाल दिया। मां बहुत रोई-पीटी लेकिन पिता का दिल नहीं- पसीजा। भला इसमें उस बेचारी का क्या दोष था। वह पागल सी हो गई। मेरे जन्म के बाद मेरे पालन-पोषण के लिए मेरी मां को अपना शरीर बेचना पड़ा। बड़ी होने पर मैंने मां के अनेकों रूप देरवे। कभी वह मेरे सामने ही कपड़े उतारकर ग्राहक के साथ लेट जाती। हर रोज उसके बिस्तर पर कोई नया ग्राहक होता।

'शुरू-शुरू में तो मेरी समझ में यह सब नहीं आया लेकिन बाद में जब बोध हुआ तो मुझे मां से पूणा, सरन्त पूणा-हो गई। वह उन लोगों के लिए शराब भी लाकर रखती।

'एक दिन मैंने स्वयं बहुत सारी शराब पी ली और अपनी मां के साथ सोए एक ग्राहक का गला घोंटकर लाश दूर गदई नाले में डाल दी। दूसरे दिन भी यही किया। में चार दिन तक इसी क्रिया को दोहराता रहा। हार वह लाशें अलग-अलग जगहों, मदों में, खाइयों, गइढों में या रेल लाइनों पर पाई गई। फिर एक रात मां जब स्वयं होश में थी उसने मुझे एक बूढे ग्राहक का गला घोंटते देरव लिया और वह डर गई।

'दूसरी सुबह उसने मुझे बताया कि यह सब उसे क्यों करना पड़ता है। उस दिन से मुझे मां से सहानुभूति हो गई। उसने बताया कि यह सब वह मेरे लिए ही करती है। इससे मेरे भीतर की पीड़ा दूर नहीं हुई...कुछ दिन के लिए मां ने धंधा बंद कर दिया-मैंने सोचा घर से भाग जाऊं, भला बन जाऊं लेकिन ऐसे लोगों जो अबला का शोषण करते हैं सजा तो मिलनी ही चाहिए।

'एक दिन जब मां का एक ग्राहक केवल चंद रुपये फेंककर नशे में धुत्त लौटा तो मैं उसके पीछे लग गया। छोटी आयु में ही ऐंगुण्डा बन गया था...जब वह सो गया तो मैं चुपके से छुपकर उसके घर में घुस गयाबह एक अलग कोठरी में था...मैंने उसका मुंह बंद करके उसे एक सष्ये के साथ बांध दिया...दूसरी कोठरी में उसकी जवान बेटी, अधेड़ पत्नी और बूढ़ी मां सो रही थी।

मैं सावधानी से चुपके-चुपके पहले उसकी बेटी को उस कमरे में लाया और उसे रेप किया, यही हरकत मैंने उसकी पत्नी और मां के साथ भी की...वह आदमी तड़पा, बिलबिलाया लेकिन अपने--आपकी आजाद नहीं कर सका।' मैंने उसके मुंह पर चूका और चला गया।

'फिर मैं यह शहर ही छोड़कर भाग गया...बहुत दूर भेष बदलकर जगह-जगह जाता...अब मुझे औरतों की इज्जत लुटने में एक अनोखा आनंद झहसूस होने लगा... बच्ची, जवान, बूढ़ी कोई अंतर नहीं लगता, तरस नहीं आता मुझे यह अनोखी हिंसक प्रतिक्रिया थी।

'मैं कानून और समाज का अपराधी था। पुलिस ने मुझे पकड़ने को बहुत प्रयास किया। इनामों की घोषणा भी की लेकिन अब मैंने एक खतरनाक गैंग तैयार कर लिया था। हम लोग बहुत चौकन्ने थे। हमने कई पुलिस वालों को भी मार डाला...गोली बारूद सब उपलब्ध हो जाता था। में अपने काम में बहुत चतुर हो गया...भगवान ने दिमाग तो दिया था...स्वयं बारूद भी बना लेता, हथियार भी बना लेता।

अचानक ही मेरी भेंट अपने हीदेश के गुप्तचर विभाग के एक प्रवीण उच्च कर्मचारी से हो गई जिसे मुझ जैसे, आदमियों की जरूरत थी जो विदेशी जासूसों की गतिविधियों का ब्यौरा इकट्ठा करें और काउंटर एस्पियोनन, शुरू किया जाए-हां यहां मैंने-बड़ी लगन और ईमानदारी से बड़े-बड़े षड्यंत्रों का पता लगाकर अपने विभाग के प्रमुख अधिकारियों का विश्वास जीत लिया और अपने पहले किए गए सारे अपराधों से मुझे मुक्त कर दिया गया।'

इतना कुछ बताकर कीशिंग ने वोदका का लम्बा घूंट लिया। उसके होंठों पर चतुर लेकिन बहुत पैनी दृष्टि वाले ऐसे व्यक्ति की झलक थीं जो साधारण मिट्टी के ढेले से समय के दबाव, ठुकराव और भीतर की गर्मी और कुछ ईश्वर्य देन नए ढंग से सोचने और वैज्ञानिक ढंग के नए से विनाश के यंत्र ईजाद की प्रवृत्ति थी मैंने अपने देश के लिए काफी लाभदायक काम किया...मैंने कुछ विदेशी एजेंसियों से भी नाता जोड़ लिया। कुछ एजेंसियों ने बहुत बड़े दामों पर मुझे हायर करने की ऑफर भी रखी और अपने देश की नागरिकता दिलाने का भी वचन दिया। न जाने क्यों जब मैं किसी को धोखा देता हूं तो धोखा जाने वाले देश के कर्मचारियों को तिलमिलाता देरवकर खुश होता हूं। मैं अपने देश के कई सीक्रेट लेकर ताइवान उड़ गया और वहां की नागरिकता प्राप्त कर ली।'

मेरिया ने कहा- 'इसका मतलब है तुम अब जिन लोगों के लिए काम कर रहे हो, उन्हें भी धोखा देने का इरादा रखते हो।'

'निस्सदेह।' कोशिंग मुस्कराया- 'मैं उन लोगों को भी तिलमिलाता हुआ देखकर खुश होना चाहता हूं।'

'तो फिर यह ब्लैक बॉक्स जो तुम्हारे पास है?'

'इन्हें मैं उन लोगों को नहीं देना चाहता जिनके लिए मैंने इन्हें प्राप्त किया है।'

'फिर किसको देना चाहते हो?'

'जो दो देश या जिन दो देशों के यात्रियों की इन घटनाओं में मृत्यु हुई है...इसलिए कि जब चटनाग्रस्त यात्री घटना के षइयंत्र को जान लेंगे, तब मैं उन लोगों की प्रतिक्रिया का आनंद अनभव करूगा।'

'इन दोंनों में एक देश तो मेरा ही है।'

कोशिंग फिर मुस्कराया- 'मैं जानता हूं मगर तुम्हारे देश से मेरे हाथ क्या आएगा...यहां के नेताओं व सत्ता अधिकारियों ने तो मुझे इस स्थिति में डाल दिया है।

'दूसरा देश तो फिर वह लाल देश है। क्या तुम समझते हो वह तुम्हें मुंहमांगे दामदे सकेगा? वह देश तो स्वयं फाइनेवि ायल क्राइसल में है।'

'मगर वह अपनी इन्टेलीजेंस पर बहुत खर्च करता है।'

'तुम इन ब्लैक बॉक्सों का क्या मुआवजा मांगते हो?'

कोशिंग वोदका का एक लम्बा घुंट लेकर मुस्करा पड़ा और बोला- 'मैं जानता हूं तुम वह नहीं दे सकोगी...बिना जबरदस्ती किए अपने-आपको मेरे हवाले कर दो।'

मेरिया ने ठंडी सांस लेकर कहा- 'मैं जानती थी तुम्हारी यही मांग है...मगर मैं तुम जैसे चतुर आदमी पर भरोसा नहीं कर सकती।'

मेरिया के हाथ में अब भी रिवाल्वर था। वह बोली- 'इस रिवाल्वर से मैं यूं भी ब्लैक बॉक्स प्राप्त कर सकती हूं।'

कोशिंग ने ऐसा लम्बा ठहाका लगाया जैसे कोई बच्चे की शरारत पर हंसता है और बोला- 'चलो कोशिश कर लो, मैं अपना सीना भी खोल देता हूं कि तुम्हारी गोली, को कपड़ों को भी न छेदना पड़े।'

मेरिया हंस पड़ी और रिवाल्वर को होलस्टर में रखती हुई बोली- 'मैं मुआवजे की बात करना चाहती हूं।'

'करो।'

'यह सच हैं।' उसने कहा, 'जैसे मैं तुमसे पहले धबरा रही थी अब उतनी बिल्कुल नहीं घबरा रही।!

'क्यों?'

'जो कहानी तुमने सुनाई है यह मुझेके बिल्कुल अपने देश के व्यक्ति की दास्तान लगती है।'

'कहानी हर देश के हर व्यक्ति की एक ही होती है...चलो अब बैठ जाओ...क्या पियोगी?'

मेरिया बैठ गई और बोली- 'वोदका बहुत तेज होती है। हां, स्कॉच थोड़ी चल सकती है अगर हो तो।'

'मेहमानों के लिए मेरे पास सब-कुछ है।' कहकर कोशिंग एक पत्थर जैसे दरवाजे को खोलकर स्कॉच की बोतल निकालने लगा-इस बीच मेरिया का दिमाग बड़ी तेजी से काम कर रहा था कि किस प्रकार ब्लैक बॉक्सों पर कब्जा किया जा सकता है।'

कोशिग को स्कॉच निकालते देखकर वह मुस्कराकर बोली- 'लगता है तुम काफी समय से इस मिशन की तैयारी कर रहे हो। किरलोस्कर को भी शुभने यहीं से गायब किया होगा।'

'हां बिल्कुल।'

'और जिन ग्राहकों को जेसेभन लेकर आती है?'

'उनसे मैं दूर ही रहता हूं ताकि यह भेद खुलने न पाए।' यह कहकर कोशिंग ने मेरिया का गिलास उसकी ओर बढ़ा दिया और बोला- 'एक बार वह डेविड को लेकर भी यहां आ चकी है।'

मेरिया ने गिलास लेकर कहां- 'मुझे मालुम है।'

'मैं चाहता तो उसी दिन उसकी समाप्त कर सकता था लेकिन मैंने कुछ नहीं किया।'

'उस दिन डेविड ने बड़ी-सी चट्टान को गोले के समान इधर आते देखा था...क्या वह कोई यंत्र था?'

कोशिग मुस्कराकर बोला- 'अभी मुझसे और कुछ मत पूछो, इसलिए कि अभी हमारे बीच कोई सौदा निश्चित नहीं हुआ कोई समझौता कोई गारंटी नहीं।'

'मान लो समझौता 'निश्चित हो गया है।'

"तो बता दो...क्या इरादा है ताकि मेरी संतुष्टि हो जाए।'

तभी अचानक इलैक्ट्रिक बोर्ड पर लगा एक बल्ब बुझने जलने लगा।

"कोई गुफा में है?' कोशिंग ने जल्दी से कहा और एक स्विच ऑन कर दिया।

मेरिया ने टी० वी० स्कीन पर जिसे देखा उसे देखकर मेरिया का दिल बहुत जोर से धड़क उठा क्योंकि वह जंग बहादुर था।

केशिंग बड़बड़ाया- 'यहां तक यह कैसे पहुंच गया। यह तो मैडीकल फर्म का एजेंट और डेविड का दोस्त है। इससे निबटना पड़ेगा।'

फिर कोशिंग पुकारा- 'कोबी।'

अचानक ही सोफे के नीचे तेजी से रेंगकर कोबरा बाहर निकल आया और मेरिया बुरी तरह उछल पड़ी। उसने जल्दी से टांगें ऊपर कर ली। गिलास उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर गया और दिल जोर से धड़क उठा।

कोशिंग ने कहा ज्वबराओ मत...यह दोस्तों का दोस्त और दुश्मनों का दुश्मन है।' फिर वह कोबरा से बोला- 'कोबी! तुम घायल हो, मुझे खेद है इस हॉल में तुम्हें कष्ट देना पड़ रहा है।'

कोबरा ने फन हिला दियो।

'ओ० के०...मिस मेरिया, मैं जरा इस आदमी से निबटकर अभी आता हूं।'

मेरिया बैठी रह गई। उसके शरीर में ठंडी-ठंडी लहरें दौड़ने लगी थीं। कोबरा उसकी आंखों में देखे जा रहा था।

केशिंग जल्दी से उस दरवाजे की ओर बढ़ गया जहां से वह मेरिया को साथ लेकर इस कमरे में आया था।

13

कोशिंग क्षण भर में गुफा में पहुंच गया।

जंग बहादुर अभी-अभी अंदर आकर इधर-उधर देख रहा था। केशिंग को अचानककहीं से सामने आ धमकते देखकर वह रुका। लेकिन न वह चौंका था न भयभीत हुआ था...बस शांत वहीं खड़ा देखता रहा।

कोशिंग मुस्कराकर बोला- 'हैलो! इधर आने का कैसे कष्ट किया?'

'क्या तुम पहले ही से यहां खड़े किसी के इंतजार में थे? मैं यूं ही यहां पहुंचकर इधर-उधर देरव रहा था...यह गुफा बड़े सुन्दर दृश्य दिखाती है...यह जेसेमन ने बताया था मुझे।'

कोशिंग मुस्कराया- 'ओहो, वह स्वयं कहां है?'

'आती ही होगी...तुम जाओ अपना काम करो।'

'क्या मुझे जिन्दा देरवकर तुम्हें आश्चर्य नहीं हुआ?'

'आश्चर्य क्यों? बिल्ली को चाहे कितनी ही ऊंचाई से ऊपर फेंको-वह पंजों के बल ही जमीन पर गिरेगी।'

'खूब! लगता है गहरे अनुभवी हो।'

फिर अचानक ही एक ऐसी सैक्स भरी आकर्षक लयपूर्ण आवाज गूंजी जो किसी भी सुनने वाले के दिल में तीर की तरह उतरती चली जाए। डैडमैन ने शांत ढंग से इधर-उधर देखा मगर कीशिंग एकाएक चौंक पड़ा। उसके चेहरे पर कई रंग आए और गए...उसकी आंखों से घबराहट अलकने संगी थी। अचानकउसने अपना खतरनाक रिवाल्वर निकाल लिया और गुफा के मुंह पर जाकर जोर से चिल्लाया- 'तुम कैथराइन हो।'

बड़े लयपूर्ण ठहाके कीं आवाज आई- 'तुमने ठीक पहचाना कोशिंग।'

'तुम कहां ले बोल रही हो?'

वही गुनगुनाती-सी आवाज आई- 'इन्हीं पहाड़ियों से, बादलों से, पेड़ों से हवाओं से, तुम इतने डर वयों गए कोशिंग डीयर।'

'जब तक तुम सामने नहीं आओगी खतरनाक ही समझी जाओगी...मुझे उन गद्दारों पर सदेह है जो तुम्हें डबलक्रास कर रहे थे। वह सब केवल ठहाके लगाते...लहू थूकते मर गए।'

आवाज आई- 'इस पर भी तुमने हमसे गद्दारी करने का फैसला का लिया।'

'क...क...कैसी गद्दारी?' कोशिग ने कुछ झुंझलाहट से पूछा।

'कुछ देर पहले तुम सीक्रेट सर्विस की मुस्म ऑफिसर मिस मेरिया से सौदा कर रहे थे...उन ब्लैक बॉक्सों का जो तुम्हारे पास हैं...तुम समझौते के विरुद्ध यह कार्यवाही दूसरें देश से कर रहे हो।'

'हां कर रहा था...मैं कोशिंग हूं कोशिग शंधाई...तुम मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती।'

हंसी के साथ खौफनाक आवाज आई- 'तुम बहुत बहादर हो?'

'कैथराइन सामने आकर बात करो।'

'लो...मैं आ रही हूं।'

फिर एकाएक कोशिंग का हाथ एक ओर उठ गया और असीम घबराहट में वह पागलों की तरह चिल्लाया- 'बह...वह...वह...आ रही है।'

डैडमैन भी उधर ही देखने लगा।

शाम ढल चुकी थी लेकिन एक तेज चांदनी का गोलाकार सा नजर आने लगा था जिसके बीच में झिलमिल करके लबादे में संगमरमर की वीनस की मूर्ति के समान स्थिर कैथराइन बैठी थी और वह रोशनी की गोलाकार गुफा की ओर आ रहा था।

डैडमैन चुपचाप देख रहा था। कीशिंग की पलकें भी नहीं झपक रही थी। अब वह मूर्ति का गोलाकार गुफा के भीतर उतर आया था और कैथराइन के होंठों पर एक कातिल सी मुस्कराहट के साथ आवाज इनइकेली- 'कोशिंग, तुम जाग रहे हो?'

'हां मैं जाग रहा हूं?'

'तो लो मैं आ गई।'

डैडमैन मूक, स्थिर और शांत उसे देरवे जार रहा था...कैथराइन उसकी ओर मुड़कर वैसी ही कातिल मुस्कराहट के साथ आखों में देरवती बोली- 'क्या तुम पत्थर के बने हो?'

डैडमैन ने कहो- 'नहीं, मैं ऊपर वाले का बनाया प्राणी हूं।'

वही गुनगुनाती आवाज आई- 'और यह कोशिंग यह भी तुम्हारी तरह उसी ऊपर वाले का बनाया एक साधारण प्राणी है।'

'नहीं।' कोशिंग चिल्लाकर बोल उठा- 'नहीं...मैंने तो स्वयं अपने आपको बनाया है।'

केथी डार्लिंग! एक बार केवल एक बार मुझे इजाजत दो कि मैं तुम्हें अपने होंठों से छू सकूं?'

'तुम मुझे कैथी क्यों कहते हो? मेरा नाम केथराइन है उर्फ डोरोथी।'

'मेरे लिए तुम बस केथीं हो। मेरे पास आओ और अपने शरीर से लिपटा यह चमकता गोलाकार हटा लो।'

'तुम इस गोलाकार से डरते क्यों हो?'

कोशिंग ने कहा- 'इसलिए कि मैं तुम्हारे उन चाहने। वालों का अंत देरद चुका हूं जिन्होंने तुम्हारे सौन्दर्य के जादू से उंतावले होकर लिपटने की कोशिश की। वह इस गोलाकार को छूते ही वहीं चीखकर राख का ढेर बन गए।'

'तो लो...मैं यह उतारती हैं...तुम अपनी इच्छा पूरी कर लो।' साथ ही वह चांदनी का हाला गायब हों गया और आवाज आई- 'आओ कोशी मुझसे लिपट जाओ।'

कोशिंग होंठों पर जुबान फेरता...आंखों में अरमान भरे आगे बढ़ा और एकाएक उसने अपने आग उगलने वाले रिवाल्वर से फायर करना चाहा...मगर उससे पहले ही कैथराइन के गिर्द प्रकाश का गोलाकार तना हुआ था और कोशिंग थरथराता हुआ चीजें मार रहा था मानो उसका हाथ बिजली के नंगे तारों पर पड़ गया हो।

कैथराइन ने हंसकर अपने सीने पर हाथ रखा। बस पल भर के लिए हाथ लोप हुआ और कोशिंग इस तरह पीछे लड़खड़ाता हआ हटा जैसे वह करंट से छूट गया हो लेकिन रिवाल्वर हाले के अंदर ही था।

कैथराइन ने रिवाल्वर कोशिंग की ओर तानकर मुस्कराकर कहा- 'तो कोशी डार्लिंग अब क्या कहते हो?'

कोशिंग का चेहरा पीला पड़ा था...लगता था जैसे उसके शरीर में जरा भी जान न रही हो। उसने बड़े निर्बल स्वैर में कहा- 'अब तो जो कुछ कहोगी तुम ही कहोगी-मुझे मालूम है मेरी मौत तुम्हारे ही हाथों लिरबी है।'

'क्या अब भी तुम ब्लैक बॉक्स का सौदा किसी दूसरे देश से करोगे?'

'अब तो तुम्हीं जो चाहोगी वही होगा?'

'क्या तुम्हारे अड्डे में सीक्रेट सर्विस की वह सदस्या भी मौजूद है जिस पर तुम्हारी नीयत खराब है। उस बेचारी को तुमने अकारण ही मौत के मुंह में झोंक दिया।'

'बह स्वयं ही ब्लैक बॉक्सों की तलाश में आई थी और उसने मुझे उसका मुआवजा देना स्वीकार कर लिया है।'

'अर्थात् उसने अपना शरीर मौंपने की सहमति व्यक्त की और तुमने विश्वास कर लिया। शायद तुम भूल गए कि वह हिन्दुस्तानी महिला है और अब हिन्दुस्तानी पहले जैसे पिछड़े हुए नहीं, तुम उस पर काबू नहीं पा सकते।'

'फिर भी मेरे मन में उसके लिए नम्र और कोमल भाव हैं क्योंकि वह दुनिया की पहनी, महिला है जिसने मेरे कोशिंग बनने की पूरी कक्षा सुनी है और मन से दु:ख भी प्रगट किया है।

'उसे छोड़ दो कोशी डार्लिंग! यह मेरी विनती है।'

'तुम जानती हो कैथी...हम ऐसी मूर्खता नहीं करते...पहले तुम जाओ।'

कैथरीन ने उसकी ओर उसका आग उगलने वाला रिवाल्वर ताने लिया...मगर अचानक डैडमैन ने हाथ उठाकर कहा- 'ठहरो कैथराइन।'

'हां...बोलो...।' उसने मुस्कराकर कहा।

'क्या तुम इसे सचमुचे मार डालोगी?'

'क्यों? तुम्हें इससे हमदर्दी है?'

'हां, यह बेबस है।'

'और तुम?'

'तुम मुझे क्या समझती हो?'

'घबराओ मत...इसके बाद तुम्हारा ही नम्बर है?'

'नम्बर ही की बात है तो पहला नम्बर मुझे दे दो।'

कैथराइन ने मुस्कराकर कहा- 'आओ...मुझे किस करो।'

'नहीं दोस्त।' अचानक कोशिंग ने कहा- 'क्यों बान-बूझकर मौत को गले लगाते हो?'

डैडमैन ने उसकी ओर देरवकर कहा- 'मरना तो यूं भी है...क्यों न इस अप्सरा को एक बार गले लगाकर मरें...इसमें हानि ही क्या है?

'मैंने कई कोशिश करने वालों का परिणाम देखा है, मान जाओ मेरी बात।'

'अब और धीरज नहीं रहा।' कहता हुआ डैडमैन कैथराइन के निकट पहुंचा ही था कि प्रकाश का हाला एकाएक तन गया और वह उसके भीतर आ गया।

कोशिंग ने चिल्लाकर कहा- 'मैंने तुम्हें रोका था दोस्त।'

'चिन्ता मत करो।' कहते हुए डैडमैन ने कैथराइन के हाथ, ते आग उगलने वाला रिवाल्वर छीन लिया।'

'ब्रेवो!' कोशिंग चिल्लाया, 'इसे मेरी ओर फेंक दो।'

डैडमैन ने शांत स्वर में कहा- मैं इस प्रकाश के डाले की विशेषता सुमझ चुका हूं। यह हाले से टकराया तो सब रारव हो जाएगा।'

'तो फिर कैथराइन के ऊपर फायर कर दो...यह वहीं जलकर राख हो जाएगी और यह हाला समाप्त हो जाएगा।'

'नहीं इतनी सुन्दरं औरत की मौत मुझे सहम नहीं होगी। मैं इसे किस करूंगा।'

कैथराइन ने दोनों हाथ फैला दिए- 'आओ मुझे लिपटाकर किस कर लो।'

डैडमैन ने पिस्तौल पकड़े-पकड़े कैथराइन के गले में बाहें डालकर उसे खींचकर उसके होंठों परे अपने होंठ ररक दिए। दूसरे ही क्षण कैथराइन ने कोई बटन दबाया ...एक शोला-सा लपका और डैडमैन का शरीर आग की लपटों में घिर गया।'

कोशिंग चिल्लाया- 'पागल आदमी यह क्या किया तूने?'

लेकिन फिर अचानक उसके कानों में कैथराइन की चीखें गूंजने लगीं- 'बचाओ... बचाओ?

'प्लीज सेव मी!'

कोशिंग आंखें फाड़े देखता रह गया...उसके सामनें डैडमैन के कपड़े जलते-जलते राख होकर शरीर-से अलग होते चले गए और उसके सामने हडियों का ढांचा मजबूती से अपने पैरों पर खड़ा था और भयानक पंजों में कैथराइन

की गर्दन थी।

कैथराइन किसी मशीन की तरह चिल्लातीऊ गर्दन छुड़ाने की कोशिश कर रही थी। उसकी औरवे फटी हुई थीं, मुंह खुला और जुबान बहिर निकली हुई। उसके गिर्द बिजली का ताना अबु भी पर्दे की तरह तना हुआ था।

कोशिंग हक्का-बक्का-सा देरक रहा था। ऐसा भयानक दृश्य उसने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था। धीरे- धीरे कैथराइन की चीजें घटती चली गईं। फिर उसके हाथ पीछे झूल गए।

डैडमैन ने अब उसे बांहों पर संभाल लिया था। उसने कैथराइन के जले सीने के बीच अपना हडियों का पंजा डालकर एक झटका मारा। एक चमक सी उभरी और कैथराइन के गिर्द तना हुआक बिजली का हाला लोप हो गया।

डैडमैन ने झककर कोशिंग का रिवाल्वर उठाया और बोला-

'लो संभालो...अपना सबसे लाभदायक हथियार।'

कोशिग ने रिवाल्वर लेकर होंठों पर जुबान फेरी और भूक निगलकर बैठी-बैठी आवाज में बोला- 'त...त...तुम।'

डैडमैन ने शांत स्वर में कहा- 'घबराओ मत, मैं भूत-प्रेत नही हूं...एक सच्चा हिन्दुस्तानी हूं और किसी भी समय सच्चे हिन्दुस्तानी सच्चाई के लिए बलिदान देने के साथ किसी चूमत्कार की आशा कर सकते हैं।'

'तो क्या यह चमत्कार था। ओ गॉड।'

'आ गया तम्हारी जबान पर गॉड का नाम।' डैडमैन ने हंसकर कहा- 'ऐसे ही चमत्कार आदमी को धर्म ईमान की ओर लाते हैं।'

'तुम सच कहते हो दोस्त।' फिर कैथराइन की ओर संकेत करके पूछा- 'क्या यह मर गई?'

'अभी नहीं।' कोशिंग ने कहा।

'अभी इसका जिन्दा रहना जरूरी था...वैसे अब यह लाश से भी गई गुजरी है।'

'मगर यह तो कभी हार खाने वाली नहीं थी।'

'यह नहीं, इसके सीने मैं अटकी यह छोटी-सी मशीन।'

डैडमैन ने कोशिंग को मशीन दिखाकर बताया, यह एक वैज्ञानिक का कारनामा है...इसके अंदर बिजली की ऊर्जा शक्ति भरी है जो दबाते ही कैथराइन के गिर्द बिजली की लहरों का एक ताना-बानो सा बुन देती थी।'

कोशिंग ने कहा- 'मगर मैंने स्वयं अपनी आंखों से देखा है। यह लोगों को कभी हंसा-हंसाकर और कभी रुला-रुलाकर लोटपोट करके मार डालती थी।'

'हां...यह इन्हीं बिजली की तरंगों का प्रभाव था जो सीधा इंसान के दिल और दिमाग को प्रेरित करता है।'

'ओहो। तुम तो बहुत महान वैज्ञानिक मालूम होते हों।'

'नहीं।' डैंडमैन ने कहा, 'मैं तो विज्ञान का क रब भी नहीं जानता...यह सब समझाने के लिए विज्ञान से बढ़कर बुद्धि की जरूरत होती है...हां, इंसान समय पर उसका ठीक प्रयोग करे।'

कोशिंग ने कहा- 'मगर अभी तुमने देखा था कैथराइन हवा में उड़ती हुई गुफा तक आई थी...क्या ऐसा संभव है।'

'इस विज्ञान के युग में सब-कुछ संभव है...अभी तुमने बिजली की लहरों का चमत्कार देखा ही है। फिर उसने कैथराइन की ओर देखकर कहा- 'अब तुम इस ढांचे को अपने अड्डे पर ले चलो। मगर ध्यान रहे जब अंदर पहुंचो तो मेरिया को यह बताना कि इसका शिकार तुमने किया है।'

'क्यों? इससे क्या अंतर पड़ता है?'

डैडमैन ने कहा- 'मेरिया सच्ची हिन्दुस्तानी है...यह भेद तुम पर तो प्रगट हो चुका है और मैं नहीं चाहता कि मेरी असलियत मेरे किसी हम, वतन पर खुले।'

'लेकिन वह तुम्हें इस ढांचे के रूप में देखकर डर नहीं जाएगी।'

डैडमैन ने कहा- 'मैं इस रूप में उसके सामने जा ही नहीं रहा। तुम अंदर जाओ मैं जंग बहादुर के रूप में ही अंदर जाऊंगा।'

'बस एक सवाल और मेरा भ्रम दूर करने के लिए।'

कोशिंग ने प्रार्थना भरे स्वर में कहा-

'बोलो।'

'क्या तुम सचमुच भगवान का कोई कारनामा हो या वर्तमान विमान का इंसामी यांत्रिक चमत्कार।'

डैडमैन ने कहा- 'विज्ञान का यांत्रिक चमत्कार अपनी पहली दशा में स्वयं नहीं लौट आता। तुम देखो मैं कैसे अपने हुलिये में वापस आता हूं? और कैथराइन को उसकी ओर बढ़ाते हुए बोला—'लो इसे संभालों।'

कोशिंग ने कैथराइन को संभाल लिया। डैडमैन ने आंखें बंद करके तीन बार 'हरिओम' का जाप किया और जब उसने औरवे खोली तो उसके ढांचे पैंर जंग बहादुर का मास्क चढ़ा था ऐसे जैसे वह जला ही न हो।

कोशिंग के होंठ सीटी बजाने के ढंरा में सिकुड़ गए। डैडमैन मुस्कराया- 'बोलो, कोई साइंस का यंत्र प्रयोग किया है मैंने।'

कोशिंग ने श्रद्धा से देखते हुए कहा- 'सचमुच यह सच्चा आत्मा का ज्ञान ही हो सकता है...आप महान हैं।'

'मेरा ज्ञान नहीं यह कोशिंग, इसका श्रेय हिदुस्तान के ऋषियों मुनियों की घोर तपस्या का फल है...हमारी उस सभ्यता का अंग है जो साहस के दौर में भी हमने भुलाया नहीं...हमने ईश्वर को नहीं भुलाया...हम छोटा-सा भी काम करते हैं तो उसे ईश्वर के नाम से आरंभ करते हैं।'

'हे ईश्वर!' कीशिंग ने कहा- 'मैंने जीवन में पहली बार उसे अपने हृदय से याद किया है।'

'शुम्हारे सारे जीवन के लिए यह काफी है, समझ, लो तुम्हारे अब तक के सारे पाप धुल गए।'

'लेकिन तुम्हारे देश में मेरा भविष्य क्या है?' कोशिंग ने पूछा।

'क्या तुम हमारे देश की नागरिकता प्राप्त करना चाहते हो।'

'हां लेकिन यहां के अनुशासन की दृष्टि में तो मैं अपराधी और चोर ही बना रहूंगा।'

'तुम्हारे विरुद्ध सारे अपराधों को मेरिया समाप्त करा सकती है। वह सीक्रेट सर्विस की एक महत्वपूर्ण कड़ी है उसकी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाकर विश्वास उत्पन्न करो। अब तम कैथराइन को सकर गफा में चलो...चाहो तो मुझे बंदी बनाकर साथ ले चलो।'

'क्या कहूंगा?'

'कह देना। मैं केथराइन के इंतजार में गया था...वहां गुफा का मंह देख लिया और कैथरान को तम्हारे कब्जे में देखकर तुम्हें पकड़ लिया।'

'मैं मेरिया से तुम्हारी सिफारिश कर दूंगा।' डैडमैन ने कहा- 'तुम कैथराइन को उठाकर रिवाल्वर की नोंक पर मुझे लगाए ले चलो।'

फिर डैडमैन हाथ उठाए आगे चल पड़ा और मेरिश गुफा में उन्हें इस हॉल में देखकर चौंक पड़ी। उसने कहा-

'यह तो जंग बहादुर है...मैडीकल एजेंट।'

'हां।' कोशिंग ने कहा, 'लेकिन यह मेरे अड्डे को जान चुका है और इसने डेविड की मदद भी की है।'

मेरिया ने कहा- 'यह अपराधी नहीं हो सकता...आदमी का चेहरा उसके दिल उसके चरित्र का आईना होता है।'

'मगर इसने होटल में मेरे ऊपर वार किया था।'

मेरिया ने कहा- 'बह डेविड की सहायता के लिए...इसलिए मैं कहूंगी इसे क्षमा कर दिया जाए।'

'ठीक है।' कीशिंग मे रिवाल्वर जेब में रखकर कहा, 'तुम्हारे कहने पर क्षमा किया लेकिन अभी इसे मेरी कैद में रहना पड़ेगा।'

मेरिया ने डैडमैन की ओर देरवकर कहा- 'तुम डरी नहीं, कोशिग इतना बुरा नहीं जितना हम समझे थे।' फिर उसने मेरिया की ओर संकेत करके पूछा- 'यह कौन है?' और कोशिग की ओर देखकर कहा- 'शायद तुम्हारे काम की चीज डी होगी।'

कोशिंग ने कैथराइन को एक सोफे पर लिटा दिया...मेरिया ने अब ध्यान से उसे देखा और एकाएक उछलकर खड़ी हो गई।

'अहो! यह तो कैथराइन है।'

'आपने ठीक समझा।' कीशिंग ने कहा।

'लेकिन यह तुम्हें मिली कहां?'

'यह मुझे समाप्त करने आ रही थी...क्योंकि इसने ब्लैक बॉक्सों के सौदे के बारे में हमारी बातचीत सुन ली थी।'

'कैसे?' मेरिया ने आश्चर्य से पूछा।

'शायद इसके पास कोई ऐसा वैज्ञामिक रिसेप्शान यंत्र है जो दस दीवारो के पीछे से भी दूसरी ओर की बातें सुन सेता है।'

'मगर तुम तो ऐसे बातें कर रहे हो जैसे राचमुच ब्लैक बॉक्स मुझे देने का फैसला खर चुके हो।'

'क्या तुम्हें इसमें कोई सदेह है?'

'हां...मैं तो समझ रही थी तुम केवल मेरा शरीर पाने के लिए मुझे मूर्ख बना रहे हो और मैं तुमसे बच निकत्मे का अवसर ढूंढ रही थी।

कोशिंग ने गुफा के दरवाजे की ओर संकेत करके कहा-

'दरबाजा खुला है...तुम शौक से जाओ।'

मेरिया ने आश्चर्य प्रगट किया- 'क्या तुम सच कह रहे हो कोशिंग? क्या तुम इन लोगों के ग्रुप के लिए काम नहीं कर रहे थे?' उसने कैथराइन की ओर संकेत करके कहा।

'निस्सदेह कर रहा था?' कीशिंग बोला- 'मगर तुम्हारे सामने यह प्रतिज्ञा भी कर चुका हूं कि मैं अब बदल चुका हूं...अब कैथराइन ग्रुप से मेरा कोई संबंध नहीं रहेगा।

'तो क्या तुम ब्लैक बक्स मेरे सुपुर्द करने पर तैयार हो?'

'शत-प्रतिशत।'

'और इसका मुआवजा?'

'तुम दे सकोगी?'

मेरिया उसे ध्यान से देखकर मुस्कराई और बोली- 'मुझे मालूम था तुम यही कहोगे, तुम्हारी नीयत..।' उसने बात अधूरी छोड़ दी।

कोशिंग भी मुस्कराया-'मगर अब तुम गलत समझ रही हो।'

'क्या मतलब?'

'अगर मेरा मआवजा देना ही चाहती हो तो मेरे लिए केवल दो काम कर दो और यह तुम्हीं करा सकती हो अगर न भी करा सको तो मझे शिकायत नहीं होगी...तुम बेरोक-टोक दोनों ब्लैक बॉक्स ले जा सकती हो।'

मेरिया ने आश्चर्य से उसे देखा और बोली—'बोलो क्या करवा दूं।'

'नम्बर एक, अपने देश में मेरे विरुद्ध जारी किए गिरफ्तारी के वारंट समाप्त कराने की कृपा कर दो।'

'ओहो! और दूसरा काम?'

'मुझे अपने देश की नागरिकता दिलवा दो।'

'व्हाट!'

'मैं जानता हूं मुझ जैसे इंटरनेशनल क्रिमिनल के लिए यह असंभव है। तुम्हारा देश किसी भी दूसरे देश से बिगाड़ना पसंद नहीं करेगा...मगर तुम सीकेट सर्विस की आदरणीय और महत्वपूर्ण मैम्बर डो...तुम कोई भी रास्ता निकाल सकती हो।'

'मुझे आश्चर्य हे।' मेरिया ने कहा, 'कि एकाएक तुम्हें इस देश से इतना लगाव क्यों हो गया? क्या तुम सच्चे मन से कह रहे हो।'

कोशिंग ने बैडमैन की ओर संकेत करके कहा- 'हां मैं सच्चे मन से यह कह रहा हूं और इस परिवर्तन का कारण यह सज्जन महापुरुष है।' डैडमैन ने हल्की-सांस ली।

दूसरी ओर मेरिया चौंक पड़ी। उसने डैडमैन की ओर देखा और फिर कोशिंग की ओर देखकर बोली- 'इन साहब में ऐसी क्या बात है जिसने तुम्हारी काया कल्प कर दी?'

कोशिंग ने कहा- 'मुझे नहीं मालूम था कि हिन्दुस्तान में इतनी मानवता भी मौजूद है, इतनी महानता है।'

'क्या मतलब?'

'यह वह आदमी है जिसे मैंने रूबी होटल में जान से मारने की कोशिश की थी लेकिन यह अत्यधिक शक्तिशाली है...मैं इनसे हार खाकर भागा था। तब मैंने फैसला किया था कि इन्हें मैं जिन्दा नहीं छोडूंगा...आज मुझे इसका अवसर भी मिल गया। मैं इन्हें मारने के लिए ही गुफा में गया था मगर मेरे ऊपर अचानक इस चतुर अपराधिन जमाने हमला कर दिया। मैं असावधानी में मारा ही जाता मगर संयोग से जंग बहादर की बीद्ध और स्फुर्ति काम कर गई। यह मेरे रक्षक और गुरु समान हैं और उन्हीं के सामने मैंने देशभक्ति कां वचन दिया है।'

'हूं।' मेरिया ने हल्की सांस ली, 'मैं प्रयास करूगी कि तुम्हारे विश्व जारी हुए वारंट वापस ले लिए जाएं और तुम्हें यहां की नागरिकता मिल सके, मगर...।'

'मैं जानता हूं, तुम क्या कहना चाहती हो। मैं साधारण और भले नागरिक का जीवन गजारेना चाहता हूं...मैं अपना नाम बदल लूंगा और किसी नगर, गांव में जा बसूंगा ताकि कोई अपराधी गिरोह मेरे पास पहुंचे भी नहीं।'

मेरिया ने कहा- 'मैं पूरा प्रयत्न कुरूगी किए तुम एक अच्छे नागरिक बन सको।'

अचानक ही कैथराइन के होंठों से कराह की आवाज निकली और वह तीनों कैथराइन की ओर देखने लगे। कैथराइन ने पलकें झपकीं और फिर आंखें खोल दीं... दांए-बाएं बौखलाए हुए उसने गर्दन असली। कोशिग ने उसके ऊपर झुककर पूछा-

कैसी हो कैथी डार्लिग?'

कैथराइन झटके से उठकर बैठ गई और डैडमैन की ओर देखकर उसकी चीरब निकल गई।

'घबरओ मत डार्लिग।' कोशिंग ने कहा- 'यह कोई भूत-प्रेत नहीं है।'

'नहीं...यह भूत है...।' बह कांपते स्पर में बोली।

कोशिंग के होंठों पर व्यंग्य भरी मुस्कराहट फैल गई...उसने कहा- 'अजीव बात है जिस औरत से बड़े-बडे बदमाश कांपते हैं, यह एक सीधे-सादे भले, आदमी से डर रही है।'

कैथराइन बोली- 'नहीं...नहीं...यह कोइ साधारण आदमी नहीं।'

डैडमैन ने आगे बढ़कर उसकी आंखों मैं देखते हुए तेज कानाफूसी में आत्मा में प्रवेश कर जाने वाले नम स्वर में कहा-

'हां...मैं साधारण आदर्मी नहीं हूं।'

'क...क...कौन हो तुम?'

'अपना परिचय देने के लिए अब सवाल मैं पूछूंगा और जवाब तुम होगी...तुम स्वयं जान लोगी कि मैं कौन हूं।'

'नहीं।'

'तुम्हारा असली नाम कैथराइन है?'

'हा।'

'तुम अन्तर्राष्ट्री स्तर की अपराधी हो।'

'हां।'

'तुम डोरोथी बनकर होटल रूबी में ठहरी थी?'

'हां।'

'वहां तुम्हें रेप किया गया था? सारे स्टॉफ ने, उन गुण्डों ने।'

'हां।'

'मगर क्या एक ही रात में कोई औरत लगभग तीस-चालीस आदमियों से शारीरिक मिलाप कर सकती है यह झूठ है।'

'नहीं।'

'मतलब जितने अधिक मर्द तुम्हारे साध एज्जॉय करते हैं उतनी ही तुम्हारी मानसिक अग्ऐर शारिक शक्ति बढ़ती है।'

'हां।'

'मगर तुमने अपने आपको लाश प्रगट किया था क्योंकि तुम लम्बे समय तक श्वास रोकने की किया में कुशल हो।'

'हां सही है।'

'इस तरह तुमने होटल रूबी के मालिक शुभांकर को अपने कब्जे में ले लिया था।' 'हां।'

'उसी शुभाकर से मिलकर तुमने किरलोस्वार को किडनेप कराया?'

'हां।'

'इसके अलावा भी शुभांकर द्वारा कई काम लिए, उसमें डोरोथी की भूमिका भी थी।'

'हां।'

'और कौन-से रूप की भूमिका निभाई, स्वयं बताओ।'

'किरण मांधर।'

मेरिया चौंक पड़ी- 'तुम...तुम...किरण मांधर हो? एक भोली- भाली कुंआरी लड़की का अभिनय भी तुमने इतनी कुशलता से निभा लिया?

'हां, इसलिए कि मैं तुम्हारा और डेविड का सारा यान-दूसरी ओर मोड़ दूं...तुम लोगों को उलझाए अब।'

डैडमैन ने कहा- 'मैं तुम्हें किरण के नाते सीक्रेट सर्विस के हैडक्वार्टर में प्रह्नुंचा आया था इसलिए कि वहां तुम सुरक्षित रहोगी...वहां भी तुमने कोई कार्यवाही की? जरूर की होगी।'

'हां...मैंने वहां का सारा कम्युनिकेशन सिस्टम बिगाड़ दिया था ताकि उनका कोई मैम्बर आपस में या चीफ से सम्पर्क ना कर सके।'

'तुम वहां से यहां कैसे पह्नुंच गई?'

'हमारे पास ऐसे बेआवाज राकेट और हैलीकाप्टर हैं जो आवाज से भी तेज चलते है...ऊंचे उड़ते हैं। रडार की पहुंच से दूर। मैंने अपने हैडक्वार्टर से सम्पर्क बनाए रखने के लिए एक ऐसा हैलीकाप्टर दिरबने वाला मंगवा रखा था जो समय और बदलते वातावरण अनुसार रंग रूप बदलता रहता है।'

'तुम्हारा वह हैडक्वार्टर ज्वालामुरवी के उस मुंह के अन्दर गहरी थाह में है जिसमें से नीले-पीले शोले निकलते रहते हैं?'

'हां...यह सच है...वह जगह हम लोगों ने इसलिए चुनी थी क्योंकि इसके बारे में किंसी को भी सदइह नहीं हो सकता था...ज्वालामुखी तो सदियों पुराना है।'

मेरिया ने कहा- 'मगर उसके अंदर तो पिघला हुआ लावा ही होगा।'

'हां...लेकिन हमने नई टेस्नालॉजी से उसे ठंडा कर डाला था। उसमें रोशनी तो झलकती थी लेकिन एक कागज भी नहीं जल सकता था। अब उसकी गहराई में हमारा अड्डा है जहां विज्ञान के बिकुल नए यंत्र लगे हैं।'

'और उन सबको डाक्टर किरलोस्कर स्वयं कंट्रोल कर रहा है।'

'हां...वह हमारे देश का सबसे महान वैज्ञानिक है...केरन डिप्लोमैट है। केरन से किरलोस्कर ने इसलिए शादी की थी ताकि वह उसके साथ भारत आ सके...वह यहां आकर रहा। योजना अनुसार ही उसने अगवा क नाटक रचाया और हैडक्वार्टर पहुंचकर उसने सारा काम संभाल लिया।'

'केरन उसकी असलियत नहीं जानती।'

'केरन...वह एक मर्दरबोर औरत है। उसे बस मर्द ही मर्द चाहिएवह बहुत सुन्दर है उसमें बहुत् सैक्स अपील भी है और अत्यधिक काम इच्छा भी। केरन अपने हस्बैंड को ढूंढने के बहाने ऐसे लोगों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है जो किरलोस्कर को ढूंढते रहें और केरम अपनो काम इच्छा पूर्ति का उद्देश्य पूरा कर लेती है।'

डैडमैन ने कहा- 'क्या यह विमानों के आपसी टकराव की दुर्घटना किरलोस्कर की ही हरकत है?'

'हां...ज्वालामुखी की थाह में बने अड्डे में जो यंत्र लगे हैं वह ऐसे प्रबल हैं कि बड़े से बड़े रडार तक को जाम करके निक्रिय बना सकते हैं, चाहे वह भारत की किसी भी एयरपोर्ट से उड़ान भरे...हम लोग जब चाहें उड़ने वाले किसी भी जहाज का कंट्रोल टॉवर से सम्पर्क तोड़ सकते हैं। यहां उड़ते दोनों विमानों की कंट्रोल टॉवर से सम्पर्क हम ही ने तोड़ा और फिर बहुत बड़े मैग्नेट से उन्हें एक-दूसरे के बहुत निकट लाकर एक ही उड़ान रेखा पर डाल दिया।

'दोनों विमान एक-दूसरे से टकरा गए। इन दोनो के ब्लैक बॉक्स हमने कीशिंग की सहायता से गायब कराप्रजो यही क्राइम ब्रांच के डी० एस० पीट की पोस्ट भी बनाए बैठा था।'

'इतने बड़े षड्यंत्र का मुरव्य उद्देश्य क्या था तुम लोगों का?'

'हमारा निजी लाभ नहीं....हमारे देश का, हमारी सरकार काजो सबसे बड़ी शक्ति है...भारत उभरने की कोशिश कर रहा है...जिसे दबाना जरूरी है...उद्देश्य भारत को बदनाम करना, प्रशासन की कमजोरियों को बढ़ावा देना और उछालुना, इस देशकेर संबंध दूसरे देशों से बिगाड़ना, इसकी एकानोमी को अपने देश के आधीन रखना?'

फिर अचानक उसने चीरवकर जोर से कहा-

'तुम सुन रहे हो डाक्टर किरलोस्कर।'

अंदर से आवाज गूंजी- 'हां, मैं सुन रहा हूं कैथी।'

'तो फिर देर किस बात की है?'

'तुम जो वहां मौजूद हो।'

'मेरी चिन्ता मत करो...तुम अपना काम शुरू कर दो।'

फिर अचानक एक जोरदार गड़गड़ाहट सुनाई दी और कालिन जल्दी से बाहर की ओर झपटता हुआ चीरवा-

'भागो....जल्दी...अभी यहां चट्टानों की बारिश होने वाली है। पूरी पहाड़ी पत्थर के भारी टुकड़े-टुकड़े व सिलों से भर जाएगी।'

डैडमैन ने फुर्ती से मेरिया को कंधे पर डाला और कैथराइन की बांह पकड़कर जोर से बोला-

'हरिओम!'

'हरिओम!'

'हरिओम!'

फिर पलक झपकते ही वे लोग एक ऐसी गुफा में थे जो चादंनी जैसी रोशनी से बनाई हुई थी। जहां बिल्कुल नए और अनोखे वैज्ञानिक यंत्र लगे थे और किरलोस्कर एक मशीन को ऑपरेट कर रहा था।

यह ज्वालामुखी का भीतरी भाग था एक ओर एक बड़े से टी० वी० स्कीन पर हजारों मन भारी चट्टानें रूई के गोलों की तरह उड़-उड़कर उन पहाड़ियों से टकरा रही थी जिनमें से एक गुफा में चंद ही क्षण पहले वे मौजूद थे।

फिर एक भारी चट्टान उड़ती हुई शीतलगढ़ की ओर गई और डैडमैन ने हाथ बढ़ाकर को उठा लिया। चट्टान शीतलगढ़ के एक आबौद इलाके पर गिरती नजर आई जहां एक कोहराम सा मच गया था...टूटी हुई इमारतें, धमाके इंसानों की हू-ब-हू आपाधापी मानो प्रलय आ गई हो।'

डैडमैन ने मेरिया से कहा- 'कैथराइन को संभालो।'

मेरिया ने कैथराइन की कनपटी पर एक जोरदार मुक्का मारा और कैथराइन चकराकर गिर पड़ी।

डैडमैन ने वह मशीन बंद की जो चट्टानों को टुक्के-टुक्ड़े करके उड़ा रही थी। फिर उसने किरलोस्कर को गर्दन से पकड़कर उठा लिया।

'यह क्या कर रहे हो विष्णु, वह अपराधी है मानवता का अपराधी।'

'नहीं मेरिया, ऐसे घोर अपराधियों को कभी सजा नहीं मिलती। इसकी, कहानी यही समाप्त हो जानी चाहिए। फिर उसने घुमाकर जोर से किरलोस्कर को ऊपर उछाल दिया और पथरीली चट्टान से टकराकर किरलोस्कर गर्दन तक अंदर धंस रमा...फिर धप्प से बेहोश पड़ी केथराइन के पास आ गिरा।

दोनों इतने निकट गिरे थे जैसे आखिरी बार गले मिले हो। दो-तीन झटके खाए और एक साथ ठंडे हो गए।

मेरिया डैडमैन से लिपटकर सिसक पड़ी।

□□□

डायमंड पॉकेट बुक्स

में

लोकप्रिय जासूसी उपन्यासकार

विक्का आनन्द

का नवीनतम उपन्यास

इक्कीस साल बाद

कुछ अंश :

जुनून

-राहुल

रेश-ड्राइविंग में शेखर को यह भी होश नहीं रहा कि रिंग-रोड का एक मोड़ काटते हुए वह ब्रेक पैडल पर ही पांव रख ले। नतीजा यह हुआ कि सामने से आती एक कार को बचाने की कोशिंश में उसका हाथ बहक गया और दुसरे ही पल कई धमाके गूंजे।

चारों तरफ कयामत का शोर गूंज उठा। शेखर का दिमाग कई चोटों की पीड़ा को खेलता-झेलत बेहोशी के अंधेरी में डूबता चला गया।

□□

तरुण, उसका भाई राहुल और उसके माता-पिता लाल मारुति में सवार थे और मारुति बड़ी तेजी से सड़क पर दौड़ी जा रही थी। ड्राइविंग सीट पर तरुण ही था।

'भाई साहब! क्या बहुत जल्दी है मयूर विहार पहुंचने की?' बगल में बैठे राहुल ने उसे तेज ड्राइबिग करते देखकर विनोद भाव से टोका- 'हमारी होने वाली भाभी कहीं भागी नहीं जा रही...।'

'नहीं।' तरुण ने सिगरेट का कश लगाते हुए कहा- 'मुझे चिन्ता यह है कि मेहमान और सामान वाली बस वहां पहुंच जाएगी पहले और हम अभी रास्ते में ही हैं।'

'तो क्या हुआ...अरे...।' राहुल ने सामने देखते हुए अचानक चीखकर कहा ही नहीं, बल्कि स्टेयरिंग को अपने दाएं हाथ से पकड़कर कंट्रोल करने की असफल कोशिंश भी की- 'बचाओ...यह सफेद कांटेसा तो सीधी चढ़ी आ रही है...।'

मगर अगले ही पल कांटेसा ने जोरदार टक्कर मारुति की साइड में मारी। मारुति उलट गई।

कई धमाके और चरिवे गूंजी। अगले दो-तीन सैकिण्डों में मारुति के ठीक पीछे-पीछे लगी रेडलाइन की बस ने उस उल्टी मारुति को कुचल डाला और खुद भी उलट गई।

अगले ही पल ऐसा लगा जैसे आकाश-पात्ताल उलट गए हों। भयानक चीखों और कान फाड़ देने वाले धमाकों से पूरा वातावरण दहल उठा।

मगर सफेद कांटेसा टक्कर मारने के बाद एक रवम्बे से टकराकर वहीं रुक गई थी। उसका अगला हिस्सा पिचक गया था और बिजली का खंभा टेढ़ा हो गया था।

□□

मीनाक्षी ने फ्लैट के अपने बैडरूम में उस छ: फुट लम्बे उपहार को ररबवाया ही था कि नीचे से पंडाल की दिशा से ऐसी आवाजें आने लगीं, जैसे आग लग गई हो। मीनाक्षी ने चौंककर मजूदरों से पूछा-

'यह क्या हुआ?'

'हमें क्या मालूम।' मजदूरों में से एक ने जवाब दिया।

'हां, तुम्हें कैसे पता चलेगा? तुम तो मेरे साथ आए हो।'

फिर वह तेजी से बाहर निकली तो मजदूरों ने उससे ज्यादा तेजी दिखाई और एक ने मीनाक्षी से पहले बाहर आकर ताकीद की।

'बीबीजी कमरे को ताला लगा दो। यह बहुत कीमती तोहफा है।'

मीनाक्षी बिना सोचे-समझे उनका कहना करने लगी। जब वह कमरे को ताला लगाकर मुड़ी तो मजदूर जा चुके थे। मीनाक्षी ने हैरानी से सोचा-

'कमाल है...इतनी जल्दी चले गए?'

वह पंडाल पर पहुंची तो जुड़ा गायब था और टैख भी जा चुका था। उसकी जगह एक पुलिस जीप खड़ी थी और बनवारी लाल के साथ कई लोग पुलिस वालों से बातचीत में लगे थे।

मीनाक्षी को देखकर कई सहेलियों ने दौड़कर उसे घेर लिया और करुणा ने बिफरी सांसों के साथ कहा-

'भीना...मीना बहुत बुरा हुआ।'

'क्या हुआ?' मीनाक्षीका दिल किसी अनजानी आशंका से धक्क से रह गया।

'तु तो यह समझ...तेरा भगवान तुझसे रूठ गया।' निशा ने उससे सहानुभूति प्रकट की- 'अच्छा हुआ सगाई से पहले ही यह सब हो गया। अगरु शादी के बाद ऐसा होता तो तेरा तो तो जीवन बरबाद हो जाता।'

'आखिर, हुआ क्या-यह तो बताओ।' मीनाक्षी ने अपने बैठते कलेजे को थामकर टूटी-टूटी आवाज में पूछा।

'तुम्हारे तरुण की कार का एक्सीडेंट हो गया। हालत नाजुक है।'

'नहीं...!' मीनाक्षी का दिमाग उस चोट को न झेल सका। जह चकराकर गिरने लगी तो तुरंत दो सहेलियों ने उसे हाथों का सहारा देकर गिरने से बचाया।

फिर भी वह किसी रेत की चोरी तरह उनके हाथों से फिसलकर ढहती चली गई।

करुणा ने तुरंत कालीन पर बैठकर उसका सिर अपनी गोद में रखा और उसे हिला-डुलाकर जांचा तो अनायास चीख उठी-

'अरे यह तो बेहोश हो गई।'

□□

मीनाक्षी को जब होश आया तो उसने आंखें खोलते ही देरक कि लेडी डाक्टर अरुणा उस पर झुकी थी और उसके बाबूजी उसके पास ही रबड़े उसे कातर दृष्टि से निहार रहे थे। उनकी आंखें आंसुओं में भीगी थीं।'

'मेरी बच्ची!' वह उसे होश में आता देखकर रो पड़े और कपकंपाती आवाज में बोले- 'तु ठीक तो है ना मीना?'

'घबराइये, नहीं। अब यह बिल्कुल ठीक है।' डाक्टर अरुणा ने अपना सामान समेटकर बैग में रखते हुए कहा- 'सुभालिए अपनी लाड़ली को और मुझे इजाजत दीजिए।'

'डाक्टर साहब! मैं आपका किस मुंह से शुक्रिया अदा करूू।'

'मेरा शुक्रिया अदा करने से ज्यादा जरूरी है, अपनी बेटी का ध्यान कीजिए।'

'चलिए, मैं आपको छोड़ दूं।' बनवारी लाल ने अरुणा का बैग उठाना चाहा तो डाक्टरनी ने मना कर दिया-

'मैं चली जाऊंगी। रात बहुत हो चुकी है। अब आप भी आराम कीजिए-बहुत थक गए हैं।'

डाक्टर के जाने के बाद जब घर में खामोशी छा गई तो मीना ने अपने बाप का चेहरा देखा, जो दुःरव और मलाल से काला पड़ा था। वह आंखें मिलते ही जबरदस्ती मुस्करा दिए।

मीनाक्षी ने भी बलात् ही मुस्कराने की कोशिश करते हुए पूछ लिया-

‘बाबूजी! यह घर में एकदम सन्नाटा क्यों है?'

‘सब जा चुके हैं बेटी।' बनवारी लाल ने पास ही कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

‘क्या फूफा और मौसी भी?'

‘हां, वे राममनोहर लोहिया अस्पताल गए हैंर उन लोगों की खबर लेने, सांत्वना देने। उन्हीं लोगों ने यह रिश्ता कराया था।'

'आप नहीं गए?'

‘मुझे तुम्हारे कारण रुकना पड़ा।'

‘मैं तो अब ठीक हूं, बाबूजी!' मीनाक्षी हिम्मत करके उठ बैठी- उन लोगों के क्या हाल हैं?'

'भगवान जो करता है, अच्छा ही करता है।'

‘क्या तरुण खतरे से बाहर है?'

‘नहीं...!’

‘फिर?’ मीनाक्षी को अपना सांस रुकता हुआ सा लगा।

‘वे चार जने थे उस लाल मारुति में-तीन ने तो हस्पताल ले जाते-ले जाते दम तोड़ दिया। एक की हालत नाजुक बनी हुई है।'

‘एक कौन?' मीनाक्षी को अपना दिल बैठता हुआ महसूस हुआ।

‘उनकी मां...बाकी दोनों भाई और बाप भगवान को प्यारे हो गए।'

‘ओह...नो...।'

मीनाक्षी फिर से गिर गाई। उसकी आंखें बंद थीं और सांसें यूं जोर-जोर से चल रही थी, जैसे उसका दम उखड़ रहा हो।

बनवारी लाल ने घबराकर उसे टटोला।

‘मीना...मीना...क्या हुआ बेटी?'

'मैं ठीक हूं, बाबूजी।' मीना ने धीरे-से आंखें खोल दीं और निढ़ाल, बुझी-बुझी मुस्कान के साध बोली- 'अब मुझे कुछ नहीं होगा।'

‘शुक्र है भगवान का। तू चिन्ता मत कर।'

‘चिन्ता कैसे न करूं, बाबूजी।' कहते-कहते मीनाक्षी की आवाज रुध गई। आंखें छलछला आई- ‘कितना पैसा बरबाद हो गया?'

‘तुम्हें पैसे का दुख हैं, उनका नहीं?'

‘उनसे तो मेरा संबंध बना कहां था, बाबूजी। उनकी मौत का सुनकर दु:ख जरूर हुआ। मगर ज्यादा सदमा तो इस बात का है कि तीस हजार रुपयों पर पानी फिर गया।'

‘हमारे तो तीस हजार रुपए गए।' बनवारीलाल ने ठंडी सांस लेकर कहा- ‘मगर जिनकी जानें गई.....।'

‘उनकी तो मरकर मिट्टी सुधर गई। यह जीवन तो हम जैसे मध्यवर्ग के लोगों के लिए नरक है जो अमीरी और

गरीबी के बीच में त्रिशंकु की तरह लटके सिसक रहे हैं।'

'तू इस बात को दिल से मत लगा, बेटी।' बनवारी लाल ने अपनी झुकी कमर को सीधा किया और आवाज में बनावटी जोर पैदा करके कहा- 'अभी तेरा बाप जिन्दा है। नसीब में होगा तो इससे ज्यादा जोड़ लूंगा और इससे ज्यादा शानदार ढंग...।'

'नहीं, बाबूजी!' मीनाक्षी आतंकित स्वर में बोली-'नसीब ही तो खराब है मेरा। बचपन से लेकर अब तक कौन-सा सुख पाया है मेंने।'

'मीना!'

'पैदा होते ही तो मां को खा गई थी। फिर तो मेरी मनहूसियत हर खुशी, हर सुख, हर अच्छाई को निगलती चली गई।'

'यह मत भूल कि तेरा बाप जिन्दा है।' बनवारी लाल ने मीनाक्षी का कंधा थपथपाकर धीरज बंधाया- 'फिर यह क्या कम है कि ईश्वर ने तुझे हजारों में नहीं, लाखों में एक बनाया है। तेरा रूप-रंग देरवकर तो सूरज-चांद भी थम जाते हैं।'

'सबस बड़ा दुश्मन है यह मेरा रूप-रंग।' मीनाक्षी बनवारी लाल का हाथ थामकर उस पर गाल रखते हुए रो पड़ी- 'आए दिन कोई न कोई मुसीबत खड़ी करता रहता है।'

'ऐसा नहीं कहते, बेटी।'

'कहना क्या...मैं तो सोच रही हूं, जला लूं अपना चेहरा, ताकि तमाम मुसीबतों से छुटकारा मिल जाए। चैन से जी तो सकूंगी। आपके पास रहकर आपकी सेवा तो कर सकूंगी।'

'क्षणिक आवेश है बेटी। सदमे ने तुम्हें निराशावादी बना दिया है।' बनवारी लाल परेशान होकर बोले- 'रो लो...खूब रो लो, ताकि तुम्हारे मन का बोझ हल्का हो जाए...।'

'बाबूजी!' मीनाक्षी ने सिसकते हुए कुछ सोचकर पूछा- 'लेकिन यह दुर्घटना हुई कैसे?'

'इंस्पेक्टर सेठी ने बताया था कि बड़ी भयानक दुर्घटना थी। बस के भी कई मुसाफिर मरे हैं और घायल हुए हैं।'

'क्या बस ने टक्कर मारी थी?'

'नहीं...।'

'तो फिर।'

'पुलिस वाले बता रहे थे कि रिंग रोंड के चौराहे पर एक सफेद कांटेसा ने मारुति को टक्कर मारी।'

'क्या सफेद कांटेसा?'

'हां...! पर तुम चौंकी क्यों?'

'इसलिए कि सफेद कांटेसा तो शेखर की गाड़ी भी है।'

'बिल्कुल ठीक पहचाना तुमने। वह शेखर ही की गाड़ी थी।'

'नहीं।' मीनाक्षी मानसिक उत्तेजना में रोना भूलकर उठें बैठी। उसकी मुट्ठियां कसा गई, रखें ऊपर चढ़ने लगी दांत भिंच से गए। वह लगभग चीर पड़ी थी और फटी-फटी आंखें से शून्य में मूर रही थी।

पुलिसवालों ने बाद में इसकी पुष्टि कर ली थी कि वह गाड़ी, शेखर ही की थी और उसे शेखर ही ड्राइव कर रहा था।'

'क्या?' मीनाक्षी के चेहरे पर भय और आतंक के साये इतने भयानक हो गए थे कि ऐसा ही लगा वह अगले ही

पल पागलों की तरह कपड़े फाड़कर भागती हुई कमरे से निकल जाएगी। यह झटके मे खड़ी होकर चीरवी भी- 'ऐसा नहीं हो सकता।'

'ऐसा ही हुआ है।' बनवारी लाल ने उसकी शक्ल देखकर उसके दोनों कंधों को पकड़ लिया और उसे जबरदस्ती पलंग पर बिठाते हुए बोले- 'मगर तुम इतनी उत्तेजित क्यों हो रही हो। बैठ जाओ।'

'उत्तेजित?' मीनाक्षी को झटका-सा लगा। ऐसा ही लगा जैसे उसकी चोरी पकड़ी गई हो। वह झट से बैठ गई और बात बनाती हुई बोली- 'मैं भला क्यों उत्तेजित होने लगी।'

'तुम तो शेखर से नफरत करती थीं ना?' बनवारी लाल ने उसका चेहरा ध्यान से पढ़ने की कोशिश करते हुए कहा- 'तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि वह भी इस दुर्घटना का शिकार हो गया।'

'शिकार हो गया।' मीनाक्षी बरबस पुछ बैठी। उसे अपनी आवाज के कम्पन पर काबू न रहा- 'तो क्या वह भी?'

'हां...उसकी कार मारुति से टकराने के बांद इलैक्ट्रिक पोल से जा टकराई थी। आगे का हिस्सा पिचक गया और सारे शीशे टूट गए। ऐसे में ड्राइविंग सीट पर बैठे आदमी का बचना असंभव था।'

'ओह...!'

मीनाक्षी का दिल-दिमाग बुरी तरह डूबने लगा। उसे ऐसा लगा कि उसका दम घुट जाएगा। वह घबराकर लेट गई और आंखें बंद कर ली।'

बनवारी लाल ने चिन्तित स्वर में मूछ लिया-

'क्या हुआ बेटी?'

'मैं बहुत थकावट महसूस कर रही हूं, बाबूजी।' मीना ने आंखें बंद किए-किए ही कमजोर आवाज में जवाब दिया- 'मुझे नींद सी आ रही है।'

'अच्छा है, तुम सो लो।' बनवारी लाल बाहर जाते हुए बोले- 'विश्राम से थकावट भीदूर होगी और दिल-दिमाग का तनाव भी जाता रहेगा।'

बनवारी लाल मीनाक्षी के बैडरूम का दरवाजा भेड़कर चले गए।

'अब यह तनाव तो कभी कम न होगा।' मीनाक्षी उनके जाते ही आंखें बंद किए-किए बुदबुदाई-'शेखर, यह तुमने क्या कर डाला?'

'तुम मुझसे इतना प्यार करते थे-मुझे पता नहीं था।'

'तुमने एक बार कहा था-अगर तुम मेरी न हुई, तो फिर किसी की न हो सकोगी। उस समय तुम्हारी इस बात को जवानी की डींग और सड़क छाप मजनूं की बड़ समझा था।'

'मगर तुमने तरुण की कार से अपनी कार को टकराकर और तरुण के साथ खुद को खत्म करके अपनी बात की सच्चाई को साबित कर दिखाया।'

'तुम्हारा प्यार कितना पवित्र, कितना सच्चा था-यह मैंने तुम्हें खोने के बाद जाना।'

फिर वह इस तरह छटपटाने लगी, जैसे किसी मछली को पाती से निकालकर बाहर रेत पर फेंक दिया गया हो और तकिये में मुंह छुपाकर फूट-फूटकर रोने लगी।

□□

नरेश कुमार की सरकारी कार बंगले के फाटक में घुसी ही थी कि उन्हें सुरेखा नजर आई, जो पागलों की तरह लॉन में चक्कर लगा रही थी और बार-बार फाटक की तरफ देख रही थी।

उसकी सूजी-सूजी आंखें उसके रात भर के जागरण की चुगली जा रही थीं और बिखरे बाल तथा अस्त-व्यस्त कपड़े उसकी परेशानी और चिन्ता की कहानी सुना रहे थे। खाना-पीना सोना-नहाना तो दूर कीबात है वह पूजा-पाठ भी भूल गई थी।

सुबह के आठ बज रहे थे और वह पूजा घर में होने की जगह पागल हवा की तरह लॉन में चकराती फिर रही थी। कार को फाटक में घुसते देरवकर चह तेजी से उसकी तरफ लपकी।

नरेश कुमार ने सीट पर सीधे बैठते हुए सोचा-

'अरे! मैंने अपने भीतर छुपें बाप का तो गला घोंट दिया। मगर ममता के एक हिमालय से कैसे टकराऊंगा।'

सुरेखा की दुर्दशा देखकर उनकी आंखें भीग गई। उन्होंने तुरन्त ड्राइवर को आदेश दिया-

'रोको!'

ड्राइवर ने कार रोक दी। नरेश कुमार कार से उतर आए इससे पहले कि सुरेखा उन तक पकती। सुरेरवा ने उन पर नजर पड़ते ही दूर से ही पूछा-

'क्या हुआ? आप मेरे बेटे को साथ क्यों नहीं लाए? कैसा है वह? उसे ज्यादा चोटें तो नहीं आई? कैसे टकरा गई थी उसकी कार? और...'

'बस-बस।' नरेश कुमार ने हाथ उठाकर बात काटते हुए कहा- 'इतने सारे सवाल? मुझे तो तुम्हार पहला सवाल भी याद नहीं रहा।'

'आप बाप का दिल फर्ज की चट्टान के नीचे कुचल सकते हैं। मगर मां कों छाती तो दुःख ले फटेगी ही।' सुरेखा ने पास आकर नरेशका गिरेहबीन दोनों हाथों से पकड़कर खींचा- 'बताइये, कहां है मेरा बेटा?'

'फरार हो गया?' नरेश कुमार ने जी कड़ा करके कहा- 'बुजदिल मुजरिमों की तरह भाग गया वह।'

'क्या...?'

'हां, उसने जान-बूझकर एक्सीडेंट किया था।'

'नहीं।' सुरेखा ने नरेश कुमार का गिरेहबान छोड़ दिया- 'वह ऐसा नहीं कर सकता।'

'उसने ऐसा ही किया है।'

'मगर क्यों?'

'अंदर चलो...बताता हूं...।'

सुरेखा को यह जानकर थोड़ी तसल्ली तो हो गई थी नरेश कुमार के शब्दों से कि शेखर जीवित है। उसने नरेश कुमार के साथ बंगले के बरामदे की तरफ बढ़ते सोचा।

'शुक्र है भगवान का...मेरा बेटा जिन्दा तो है...वह जहां भी रहे-जिन्दा रहे, खुश रहे...।'

ड्राइंग हॉल में पहुंचकर सुरेखा ने नरेश कुमार से पूछा-

'हां, अब बताइये? क्यों किया उसने एक्सीडेंट?'

'तुम्हें यह तो याद है ना कि कल मैंने मीटिंग में जाने से पहले शेखर की एक कॉल को चोरी-छुपे सुना था।'

'जी, हां। अच्छी तरह याद है।'

'उस कॉल से ही मुझे पता चला था कि वह इन दिनों मीनाक्षी नामक किसी लड़की के पीछे पड़ा हुआ था।'

'वह पीछे पडा हुआ नहीं था।'

'तो क्या मीनाक्षी उसके पीछे पड़ी थी?'

'जी, नहीं। वह उससे प्यार करता था।'

'बहुत खूब!' नरेश कुमार ने सोफे पर बैठते हुए अपनी कमीज का ऊपर का बटन खोला- 'तो तुमने जान-बूझकर बेटे को जुर्म के रास्ते पर धरेला?'

'क्या मतलब?'

'कल उस मीनाक्षी की किसी तरुण नामक लड़के कें साथ सगाई थी। आपके लाड़ले ने उसे यह चेताक्यी दे रखी थी कि अगर वह उसकी नहीं हो सकतीतो किसी और की भी नहीं-हों सकती।'

'फिर...?'

'बस, कल उसने यहीं कर दिखाया और अपनीकर से तरुण की कार को ऐसी टक्कर मारी कि वह उलट गई। पीछे से आती बस ने तरुण, उसके भाई राहुल और मां-बाप को कुचलकर रख दिया।'

'नहीं, मेरा शेखर ऐसा नहीं कर सकता।'

□□□

- शेखर पर मीनाक्षी के होने वाले पति तरुण की दुर्घटना में हुई मौत का इल्जाम क्यों लगा?
- क्या शेखर मीनाक्षी का वास्तविक प्रेमी था?

- क्या डी० आई० जी० नरेश कुमार अपने पुत्र को गिरफ्तार कर अपना फर्ज निभा सके।

ये कुछ प्रश्न हैं, रहस्य और रोमांच से भरपूर उपन्यास 'जुनून' के। जो लोकप्रिय जासूसी उपन्यासकार राहुल की लौह लेखनी का कमाल है। इन प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए 'जुनून' उपन्यास पूरा पढ़े। जो सब रेलवे व रोडवेज बुक स्टालों पर सर्वत्र उपलब्ध है।